# 'चँद्रानी पूत की नब्बे कवितायें'

रचयिता

डॉ. उमाशंकर पटैल
एम.एस सी. पीएच. डी. नेट

ॐ

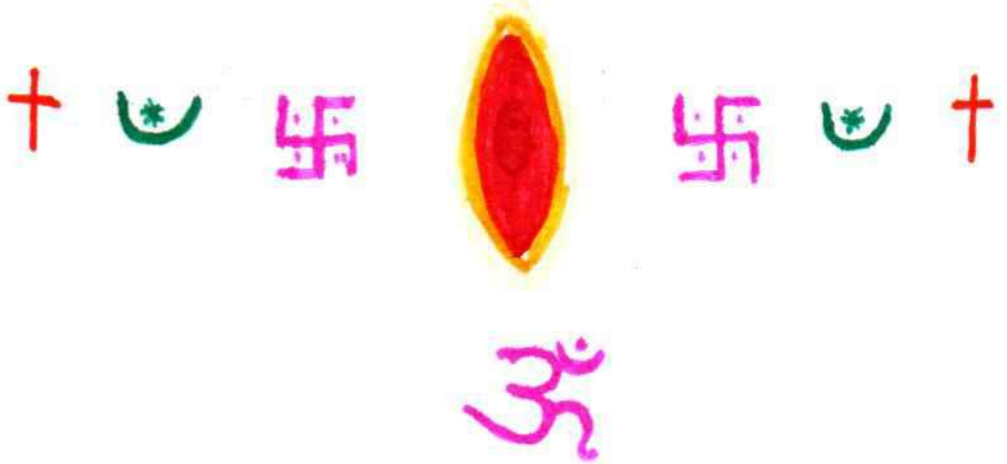

2022

उमाशंकर
25-9-22

# 'चँद्रानी पूत की नव्वे कविताऐं' भाग अ, भाग ब

रचयिता

डॉ. उमाशंकर पटैल
M.Sc., Ph.D., NET, YSF
अतिथ विद्वान वनस्पति विज्ञान,
शोभा सिंह यादव शास. महा.
पाटन
रानी दुर्गावती वि. वि.
जबलपुर
मध्य प्रदेश भारत।

EB

उमाशंकर
25.9.22

संस्करण : नवीन संस्करण (2022).
© कापी राइट : लेखकाधीन।
प्रकाशक : लेखक।
Email : remfungi@gmail.com
Website : drusptelsihundi.in
FB : umashankar_patel2002@yahoo.com
मुद्रक : online. Manuscript.

उमाशंकर
25.9.2022
Dr. उमाशंकर पटेल

ISBN NO. Hindi Part-A :
ISBN NO. English Part-B :

© कापीराइट : लेखकाधीन

Email : remfungi@gmail.com
Website : drvspatelsihundi.in
Facebook : umashankar_patel2002@yahoo.com

मूल्य : 170/- मात्र
संस्करण : नवीन संस्करण
प्रकाशक : गाड फादर प्रिंट सिस्टम
जबलपुर म.प्र.

मुद्रक : गाड फादर प्रिंट सिस्टम,
शाप नं. 13, आर. सी. काम्पलेक्स,
परिजात बिल्डिंग के पास,
दमोह नाका जबलपुर म.प्र.
9425863853, 7974658657,
9425863848, 8839998506.

© कापीराइट : लेखकाधीन. उमाशंकर
25.9.2022

ISBN भाग अ (Hindi) :
ISBN भाग ब (English) :

EB

# प्राक्कथन

इस काव्य संग्रह में कोई भी पद्य किसी व्यक्ति या संप्रदाय पर टिप्पणी नहीं है। प्रायः सभी बात कल्पना पर आधारित है। 'जहाँ ना जाये रवि वहाँ जाये कवि' वाली कहावत चरितार्थ की गई है। मानव समाज के कल्याण हेतु यह काव्य संग्रह रचित किया गया है। भटकते हुए मानव समाज को अध्यात्म की ओर प्रेरित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। इसके साथ ही समाज में भाईचारा, प्रेम भावना लाना और नफरत मिटाना है। कुछ पद्यों में मातृशक्ति के प्रति संवेदना तथा चेतावनी बदलते परिवेश में समय की माँग महसूस होती है। इस काव्य संग्रह का उद्देश्य किसी सख्स या संप्रदाय को मानसिक ठेस पहुँचाना कतई नही है। 'राजपाल हिन्दी शब्दकोष' संस्करण 2016 से शब्दों के सात्विक अर्थ देखे गये हैं तथा कुछ स्थानीय शब्दों के पर्यायवाची शब्द इस किताब के अंत में दिये गये हैं। प्रिय पाठक गण प्रत्येक शब्द, पंक्ति तथा पद्य का जनकल्याणकारी अर्थ ही निकालने का कष्ट करें। इस काव्य संग्रह का नकल अधिकार (कापी राइट) लेखक सह प्रकाशक के पास सदा रहेगा।

जबलपुर
दिनाँक : 15-09-2022

रचयिता
उमाशंकर
डॉ. उमाशंकर पटैल

# सूची

| स०क्र० | शीर्षक | पृष्ठ नं० |
|---|---|---|
| | भूमिका / प्राक्कथन | |
| 1. | परिचय। | 1 भाग - अ |
| २. | दफ्तर जाओ। | 2 |
| 3. | रूपया नहीं लगे। | 3 |
| 4. | असली दरिंदा। | 4 |
| 5. | महबूब कहाँ है। | 5 |
| 6. | आँखें। | 6-7 |
| 7. | महाजन। | 8 |
| 8. | छह जन्म इंतजार। | 9 |
| 9. | माँ कौन है? | 10 |
| 10. | सुझाव। | 11-13 |
| 11. | विविधता। | 14 |
| 12. | तरंगें। | 15-17 |
| 13. | दामाद। | 18 |
| 14 | बेरहम। | 19-20 |
| 15. | वालिद का इंतजार। | २1 |
| 16. | सयानी समझ। | २2-२3 |
| 17. | बेदर्द महफिल। | २4 |
| 18. | फल। | २5 |
| 19. | जी लेने दो। | २6-२8 |
| 20. | पंचशील। | २9 |

→ (ii)

उमाशंकर
25.9.22

| स.क्र. | शीर्षक | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| 21. | गलत फहमी। | 30 |
| 22. | रानी अवंती बाई। | 31-32 |
| 23. | जननी। | 33 |
| 24. | असली शूद्र। | 34-38 |
| 25. | सजा बिना खता। | 39 |
| 26. | नजर। | 40 |
| 27. | पेड़ लगाओ। | 41-42 |
| 28. | नमस्ते। | 43 |
| 29. | पुष्पांजली। | 44-45 |
| 30. | परमानंद। | 46 |
| 31. | अस्तेय। | 47 |
| 32. | प्रार्थना। | 48 |
| 33. | माँसाब। | 49 |
| 34. | ईश स्मरण। | 50 |
| 35. | हिंदुस्तानी। | 51-52 |
| 36. | रब जाने सब। | 53-54 |
| 37. | लगाम और कोड़ा। | 55 |
| 38. | भारत भूमि अच्छी। | 56-59 |
| 39. | चोर। | 60-62 |
| 40. | रानी दुर्गावती। | 63-64 |
| 41. | दर्द। | 65 |


→ (iii)

उमाशंकर
28-9-22

| स.क्र. | शीर्षक | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|
| 42. | भाईचारा । | 66 |
| 43. | सत्यपथ । | 67 |
| 44. | ढीठ पत्नी । | 68 |
| 45. | शाकाहार । | 69 |
| 46. | जीव व आत्मा । | 70-72 |
| 47. | अब मुँह खोलो । | 73-74 |
| 48. | पत्नी प्यारी । | 75-77 |
| 49. | कन्या के पाँच कवच । | 78-81 |
| 50. | कबीर सही । | 82-83 |
| 51. | तब और अब । | 84-87 |
| 52. | बुद्धू बुद्धिमान बनो । | 88-90 |
| 53. | चरणदासी । | 91-95 |
| 54. | बचन । | 96 |
| 55. | इजहार करते । | 97 |
| 56. | सतजन कितने ? | 98 |
| 57. | आहें कराहें । | 99 |
| 58 | माटी काया । | 100 |
| 59. | समझदार सुंदरी । | 101-102 |
| 60. | हरिजन । | 103-104 |
| 61. | स्वतंत्र भारत । | 105-107 |
| 62. | नकेल । | 108 |


→ (v)

आशांकर
25-4-22

| स.क्र. | शीर्षक | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| 63. | धोखा। | 109-110 |
| 64. | मत इतरा। | 111- |
| 65. | ईमान। | 112 |
| 66. | चेतावनी की सीख। | 113 |
| | | 114 |
| 67. | चाहत। | 115 |
| 68. | जा रहे हो। | 116 |
| 69. | प्रजातंत्र प्यारा। | 117 |
| 70. | अनुक्रमण। | 118 |
| 71. | दृष्टि। | 119 |
| 72. | मनचले। | 120 |
| 73. | पेट। | 121 |
| 74. | न्याय अन्याय। | 122 |
| | | भाग - ब |
| 75. | An Innocent Tree. | 123-124 |
| 76. | Peace In The World. | 125 |
| 77. | Prayer. | 126-128 |
| 78. | Global Warming. | 129- |
| 79. | My India. | 130-131 |
| 80. | Cheater. | 132-133 |
| 81. | Supreme Justice. | 134-135 |
| 82. | Father's Day | → |

(iv)

उमाशंकर
25-9-22

| स.क्र. | शीर्षक | पृष्ठ क्रमाँक |
|---|---|---|
| 83. | The Woman. | 136 |
| 84. | Deed And Destiny. | 137-138. |
| 85. | Om And God. | 139 |
| 86. | Life Science Says. | 140 |
| 87. | Learn. | 141 |
| 88. | Pain | 142-143 |
| 89. | Pleasure. | 144 |
| 90. | Awake Man. | 145-146 |
| | कुछ शेर। | 147-149 |
| | कुछ पर्यायवाची। | 150-153 |
| | कवि का परिचय। | 154 |
| | क्षमा याचना। | 155 |


उमाशंकर
25.9.22

# परिचय

डॉ. उमाशंकर पटेल उर्फ छुट्टू है मेरा नाम।
जिला कटनी तहसील बहोरीबंद, सिहुँड़ी मेरा ग्राम॥ 1
मध्यप्रदेश भारत भूमि का रहनेवाला मैं हूँ।
एक छोटी सी काव्यकृति प्रस्तुत करता जनकल्याण हेतु॥ 2
मेरी माँ थी चँद्रानी और पिता थे गंगाराम।
परदादा रिखीराम थे ठेकेदार व मालगुजार सुखा ग्राम॥ 3
दादा काशीराम थे कृषक साहूकार छोटा सा व्यापार।
हिसाब के पक्के थे और कड़क था व्यवहार॥ 4
मैंने बाकल से उच्चतर गाँव से प्राथमिक किया।
श्यामसुंदर अग्रवाल महाविद्यालय सिहोरा से स्नातक किया॥ 5
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के जीवविज्ञान विभाग से।
मैंने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त किया वनस्पति शास्त्र में॥ 6
विद्यावाचस्पति प्राप्त किया रानी दुर्गावती वि. वि. से।
राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा पास विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से॥ 7
जलनेवालों से सावधान कुछ इंसानियत के दुश्मन होते।
समाज का स्वभाव इंसानियत के बैरी शैतान होते॥ 8
चूल्हे में जस लकड़ी जलकर खुद होती राख।
दूसरे से जलनेवाले खुद जलकर हो जाते बर्बाद॥ 9
झूठी बात करके कोई सुखी नहीं हो पाता।
दूसरे को दुखी करनेवाला खुद दुखी हो जाता॥ 10

अंत

8

उमाशंकर
27.07.2022
27.07.2022

# दफ्तर जाओ

दफ्तर समय से जाना समय से आना।
काम चोर हैं आप कहे ना जमाना ॥1
काम चोरी भी चोरी है एक चोरी।
चोर केवल नहीं वह जो चुराये चोरी ॥2
राजतंत्र में करते थे भूखे पेट काम।
प्रजातंत्र में घर में करते हैं आराम ॥3
चोरी दिनारी धोखाधड़ी कहलाते हैं शूद्र काम।
बिना मेहनत की कमाई कहलाती है हराम ॥4
हराम की कमाई खानेवाला हरामी कहा जाये।
हिन्दी शब्दकोष में देखें हरामी का पर्याय ॥5
कोई हरामी ना कहे जल्दी दफ्तर जाओ।
दफ्तर में मेहनत करो मेहनत का लाओ ॥6
मेहनत करने में कभी कभी बहता पसीना।
धोखाधड़ी कामचोरी से जो कमाये वह कमीना ॥7
मेहनत करनेवाला जीता है सदा तानके सीना।
बिना मेहनत का ना खाना ना पीना ॥8
शरीर की ऊर्जा खत्म करो काम में।
थोड़ा बचाओ तो बुढ़ापा कटे आराम में ॥9.
जिस दफ्तर काम करते वह आपका दफ्तर।
प्रजातंत्र में सबका चपराही हो या अफसर ॥10.

7

उमाशंकर
30.9.2022

# रुपया नहीं लगे

काँव काँव कौआ सुन मानुष का सर दर्द करे।
कोयल की कुहू कुहू सर दर्द को दूर करे ॥1
मीठा या कड़ुआ बोल बँदे कोई रुपया नहीं लगे।
ऐसा ना बोल बँदे इंसा का दिल दर्द करे ॥2
मीठी बोली से कुकर भी पुँछ हिलाते आ जायें।
कड़वी बोली से सभी प्राणी निराश हो दूर जायें ॥3
कोई ले ले करे तो गायें दौड़ी चली आयें।
हट हट करें तो गायों के चेहरे मुरझा जायें ॥4
कश्मीर में बर्फ गिरे और उत्तर की बयार चले।
कश्मीर की शीत लहर मानुष तन को शीतल करे ॥5
जस हजार मील तक हिम मानुष को शीतलता दे।
तस हजार जन तक की मीठी वाणी व्याकुलता हरे ॥6
व्याकुल तन नरक सम घावहीन दर्द नरक के पाये।
कड़वी वाणी ऐसा काटे घाव कभी भर ना पाये ॥7
मीठी चाकू का विष मन से कभी उतर ना पाये।
अंदर बाहर हलाल करदे किसी को दिख ना पाये ॥8
मीठा मीठा में अँतर चतुर जन वही जो समझे।
ना समझे तो मछली जैसा काँटा में जा फँसे ॥9
अति मीठी अति कड़वी दोनों बोली हानि का संकेत।
एक से दिल टूटे एक भेजा में करे छेद ॥10

9

17.8.2021

# असली दरिंदा

कुछ लोग खुद दरिंदा दूसरों को दरिंदा कहते हैं।
चोर चोर मौसेरे भाई दावत में साथ दिखते हैं॥1

शराफत का पद कपड़ा पहन दरिंदे लफड़ा करते हैं।
अकल के भेड़िये बातों में मलाई चुपड़ा करते हैं॥2

शरीफों पर कीचड़ उछाल खुद शरीफ बना करते हैं।
झूठी शराफत दिखा सज्जन लोगों को ठगा करते हैं॥3

जब तक लोग समझ पायें काम निकाल लेते हैं।
आडम्बर या मजबूरी बता लोगों को धोखा देते हैं॥4

धोखा करना इनका उसूल बातों से महात्मा लगते हैं।
जादू टोना का सहारा ले सत्य को कुचलते हैं॥5

शादी का आश्वासन दे कन्याओं से कुकर्म करते हैं।
बेहोशी की दवा सुंघाकर युवाओं से कुकर्म करते हैं॥6

दरिंदा दरिंदगी खूब करते और बदनामी से डरते हैं।
अचरज की बात मंच पर स्वागत माला पहनते हैं॥7

चोर चापलूस लोग दरिंदो साथ अपनी फोटो खिंचवाते हैं।
समाचार पत्र में रुपिया देकर अपनी फोटो छपवाते हैं॥8

कान के कच्चे लोग इनका ही आदर करते हैं।
समाज में अपराध बढ़ता लोग विश्लेषण नहीं करते हैं॥9

कोई किसी को बद कहता दिमाक नहीं लगाते हैं।
मीठे रिस्ते इतने प्यारे हाँ में हाँ करते हैं॥10

इसलिए समाज में दिन पे दिन दरिंदा बढ़ते हैं।
दो साल के बालक बालिका से दरिंदगी करते हैं॥11

25.04.2022.

# महबूबा कहाँ है?

कोई बता दे मेरी महबूबा कहाँ है।
पा लूँगा उसे नहीं बड़ा जहाँ है॥

पूछती होगी सबसे मेरा महबूब कहाँ है।
नहीं जानकारी उसे उसका हमदर्द यहाँ है॥

बहुत व्याकुल होगी मेरा महबूब कैसा है।
उसका हाल वही होगा यहाँ जैसा है॥

जस मीन जमीन तड़पती पानी के लिए।
महबूबकी नजरें तरसती अपनी के लिए॥

मरु में मृग नयना तरसें नीर को।
बिरहा ही जाने कोई मेरे पीर को॥

थक गई आँखें उसकी राह देखते देखते।
लब भी थके उसकी जगह पूछते पूछते॥

प्यार पथ देख रहा अपने प्यार का।
दो अनजान सदा मानेंगे अहसान बयार का॥

बयार बता दो मेरी महबूबा कहाँ है।
उसको पता दो उसका महबूब यहाँ है॥

बेचैन दिल यहाँ बेचैन दिल वहाँ है।
दोनों को पता नहीं हमदर्द कहाँ है॥

24-04-2022.
Ushaty

# आँखे



दायें बायें ऊपर नीचे आँखे जो घुमायें ।
जानिये उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम दिशा आयें ॥1
यदि एक आँख दबाकर जो कोई मुस्कुराये ।
कूट भाषा में इश्क की कोशिश आये ॥2
मुँह से बोले हाँ आँख हिलाए ना ।
मुख से बोले ना आँख दबाए हाँ ॥3
जब जानो आँखें मिलाकर एक आँख दबाये ।
लड़का लड़की पटाये ना तो जूता खाये ॥4
हिम्मत ना हो मुँह से बोलने की ।
तब आँखें करें बात आपके मन की ॥5
पलकें काम करती ओंठों का बात करतीं ।
भीड़ में बाते होतीं आवाजें नहीं होतीं ॥6
इशारा बातें करतीं कानों का चकमा देतीं ।
लोगों को कभी खुशी कभी सदमा देतीं ॥7
दो और दो मिलकर दो हो जातीं ।
दो दिल एक बातें नहीं हो पातीं ॥8
यदा कदा मन की गुस्सा साफ दिखातीं ।
इशारे पर गोली चलवातीं या गला कटवातीं ॥9
आँखों से टकराकर तोड़ती लोगों का दिल ।
कहीं चाकू कहीं लाठी चलवातीं अपरोक्ष कातिल ॥10

उमाशंकर →2

कहीं नीली कहीं भूरी कहीं काली हैं।
जीभ से भी ज्यादा दिल तोड़नेवाली हैं॥1॥
कहीं चार से दो हो दिल मिलानेवाली।
कहीं चाँद सी शीतल कहीं चँचल नखरेवाली॥2
बचपन में आशा निराशा दिखानेवाली होती हैं।
युवास्था में चतुर चँचल मतवाली होती हैं॥3
दिल को तरंगों से दर्द देनेवाली हैं।
परे से जीभ जस जख्म देनेवाली हैं॥4
दिल के दर्द को नीरे से निकालनेवाली।
धनु बिनु सजन अजन पर तीर चलानेवाली॥5
कभी जख्म देने कभी जख्म भरने वाली हैं।
इशारों से काम बिगाड़ने व बनानेवाली हैं॥6
कभी रोने कभी हँसने कभी बोलनेवाली हैं।
कहीं नीली कहीं भूरी कहीं काली हैं॥7

7

उमाशंकर
10.10.2021

# महाजन

8

जब धन आता है हर जन इतराता है।
समभाव जो जन रहता वह महाजन कहलाता है॥1
महा बहुत बड़ा होता जस महासागर होता है।
महाजन महासागर जस जन सागर जस होता है॥2
महाजन इमान के पक्के अस्तेय माननेवाले जन हैं।
केवल धनी महाजन नहीं कुछ महाजन निर्धन हैं॥3
धनी महाजन का पर्याय नहीं धनवान होता है।
अनिश्चय धनी का धन ईमान का होता है॥4
धारावाहिक दृश्य दिखाते भारी काया होती खलनायक की।
महाजन वही कमाय खाय बचाय अस्तेय ईमान की॥5
आमजन से हर गुण में बड़ा जो जन।
इस धरा पर रूप कुरूप वही है महाजन॥6
देखन महाजन जो जन जानें जायें एक गली।
गुजरें विजय वस्त्रालय के बगल से जानेवाली गली॥7
एक छोटी सी कपड़ा की दुकान मालिक वही।
एक जैन जन छोटी काया माया महाजन वही॥8
अच्छा बोले अच्छा तौले हिसाब करे पूरा पूरा।
आपकी सोने की सिल्ली उसके लिए है धूरा॥9

8

उमाशंकर
23.8.2021

# छह जन्म इंतजार

जग में खोजा आपको आप मिले नहीं।
भाग से हारा मैं आपसे सिकवे नहीं॥1
रब चाहता था जुदाई एक हुए नहीं।
छह जन्म बाद मिलेंगे कोई सिकवे नहीं॥2
रब की मर्जी चले हमारी चले नहीं।
अपनों ने हमें मिलने नहीं दिए पराये नहीं॥3
इश्क का जख्म ऐसा जिसका उपचार नहीं।
जो कुछ दिन में भूले प्यार नहीं॥4
काया को जाति माया रोके बयार नहीं।
दूरी से जो घटे परम प्यार नहीं॥5
आपका प्यार हमारा आपका तन हमार नहीं।
पहला प्यार कोई भूलता मुझे इतबार नहीं॥6
जस अमर आत्मा जग में प्यार हमारा।
छह जन्म तक दिल करेगा इंतजार तुम्हारा॥7
छः जन्म कटेंगे तनहाई इंतजार इंतजार में।
सातवें जन्म मिलेंगें डूबेंगे अपने प्यार में॥8
धूप में दिखते आप दिखते अँधकार में।
छह जन्म कटेंगे आपकी याद इंतजार में॥9
एक जन्म को बँधना हर बार में।
मुझसे मिलना प्यार पाना सातवीं बार में॥10
छह जन्म ना निकालना किसी तकरार में।
प्यार प्यार में अंतर प्यारे सँसार में॥11
जहाँ हो सुखी रहो फरेबी सँसार में।
मुझसे मीठा प्यार नहीं मिलेगा संसार में॥12

उमाशंकर
17.7.2020

# माँ कौन है ?



माँ वह काया है जो नौ माह अपना खून पिलाती है।
माँ वह साया है जो अठारह माह अपना दूध पिलाती है॥1
माँ वह उपकारी है जो अड़तालिस माह मल मूत्र धोती है।
माँ वह त्यागी है जो खुद भूखी रह भूख मिटाती है॥2
माँ वह ममता है जो रोने पर दौड़ी चली आती है।
माँ वह मानिता है जो कुल काया की मालिस करती है॥3
माँ वह साया है जो सब संकटों से संरक्षित करती है।
माँ वह सूम है जो उदर काटकर कुछ बचाकर रखती है॥4
माँ वह दयाकाया है जो सदा माफ करती रहती है।
स्वसंतान के न्याय अन्याय को अपना भाग्य समझ सहती रहती है॥5
इक गर्भनिरोधक खाने से भावी काया खेत नाली में होती है।
माँ बड़ी दयालू होती है जो नौ माह पेट में ढोती है॥6
काम का बोझ साथ में संतान को भी ढोती रहती है।
पतित पति पीटे तो संतान के खातिर खुद पिटती रहती है॥7
माँ ही है जो इतना सब जग जीवन में सहती है।
जीवन के कष्ट भूल खुश रहो बेटा अंतकाल में कहती है॥8
जन्म दे ब्रह्मा दूध पिला विष्णु गुण दुर्गुण सिखा शंकर है।
माँ की सेवा स्वर्ग जाने का सबसे सरल सस्ता मंतर है॥9
माँ आशीश से दुर्योधन हुआ फौलाद ध्रुव चमकते उत्तर आसमाँ में।
ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों से बड़ी माँ है इस जहाँ में॥10.

॥

उमाशंकर
9.8.2021

# सुझाव

6

जिसकी जितनी आबादी है वतन में।
उसकी उतनी हिस्सेदारी नौकरी शासन में॥ 1
क्यों कोई किसी का हिस्सा खाये।
हर कोई अपने हिस्से का खाये॥ 2
भाईचारा बना रहे सबके मन में।
सदा अमन रहे हमारे वतन में॥ 3
प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग करते रहें।
विकास प्रेमभाव के साथ करते रहें॥ 4
हम दो हमारे दो का नारा।
विकास का आदर्श सदा रहे हमारा॥ 5
जो ज्यादा संतान बढ़ाये देश में।
देशनिकाला देदो उसको जाये परदेश में॥ 6
उससे बोलो दो एकड़ जमीन बनाये।
संतान जैसे भारत का क्षेत्रफल बढ़ाये॥ 7
देश क्षेत्रफल नहीं बढ़ा सकते आप।
तो संतान नहीं बढ़ा सकते आप॥ 8
स्थिर भूमि स्थिर आबादी देश में।
नौकरी खातिर ना जायें परदेश में॥ 9
आरक्षण खत्म करना पड़ेगा देश में।
आनुपातिक प्रतिनिधित्व लाना पड़ेगा देश में॥ 10
अन्यथा कुछ बनेंगे जयचँद देश में।
फिर विदेशी शासन करेंगे देश में॥ 11

→ 2

उमाशंकर
07.07.2021

खून बहेगा हिंदुओं का हिंदुस्तान में।
उथल पुथल होगी जैसे अफगानिस्तान में॥12
चार वर्ण मानों चार-चक्का गाड़ी।
एक चक्का पंचर नहीं बढ़े गाड़ी॥13
सनातन परंपरा ऐसी थी देश हमारे।
कर्म आधारित थे चार वर्ण न्यारे॥14
एक स्तर में गाड़ी के चक्का।
ना कोई ऊँचा ना कोई नीचा॥15
ईश्वर ने सबको मानुष बनाया है।
ऊँच नीच जाति हमने बनाया है॥16
भूमि सहनहीन भार बढ़ी आबादी का।
जनसंख्या वृद्धि कारण बनेगी बर्बादी का॥17
सभी मुल्कों में गुण्डा पुलिस जेल।
अशोक औरंगजेब भाइयों को किया ढेर॥18
अपना अपनों को मारे समय आये।
जग अपना जानो यही उचित आये॥19
अपना कमाना अपना खाना नीति आये।
दूसरों का हक खाये अन्याय कहाये॥20
जितनी आबादी उतना हिस्सा शासन में।
मात्र राह अमन की वतन में॥21
गृहयुद्ध से बचाना चाहें देश को।
जिसका जितना हिस्सा दे दो उसको॥22

उमाशंकर ——>3

आज नहीं तो कल माँग उठेगी।
नहीं माने तो भारतभूमि फिर बँटेगी ॥23

मातृभूमि का बँटवारा फिर ना हो।
जिसका जितना हिस्सा उसको दे दो ॥24

भारत देश में शोषण ना हो।
बाँटकर खाओ हम दो हमारे दो ॥25

अन्न की कमी नहीं होने पायेगी।
स्थिर भूमि स्थिर आबादी नीति आयेगी ॥26

हिन्दू देश नेपाल गुण्डा पुलिस जैल।
मुस्लिम देश ईराक गुण्डा पुलिस जैल ॥27

हर देश में गुण्डा पुलिस जैल।
इंसान शैतान बनाये खुदा का खेल ॥28

यत्न करें प्रेम से रहने की।
कोशिश करें कुछ कड़ुआ सहने की ॥29

कमाना खाना संतान पालना सबका काम।
अंत में सबको जाना राम धाम ॥30

बहू जश्न मनायेगी आपके जाने पर।
यह प्रथा लागू होती जमाने पर ॥31.

6

उमाशंकर
24.7.2024

# विविधता

जिसके मन में जो अाया वह कहता गया ।
निर्दोष होने पर भी मैं चुप सहता गया ॥1
दीन हीन किसी का कुछ कर नहीं सकता।
खुदा पर छोड़ा सब भरोषा छोड़ नहीं सकता ॥2
जलनेवालों ने खूब जलाया मैं जल ना पाया।
वे बन गये होलिका मैं प्रह्लाद बन गया ॥3
मानसिक रूप से लोगों ने मुझे तोड़ना चाहा।
मेरे अपने थे जो उनने मुझे छोड़ना चाहा ॥4
मैं जब अकेला हुआ यारों को याद किया।
कुछ ने उपहास किया कुछ ने साथ दिया ॥5
इंसान अभी रहते समाज में किन्तु कम हैं।
इंसाफ का साथ वही देते जिनमें दम है ॥6
कुछ सखा बने दगाबाज फिर खूब किया दगा।
कुछ इंसान आये आगे मदद कर किया भला ॥7
दर्द देनेवाले बहुत मिले मुझे मेरी महफिल में।
तो दर्द का घर बना लिया दिल में ॥8
दवा दुआ देनेवाले भी कुछ हैं जहाँ में।
बस जाना पड़ा मुझे खुदा की पनाह में ॥9
यकीनन इंसाफ करते कुछ फरिस्ते इस समाज में।
खुदा भी इंसाफ करेंगे जीता इसी आश में ॥10
मुझे इंसाफ कल मिलेगा परेशान हूँ आज में।
विविधता में जीना पड़ेगा विविधता है समाज में ॥11
विविध प्रकार के पौधे व जन्तु हैं यहाँ।
कुछ भोगते स्वर्ग व कुछ भोगते नरक यहाँ ॥12

उमाशंकर
12-08-2021

# तरंगे



खुदा ने नहीं कहा किसी को दर्द दो।
अपने दर्द जैसा समझो दूसरे के दर्द को॥ 1
तरंगो से रब देखता हमारे सब कर्मों को।
देखता है परमाणु में इलेक्ट्रान के चक्रों को॥2
जो विचार उठते हैं मानव के मन में।
वे चले जाते हैं कंपन से पवन में॥3
सदा पवन की तरंगे पहुँचती हैं रब तक।
खुदा की सदा पहुँच है हमारे मन तक॥4
हमारे पूर्व कर्मों से परिस्थिति बनती वातावरण में।
कर्मफल मिलते हैं इस या भावी जीवन में॥ 5
कर्म का फल प्रकृति की स्वाभाविक प्रक्रिया है।
विज्ञान की भाषा में क्रिया की प्रतिक्रिया है॥6
परमशक्ति एक ही है ईश्वर कहो या खुदा।
सुन लेती है कुछ भी मन में सोचा॥7
हवा से नहीं बच सकते यदि चाहते जीवन।
खुदा जानता तरंगों से तरंगे ही हैं पवन॥8
कुछ छिपा नहीं खुदा से इस जहाँ में।
सब जानता कर्म करो बाहर या घर में॥9
कर्म की तरंगें बनती अँधेरे और उजेरे में।
डरना ना तुम रहते परमात्मा के घेरे में॥ 10
जग में सब है तरंगों तरंगों का खेल।
देखते लंदन में हो रहा क्रिकेट का खेल॥ 11

8 → 2

उमाशंकर
10-10-2021

जबलपुर में बैठे आप सुन देख लेते हैं।
तस रब सब हमरे कर्म देख लेते हैं॥ 12
कर्म खुद और खुदा से कभी नहीं छिपता।
हम आँख खोल देखते वह आँख मूँद देखता॥ 13
परमात्मा सदा कदा फल देता है देर से।
कर्मफल मिलने में अँधेर नहीं होता देर है॥ 14
तरंगें वह भी बनता जो मुँह से बोलते।
तरंगे बनती हैं जब हमारे हाथ पाँव डोलते॥ 15
मन वाचा कर कर्म तरंगें बनती हैं सबसे।
रब जानता जन्म जीवन का अंत तरंगों से॥ 16
एक पल ओझल नहीं हो सकते रब से।
रब जानता जो हम छिपा रहे सब से॥ 17
मंदिर के भीतर व मँदिर के बाहर की।
खबर रखता है आसमाँ पाताल व धरा की॥ 18
कुछ नहीं छिपता रब से इस जहाँ में।
समझ रहते पहुँचो बंदे खुदा की पनाँह में॥ 19
हमारी आत्मा का परमात्मा से सीधा संबंध है।
तीसरे को बीच में जो लाता अँधा है॥ 20
मन में सोचने बोलने कर से कर्म करने।
मानुष के सभी कर्मों से बनती हैं तरंगें॥ 21
खुदा को सब खबर देती हैं ये तरंगें।
कर्मफल लेकर फिर लौटती हैं ये तरंगें॥ 22
आपकी अंकसूची के अँक कोई नहीं बदल सकता।
इसी तरह आपके कर्मफल कोई नहीं बदल सकता॥ 23

उमाशंकर ← 8 → 3
10·10·21

जो कोई अंकसूची के अँकों में हेरफेर करें।
हेरफेर करने कराने वाले दोनों जेल में सड़ें॥ 24
मानुष छोड़ दूसरी योनि में भी जा सकते।
आपने देखा कैसे ठण्डे खाते रोड के कुत्ते॥ 25
कोई आपको उल्लू नहीं बनाता आप खुद बनते।
कष्ट का स्वागत करें अपना कर्मफल समझ के॥ 26
सबका अपना दिमाग सबके अपने तर्क होते हैं।
उचित अनुचित लगे जब कर्मफल खराब होते हैं॥ 27
चुगलखोर होती हैं तरंगे खुदा को सब बताती।
जहाँ पर कोई कर्म होता वहाँ पर बन जातीं॥ 28
तरंगें खुदा की बहुत ही वफादार होती हैं।
जग की हर खबर खुदा को बताती हैं॥ 29
तरंगों से ऊष्मा तरँगो से खबर आती जाती।
गलत काम करनेवालों की आत्मायें सदा हैं पछताती॥ 30.
तरँगें किसी की सगी नहीं चुगलखोरी उनका काम।
भलाई है बंदे अपना खाओ अपना करो काम॥ 31.

8

उमाशंकर 10
10.10.21

# दामाद

जब तक दामाद की पैर पूजा नहीं होगी बंद।
तब तक समाज में कन्या हत्या नहीं होगी बंद॥ 1
माँ बाप की उम्र की सास से पैर धुलवाते।
इनको तनिक भी लाज ना आती कलयुग के शहजादे॥ 2
माँ बाप को झुकाने से अच्छा अंजनी बन जायें।
टेस्ट ट्यूब पद्धति से समाज में हनुमान जी लायें॥ 3
दहेज के बदले एक कमरा लड़की को दे दें।
अकेले जीना चाहती है तो घर में जीने दें॥ 4
कुल का कलंक ना बने तो लड़की भली।
मदिरा पीकर लड़के बुढ़ापे में सुनाते गाली खरी खरी॥ 5
घर समाज दोनों महँके ना चढ़ें दहेज की बलि।
दामाद की पैर पूजा छोड़ें सही हो जायेंगे खलि॥ 6
लोग सभ्य समाज में क्यों झुकाते लड़की पक्षवाले को।
स्वंवर करें लड़की चुनले अपने दिल दिलवाले को॥ 7
प्रेम आदर वफाई से हो दो परिवारों में सगाई।
राधा कृष्ण जस जीवन जियें जीवन में लोग लुगाई॥ 8
प्रेम रस में अस मिलें जस क्षीर और नीर।
अपना परया भूलकर जानें दोनों एक दूजे की पीर॥ 9
बेवफा को स्वर्ग तो दूर नरक भी नहीं मिलता।
उनकी आत्मा भटकती रहती जस घड़ी का लोलक हिलता॥ 10
बफाई का एक शब्द सागर सकून देने के लिए।
मेहनत का एक कमरा ... किला जीवन जीने के लिए॥ 11
दहेज की कोई जरूरत नहीं दुल्हन दे रहे पालकर।
आपके लिए अठारह साल तक पाला पोषा रखा संभालकर॥ 12
दूल्हे को भी दुल्हन की जरूरत जानते हैं आप।
दहेज माँगनेवालों को दुल्हन के साथ मिलती है श्राप॥ 13

उमाशंकर
11.11.2021

# बेरहम



बेरहम दर्द देनेवाले अब दवा क्यों बताते नहीं।
सनम सिवा संसार के सब अब सुहाते नहीं॥ 1
आशिकी का दर्द आशिक जाने पर बताते नहीं।
अपने आशिक को आप सम लोग रुलाते नहीं॥ 2
अपने से कोई किसी का आशिक होता नहीं।
आशिक बनानेवाला बंदा कभी अमन से सोता नहीं॥ 3
मुझे गम देनेवाले अब कभी क्यों हँसाते नहीं।
बेरहम दर्द देनेवाले अब दवा क्यों बताते नहीं॥ 4
पियक्कड़ पिला मदिरा मजदूरों को नचाते कभी कभी।
अपना आशिक बना बेकसूरों को नाउम्र रुलाते नहीं॥ 5
आपने ऐसा किया क्या हमें आशिक बना लिया।
सम्मोहन मुझ पर चलाया या मोहिनी खिला दिया॥ 6
बैरी को भी बैरी इस तरह सताते नहीं।
बेरहम दर्द देनेवाले अब दवा क्यों बताते नहीं॥ 7
दया होगी आपकी अगर दवा दे दें भूलने की।
आपको भुलाना चाहूँ भुला ना सकूँ तो भी॥ 8
खता हमारे नयनों की सजा दिल को मिली।
दर्द मेरे दिल में मजा महफिल को मिली॥ 9
जहाँ बोले मुझसे आपसे मेरा कोई वास्ता नहीं।
आपको दिल से कैसे निकालूँ कोई रास्ता नहीं॥ 10
दिल की आँहें सुन दिवालें भी रोने लगीं।
आशिक की आह सुन समाज भी हँसने लगी॥ 11
चाहूँ तो खिले जख्म को दिखा नहीं पाऊँ।
चाहूँ तो दर्द को छिपाना छिपा नहीं पाऊँ॥ 12

उमाशंकर
10.12.2021

8 →

देखूँ तो परी भी अब मुझे डसने लगीं।
दशा होगी आपकी अगर दवा दे दें भूलने की॥13
आपकी दुआ ही दवा का काम भी करेगी।
दवा बिना तो अब रूह भी आँह भरेगी॥ 14
महफिल के मजनूँ मिलकर पी लेते हैं मधु।
मधुप्रिय आखिको की आखिकी हो जाती है रफू॥ 15
मुझे देख मधु की बोतलें करने लगी गुफ्तगू।
आखिक आ रहा है मैं खुदा की तू॥ 16
पीकर मैं झूमों नकल करें बोतलें मधु की।
दशा होगी आपकी अगर दवा दे दें भूलने की॥ 17
सनम सिवा संसार के लोग अब सुहाते नहीं।
बेरहम दर्द देनेवाले अब दवा क्यों बताते नहीं॥ 18

8

उमाशंकर
10.12.2021.

# वालिद का इंतजार 21

ना जाने कितने मासूम हैं जो वालिद का इँतजार करते रह गये।
वालिद आयेंगे पर वे तो सीमा पर शहीद हो गये ॥ 1
कुछ की तो गोद भी नहीं भरी सिंदूर चले गये।
वे शौहर का इंतजार करती रहीं शौहर शहीद हो गये ॥ 2
ईमान की कमाई से हमारे पूतों के पेट नहीं भरते।
इसलिए कुछ नासमझ लोग हमारे वतन के बेइमान हो गये ॥ 3
हम देते दान व बेरोजगार भत्ता कामचोर बनाने के लिये।
बहुत बंजर भूमि है मुल्क में रोजगार देने के लिये ॥ 4
छोटी पगार में तैयार रहते जवान जान गवाने के लिए।
दफ्तरों में हमें हमारे लोग सताते घूस खाने के लिए ॥ 5
तैयार हो जाओ वतन के लोगों को जगाने के लिए।
मंदिर मस्जिद विवाद बंद वतन में अमन लाने के लिए ॥ 6
कोई इंतजार कर रहे वतन को गुलाम बनाने के लिए।
मुस्लिम मुल्क का रक्षक है प्रजातंत्र को बचाने के लिए ॥ 7
युद्धकक्षा की जानकारी दिया पाण्डे ने मुल्क मिटाने के लिये।
शहीद हुये थे हामिद भी पाकिस्तान को हराने के लिये ॥ 8
सभी देशों में पुलिस है अपराधियों को पकड़ने के लिए।
सभी देशों में शैतान हैं इंसानों को सताने के लिए ॥ 9
मानवधर्म की पताका इँतजार कर रही इंसानियत बचाने के लिए।
दूसरे का दर्द जाने अपने जैसा इंसानियत लाने के लिए ॥ 10
ईमान की नमक रोटी चाहिये मन में अमन के लिये।
भारत भूमि इंतजार कर रही कुछ कुर्बानी वतन के लिये ॥ 11.
सुभाष ने सुख छोड़ा अपने वतन में अमन के लिए।
भगत फाँसी चढ़े आमजन को जुल्मों से बचाने के लिए ॥ 12
प्रजातंत्र को खोखला कर रहे गद्दार प्रजातंत्र मिटाने के लिये।
मंदिर मस्जिद छोड़ समाज में ईमान लायें मासूमों के लिये ॥ 13

अमरसिंह
12.12.2021

# सयानी समझ

6

कपड़ों से कोई महात्मा नहीं होता ।
सामान्यतया कपड़ों के अंदर झूठ होता ॥ 1
कपड़ों के रंग पर मत जाना ।
मीठी वाणी में ना फँस जाना ॥ 2
रब राह दिखायेगा ध्यान लगा देख ।
खुदा मदद करता काज करें नेक ॥ 3
दो नाव पर साथ चलनेवाला बंदा ।
बह जाता है दरिया की धारा ॥ 4
पहले छोड़ो आनँद तब मिलेगा परमानँद ।
सँभोग में आनंद समाधि में परमानँद ॥ 5
ईमान का कमाओ ईमान का खाओ ।
धरा पर स्वर्ग सा सकून पाओ ॥ 6
शकून यहाँ मिले परलोक क्यों जाओ ?
अपना घर अपना अब समझ जाओ ॥ 7
अपना मुल्क अपना परमुल्क ना जाओ ।
अपने वतन में कमाओ और खाओ ॥ 8
न्याय को अपना बनाओ न्यायवादी अपने ।
कहावत है पराधीन सुख नाहीं सपने ॥ 9
स्वर्ग में राजा इंद्र का राज ।
चाहता नहीं भोजन देगा बिन काज ॥ 10
यहाँ स्वतंत्र देश के स्वतंत्र जन ।
स्वर्ग में इंद्र राजा के जन ॥ 11

अभासिंह 13.8.2021 → 6 → 2
जन = लोग, प्रजा.

सुख मिले श्रम और सम्पत्ति से।
श्रम की सम्पत्ति बचाती विपत्ति से॥ 12
अगर जीवन में कोई विपत्ति नाहीं।
स्वर्ग सम सुख मह जग माहीं॥ 13
सहयोग देकर सहयोग लेकर आगे बढ़ें।
गलत नहीं करें कभी नहीं डरें॥ 14
सबका साथ सबका विकास सबका नारा।
सबके साथ विकास करे भारत हमारा॥ 15
सुख के बाँटे सुख आता है।
दुख के बाँटे दुख पाता है॥ 16
कर भला हो भला बात है।
पहले मानुष फिर जात पात है॥ 17.
गलत गलत है सभी छिपाते हैं।
कहीं करें खुद्दा जान जाते हैं॥ 18
जो आम का पौधा लगाते हैं।
वो आम का फल खाते हैं॥ 19
जो इमली का पौध लगाते हैं।
वे इमली का फल पाते हैं॥ 20
आम पंद्रह साल में फल देता।
टमाटर एक माह में फल देता॥ २।
जल्दी देर से फल मिलता जरूर।
गलत दौड़ सही काम करें हुजूर॥ 22

---



उमाशंकर
13-8-2021

# बेदर्द महफिल

दर्द कितना हो रहा है ये ना पूछो मुझसे।
दर्द बयाँ ना कर सकूँ मैं कलम मुँह से॥ 1

दवा दे ना दे और दर्द ना दे मुझे।
हे खुदा कोई ऐसा साथी जमीं पर भेज दे॥ 2

दर्द ना होता अगर खंजर सीने पर मारा होता।
जालिम जहाँ ने पीठ पर मारा मुझे देकर भरोसा॥ 3

दिले जख्म दगा का तो है बहुत गहराई में।
दिखाना भी चाहूँ तो दिखा ना सकूँ भाई मैं॥ 4

दर्द और दुख दोनों साथ हो गये जख्म में।
अगर भुलाना भी चाहूँ तो भुला ना सकूँ मैं॥ 5

न्याय के लिये बोला न्याय के लिये लड़ा मैं।
जुल्मियों की महफिल में जुल्म सुना ना सका मैं॥ 6

दर्द इतना है कहना है मुश्किल सहना है मुश्किल।
सुनकर ठहाके लगायेगी महफिल बड़ी बेदर्द है ये महफिल॥ 7

नाइंसाफी करनेवाले को मंच में माला पहनाती है महफिल।
बढ़ता है जुल्म जहाँ में जब सहती है महफिल॥ 8

कम लोग हैं इस महफिल में पीर पराई जानते।
जो पीर पराई जाने पीड़ित उसे अपना हमदर्द मानते॥ 9

ये बेदर्द महफिल हँसे किसी दुखी के रोने में।
महफिल को मालूम नहीं कितना दर्द होता दिल में॥ 10

कुछ दर्द ताउम्र रहेंगे कुछ मिटेंगे कुछ महीने में।
दुख ना जुड़ता दर्द से. मारते खंजर सीने में॥ 11

बेदर्द महफिल ठहाके लगाती किसी दुखी के रोने पर।
दीन क्यों सताये जा रहे प्रजातंत्र के होने पर॥ 12

9

उमाशंकर
3·3·2022

# फल 8

पापी को जो तू मारे खुश होयें जगदीश ।
लाखों पापी खुद मारे इस जहाँ में ईश ।। 1
पापी तो पापी नहीं जाति पंथ का भेद ।
नहीं ब्रह्महत्या ब्राह्मण भी योनिजन्मा कर सकते ढेर ।। 2
भारत के सत्वादी ब्राह्मण कहते जलाओ रावण को ।
पूजा होती राम की जिसने मारा ब्राह्मण को ।। 3
हम सब छोड़ेंगे जहाँ यहाँ सच सदा रहेगा ।
पापी पंडित मारना पुण्य है भारत सदा कहेगा ।। 4
राम किया उत्तम काम रावण को दिया मार ।
इस कारण भगवान हो गया अयोध्या का राजकुमार ।। 5
भविष्य रहेगा तभी इंसाफ का साथ दो भारतीयो ।
वंश पंथ से बाहर निकलो इंसाफ के सारथियो ।। 6
न्याय करोगे सबके साथ पुण्य आत्मा से जोड़ोगे ।
संसय नहीं आज नहीं तो कल सुख भोगोगे ।। 7
शूद्र नहीं कोई खून जाति पंथ संसार में ।
आत्मा शूद्र होती जस रावण रिसी परवार में ।। 8
शूद्र रावण का सहोदर विभीषण नेक दिल इंसान ।
साथ दिया सत्य का गले मिले राम भगवान ।। 9
पाप का साथ दिया द्रोण जानता है संसार ।
कृष्ण अर्जुन से बोले सामने द्रोण हैं मार ।। 10
गुरु द्रोण भी ब्राह्मण थे मर्यादा को तोड़ा ।
अर्जुन ने गुरु द्रोण को भी नहीं छोड़ा ।। 11
भगवान ने मारा बोला मारो पापी पंडित को ।
हर नर को मारो जिसकी मर्यादा खंडित हो ।। 12.
हमारा भारत ऐसा हो जिसमें मर्यादा मंडित हो ।
मर्यादाहीन हर नर को मारो चाहे पंडित हो ।। 13.

8

उमाशंकर
09.9.2021

# जी लेने दो



6

यारो मुझे प्याला पी लेने दो,
पी लेने दो पी लेने दो । 1

यारो मुझे जरा जी लेने दो,
जी लेने दो जी लेने दो ॥ 2

मैंने स्वर्ग जाने का विचार किया,
लोगों ने जीवन नरक बना दिया । 3

अब नरक की लत लग गई,
नरक में मेरी जमात बन गई । 4

धोखेबाजों ने अपना बना धोखा दिया,
स्वर्ग को मेरा शत्रु बना दिया । 5

बैरी घर से अच्छा अपना घर आये,
तो बैरी के यहाँ कौन जाये । 6

नरक में जीता जी लेने दो,
यारो नरक में जी लेने दो । 7

यारो मुझे जरा जी लेने दो, जी लेने दो । 8
जी लेने दो जी लेने दो

रम पियो या गम पियो एक,
पीने के बाद नहीं रहता भेद । 9

मैंने तो कभी भेद किया नहीं,
अपना बनाकर फिर धोखा दिया नहीं । 10

शरीर दोनों में झूम जाये प्यारे,
झूमने को मजबूर किये मेरे गद्दारे । 11

⟶ उमाशंकर
6 07.9.2021

गद्दारी का फल तुमको रब देगा,
जितना तुमने किया उतना सब देगा। 12

दगा देकर दोस्ती का ढोंग करते,
यारों के जीवन का चैन हरते। 13

रब तुम्हें बेचैन जीवन सदा देगा,
तुमको भी कोई ऐसा दगा देगा। 14

नरक में ही मैं रम गया,
दगाबाजों के साथ बस गया। 15

यारो रम मुझे पी लेने दो,
दगाबाजों के साथ जी लेने दो। 16

यारो मुझे प्याला पी लेने दो,
यारो मुझे जरा जी लेने दो। 17

यारों मुझे जरा जी लेने दो,
जी लेने दो जी लेने दो। 18

पीता हूँ तो पी लेने दो,
जीता हूँ तो जी लेने दो। 19

एक हसीना आई मुझसे नजर मिलाई,
जरा मुसकुराई मुस्कुराकर दे गई जुदाई। 10

मेरे साथ छोड़कर गई मेरी तन्हाई,
वह लौटकर अभी तक नहीं आई। 11

मैं तन्हा जीता जी लेने दो,
जी लेने दो जी लेने दो। 12

→ 6 → उमाशंकर
07-9-21

रम में मेरा गम मिटे नहीं,
अब दूसरी कोई हसीना जमें नहीं। 13

आशिक समझ लोग मुझसे नफरत करें,
और मुझपर टीका टिप्पणी करें। 14

टूटे दिल का सहारा कोई नहीं,
जलील हुआ तो आँखें सोई नहीं। 15

देशी पीता हूँ पी लेने दो,
यारो मुझे प्याला पी लेने दो। 16

पीता हूँ तो पी लेने दो,
पी लेने दो पी लेने दो। 17

यार की गद्दारी, बेवफा की बेवफाई,
ऊपर से इस जग में तनहाई। 18

अँदर से तोड़ तोड़कर रख दिया,
पिया था उसका नशा भी गया। 19

नशा भी बेवफा थोड़ी देर रहा,
थोड़ा सा गम भुलाया चला गया। 20

अब तन्हाई में जीता हूँ यारो,
रब तुमको भी गम देगा गद्दारो। 21

मैं तन्हा जीता जी लेने दो,
जी लेने दो जी लेने दो। 22

टूटे दिल जीता जी लेने दो,
गम भुलाने पीता पी लेने दो। 23

यारो मुझे जरा जी लेने दो,
जी लेने दो जी लेने दो। 24.

6. अमरसिंह
07.9.21

# पंचशील

रावण की बल बुद्धि संपत्ति सिद्धि बनीं काल।
अस्तेय छोड़ा तो उसको नहीं बचा पाये महाकाल ॥ 1
सत्य ब्रह्मचर्य थे राम और लक्ष्मन के पास।
बहुत बड़ी सेनावाले रावण और मैघनाँद हुए परास्त ॥ 2
अपरिग्रह की दौलत होती है फकीरों के पास।
महाराजा भी छूना चाहते जिन फकीरों के लात ॥ 3
अहिंसा से गाँधी ने जीता अँग्रेजों का बल।
उनकी रक्तहीन क्रांति से अँग्रेज हुए थे निर्बल ॥ 4
बहुत दर्द सहे शहीदों ने स्वाधीनता के लिये।
कुछ कष्ट सहें आप भावी भारत के लिये ॥ 5
मत बेंचो अपना ईमान थोड़ी मजा के लिए।
वरना खो दोगे अपना हिंदुस्तान सदा के लिए ॥ 6
पाँच रोटी में पेट भर जाता हर किसी का।
पंचशील ही है सरल साधन परम खुशी का ॥ 7
जो हुआ नँगा उसे नहीं डर किसी का।
जिसने छोड़ा अपना घर जहाँ घर उसी का ॥ 8
इनको लेना एक ना देना दो किसी का।
सत्य इनका रथ भला सोचें हर किसी का ॥ 9
बड़े बड़े नेता चाहें आशीष आचार्य श्री का।
राजाओं से भी बड़ा बनाये पालन पंचशील का ॥ 10
सब जानते जैन आचार्य बड़े हुए महाराज से।
अपना भला चाहें तो मानें पंचशील आज से ॥ 11
पंचशील के पालन से मानुष बन जाये महावीर।
राम कृष्ण भगवान हुए हनुमत हो गये महावीर ॥ 12

8

उमाशंकर
23.9.2021

# गलतफहमी



मैंने ना किसी को दिल दिया ना किसी का दिल लिया।
फिर भी कुछ बुद्धू लोगों ने मुझे किसी का आशिक समझ लिया॥ 1
मैंने ना किसी को तारीख दिया ना किसी के गले लिया।
अनजाने में किसी का दिल टूटा तो मुझे आशिक बना दिया॥ 2
कुछ रंगीन लोगों ने मुझ पर नाली का कीचड़ उछाल दिया।
शुक्र खुदा का रंगीनों के साथ मुझे रंगीन ना होने दिया॥ 3
जग नजर से गिरे तो अपमान हो जाता है अपनी परछाई।
लोग साथ रहते हुए भी रहते हैं उस साथ में तनहाई॥ 4
मैं मधु नहीं पीता तो चाय में ही नशा मिला दिया।
मैं होश में साथ ना सोता बेहोशी में साथ सुला लिया॥ 5
उनको कोई शूद्र ना कहे मुझ पर उल्टा हवा उड़ा दिया।
रंगीनो की चाल एक ने मुझे मौत मोड़ में ला दिया॥ 6
अपनों से धोखा मानो अपनी सोती माँ से बलात्कार कर लिया।
रंगीनों ने द्वेषवश मेरे रंगीन होने की खूब उड़ा बयार दिया॥ 7
शूद्र मानुष वह है जिसने चोरी छिनारी धोखा का कार्य किया।
चोरी का वर्गीकरण दाम काम नजर नकल चोर में कर दिया॥ 8
चोर तो चोर है कामचोर भी शूद्र श्रेणी में आ गया।
कुछ लोगों ने तो कामचोरों को हरामी बेइमान भी कह दिया॥ 9
कलयुग इस काल में शूद्रों ने शूद्रों को वाहवाही दे दिया।
शरीफ खिलाफ एक ने रपट लिखाई दो ने गवाही दे दिया॥ 10
प्रजातंत्र में चलती बहुमत की बात यह शूद्रों ने जान लिया।
शरीफ समाज कान का कच्चा भोंदू होता शूद्रों ने जान लिया॥ 11
अपनी कर्मजाति शूद्र लिखने में सभी शूद्रों को शर्म आती है।
कर्म आधारित वर्ण होते हैं हमारे भारत में यह परिपाटी है॥ 12
चोरी छिनारी धोखाधड़ी शूद्र कर्म कहे जायें हमारे देश में।
रावण ब्राह्मण ने शूद्र काम किया एक साधू के वेश में॥ 13

॥

उमाशंकर
06.9.2021

# रानी अवंतीबाई



महाकौशल में बड़ी उथल पुथल हुई गोरों के शासन में।
रानी अवन्तीबाई ने क्रांति की अठरह सौ सत्तावन में ॥ 1
रामगढ़ मण्डला की रानी अवंतीबाई थी भारत की शान।
राज्य की रक्षा के खातिर जिसने दे दी अपनी जान ॥ 2
आन मान शान के लिए उन्होंने उठा लिया अपनी तलवार।
साधन कम थे सैनिक कम थे पर हिम्मत थी अपार ॥ 3
जब तक बल था तब तक रणभूमि में खून बहाया।
न्याय के खातिर संघर्ष किया पर अपना सिर ना झुकाया ॥ 4
जब आन पड़ी अस्मत पर खुद को कर लिया कुर्बान।
कभी आँच नहीं आने दिया बचा लिया अपना आत्म सम्मान ॥ 5
उन्होने अपना सब त्याग दिया मिट्टी व मान के खातिर।
चूहे कुछ भी त्याग नहीं करते चूहे बहुत हैं शातिर ॥ 6
संधी संभव थी राज्य की आवाम के खून पसीने से।
दासता नहीं स्वीकारी गोरों की कटार लगाली अपने सीने से ॥ 7
लोधियों की आदर्श बनीं स्वाभिमान से सिर उठाकर जीने की।
सच्चे लोधी ईमान की खाते रोटी अपने खून पसीने की ॥ 8
लोधियो ने सीखा संघर्ष आदर्श माना अवंती बाई रानी को।
गलत के सामने नहीं झुकेंगे कुर्बान करेंगे अपनी जिंदगानी को ॥ 9
यहाँ वीर गति मिलती वीरों को जिनका खून वीर होता।
चूहा सम जीते जो उनकी काया खून नहीं नीर होता ॥ 10

---

मनकेड़ी जिला सिवनी के जमींदार राव जुझार सिंह का घर।
सोलह अगस्त अठरह सौ इकत्तीस अवंती बाई का जन्म जिधर ॥ 11
रामगढ़ जिला मण्डला अब डिण्डौरी के राजा थे लक्ष्मण सिंह।
अठारह सौ पचपन में दुर्घटना में मरे पति विक्रमादित्य सिंह ॥ 12

10 →2

उमाशंकर
13.8.2021

रानी के दो पुत्र हुए थे अमान सिंह शेर सिंह ।
गोरा अधिकारी वाडिंगटन से युद्ध किया वीर संरक्षिका अमान सिंह ॥13
कुछ राजा साथ दे रहे थे गोरों की सेना का ।
अंतिम साँस लिया रानी ने देवगढ़ पहाड़ जिला मण्डला का ॥14
अब चूहे बिल से बाहर आकर कहते लोधी लोग हमारे गुलाम ।
मूल चापलूस लोधियों की जो चूहों को दिनभर करते हैं सलाम ॥15
कुछ चूहों ने चीथ चीथकर प्रजातंत्र को कर दिया खोखला ।
लोधी वही लिखे जिसके सीने में लड़ने का हो हौसला ॥ 16

10

उमराव सिंह
13.8.2021

# जननी



आपने मानव या दानव को जन्म दिया पूछो अब जननी से ।
आपने नौ माह कष्ट सहा समाज सहेगा कितना आपकी करनी से ॥ 1

क्या आपका लाल सुखेन वैद्य बनकर जीवन देगा मरने वालों को ।
या आपका लाल पीपल बनकर तोड़ेगा निर्दोष घर की दीवालों को ॥ 2

हे जननी क्या आपका बेटा बनकर काँटा कष्ट करेगा राहगीरों को ।
या आपका बेटा बीर बनकर बंद करेगा जन पर अत्याचारों को ॥ 3

हे जननी क्या आपका लाल होगा हीरो जनतंत्र की रक्षा करने वाला ।
या जीवन जियेगा जियेगा दास बनकर शाह के आगे पीछे दुम डुलानेवाला ॥ 4

क्या आपका लाल प्यार करेगा केवल अपनी घर की सजनी से ।
या कौरव को कलंकित करेगा भ्रष्टाचार व व्यभिचार कर किसी जननी से ॥ 5

क्या आपकी सँतान इंसान के साथ इंसाफ करेगी या बनेगी काफिर ।
या मानव बनकर दानव का अँत करेगी या खुद बनेगी शातिर ॥ 6

हे जननी क्या आपकी सँतान सुख त्याग करेगी मानवता के खातिर ।
या दीन का शोषण सीमाहीन सब काम करेगी दानवता के खातिर ॥ 7

हे जननी कहीं आपकी सँतान बिगड़ ना जाये आपकी गलती से ।
आपकी गलती से कहीं मानवता मिट ना जाये हमारी धरती से ॥ 8

जानो जननी जन क्यों मुँह मोड़ रहा 'जन की जननी से ।
जागो जननी निर्दोष नीर ना निकालें कुल कपूत की करनी से ॥ 9

हे जननी आप युग परिवर्तन की क्षमता रखती हैं जग में ।
आपके पूत अन्याय खिलाफ लड़ें हिम्मत भर दो सब में ॥ 10

हे जननी आपकी संतान न बिगड़ेगी अगर सतपथ पर मोड़ दोगी ।
दीगर से कैसे बोलोगी अगर खुद ही मर्यादा को तोड़ दोगी ॥ 11

मानुष भिन्न है पशु से केवल पूँछ नहीं होने के कारण ।
मानव भिन्न है दानव से केवल मर्यादा में होने के कारण ॥ 12

॥

उमाशंकर
5.9.2021

# असली शूद्र 6

चोरी छिनारी धोखाधड़ी शूद्र कर्म कहायें।
शूद्र कर्म करनेवाले शूद्र बन जायें॥ 1
चोरी भी कई प्रकार की आये।
दाम काम नकल नजर चोरी आये॥ 2
घूस कमीशन नियमों से धोखाधड़ी आये।
काम करने का नौकर वेतन पाये॥ 3
वेतन से बाहर का जो खाये।
वह खाऊ खुद शूद्र बन जाये॥ 4
लोहा का काम करनेवाला लोहार आये।
सोने का काम करनेवाला सोनार कहाये॥ 5
झूठ बोलने को धोखा माना जाये।
झूठ बोलनेवाला भी एक शूद्र आये॥ 6
कोई जाति या संप्रदाय शूद्र नाये।
शूद्र कर्म करे वही शूद्र आये॥ 7
पढ़ाई कला में स्नातक कला कहाये।
जो व्यक्ति पढ़े वही उपाधि पाये॥ 8
बाप पढ़े लड़का उपाधि नहीं पाये।
बाप ही कला स्नातक कहा जाये॥ 9
विज्ञान पढ़े तो विज्ञान स्नातक कहाये।
विज्ञान पढ़े कला स्नातक गलत आये॥ 10
असली शूद्र तो कोई और आयें।
रुतवा से अपनी शूद्रता को दबायें॥ 11

3 आईकार → 2
04.04.2022

केवल वही हाथ ही जल पाये।
जो हाथ आग को हाथ लगाये ।। 12
जले हाथ को जला कहा जाये।
बिना जले को जला गलत आये ।। 13
जो हत्या करे वही जेल जाये।
हत्या करनेवाले को हत्यारा कहा जाये ।। 14
हत्यारा का लड़का हत्यारा नहीं आये।
शूद्र का लड़का क्यों शूद्र कहाये ।।? 15
मेरी समझ में यही नहीं आये।
निर्दोष को सजा क्यों दी जाये ।।? 16
अपराधी समाज में गलत करते आये।
इसलिए उनको जेल में रखा जाये ।। 17
कुछ लोग कहें शूद्र संतान आये।
इसलिये शूद्र की संतति शूद्र कहाये ।। 18
मेरा विचार पढ़ो आप ध्यान लगाये।
जो परीक्षा दे वही उपाधि पाये ।। 19
बिना परीक्षा उपाधि नहीं मिलती आये।
शूद्र वर्ण एक उपाधि ही कहाये ।। 20
निर्दोष को शूद्र नहीं कहा जाये।
देखो असली शूद्र कोई और आये ।। 21
जो शूद्र कर्म करे शूद्र कहाये।
सत्ता संगठन के बल रहे छिपाये ।। 22
मानुष से शूद्र नहीं सुनेंगे प्यारे।
रब से कभी नहीं बचेंगे प्यारे ।। 23

→

उमाशंकर
04.5.22

असली शूद्रों को सब कोई जाने।
दफ्तर में काम कर रहे मनमाने ॥ 24
कामचोरी भी एक चोरी कही जाये।
कामचोर को भी शूद्र कहा जाये ॥ 25
घूसखोर भी नियम विरुद्ध घूस खाये।
घूसखोर को असली शूद्र कहा जाये ॥ 26
कमीशन कुछ का बनता सरकारी काम।
कमीशन खाना भी घूस का काम ॥ 27
हराम का जो खाये हरामी कहाये।
हरामी का शब्दकोष अर्थ नीच आये ॥ 28
सरकारी तंत्र में नीच घुस आये।
नीच राज करें पाप बढ़ जायें ॥ 29
प्रजातंत्र में प्रजा ने पापी बढ़ाये।
कोनो काम पड़े तब समझ आवे ॥ 30
पापी का पर्याय नीच भी आये।
शूद्र का पर्याय भी नीच आये ॥ 31
नीच को नीच नहीं बोलने पाये।
बोले तो तुरंत लड़ाई हो जाये ॥ 32
कुभाषि ही समझो देश का अपने।
फिरंगी भगा न्याय के देखे सपने ॥ 33
समाज में जो पाया दिया बताये।
मेरी किसी से लड़ाई नहीं आये ॥ 34
वही करें जो आप समझ आये।
जो शूद्र कर्म करे शूद्र कहाये ॥ 35

→ अम्बेडकर
04.4.22

चोरी छिनारी धोखाधड़ी शूद्र काम कहाये।
असली शूद्रों की पहचान की जाये॥ 36
कवि आपको बताये सब सही सही।
शूद्र काम करनेवाला असली शूद्र यही॥ 37
शूद्र का आदर शूद्रता को बढ़ाये।
शूद्रता बढ़नेवाला समाज का गद्दार आये॥ 38
गद्दारों को देश में जो बढ़ाये।
वह भी देश का गद्दार कहाये॥ 39
खुद अहसास करो भारत के बंदे।
कोई करवाता या करते काम गंदे॥ 40
घूसखोर से अच्छा तो है सफाईकर्मी।
मेहनत की खाता नहीं है अधर्मी॥ 41
सफाईकर्मी भी अच्छा समाज सेवक है।
मानव सेवा ही माधव सेवा है॥ 42
हर जिलाध्यक्ष भी है एक जन सेवक।
जो सेवा करे बन जाये सेवक॥ 43
अच्छी शिक्षा किस्मत से पाये पद।
सबके अपने अधिकार सबकी अपनी हद॥ 44
सेवा भी स्वर्ग का एक साधन।
हर सफाईकर्मी को भी दो अपनापन॥ 45
नीच मानुष नहीं कर्म नीच होते।
सभी मानुष पेट में विष्ठा ढोते॥ 46
आत्मा नीच होती काम कराती खोटे।
विभीषण थे रावण के भाई छोटे॥ 47
रावण एक नमूना ओछे काम का।
रावण शूद्र हुआ बैरी राम का॥ 48

कुछ सवर्ण भी करते शूद्र काम।
मुँह से भजते हैं राम राम ॥ 49
कुछ ब्राह्मण धरा में जिंदा देव।
कभी कभार मिलते बिरले खोज लेव ॥ 50
कवि आपको बतायें बिल्कुल सही सही।
शूद्र कर्म करे असली शूद्र वही ॥ 51

6

उमाशंकर
04.04.2022

# सजा बिना खता

काश कोई पूछता कोई बताता मेरी खता।
मुझे नहीं पता लोग क्यों हैं खफा ॥ 1
इस जहाँ में मानुष मानुष को सताता।
सभी एक जाति के उनको नहीं पता ॥ 2
जादू टोना का असर मुझे ना पता।
मैं क्यों गुनहगार कोई बता ना सका ॥ 3
आवाज उठाया था न्याय के खातिर यहाँ।
खुद के लिये न्याय पा ना सका ॥ 4
मानुष को मानुष मान ना सके यहाँ।
कहते हैं सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ताँ ॥ 5
जिसका हित किया उसी ने दिया दगा।
अपने ही दे रहे सजा बिना खता ॥ 6
जो जुल्मी वही निर्दोष को देते सजा।
बहुत निर्दोष पाते हैं सजा बिना खता ॥ 7
लोगों ने सुन लिया मेरी खता।
सोच ना सके सही गलत है खता ॥ 8
औरों के शातिर दिमाग से चलते बेवफा।
अब बेवफा दे रहे निर्दोषों को सजा ॥ 9
मैं क्यों हूँ गुनहगार मुझे नहीं पता।
काश कोई पूछता कोई बताता मेरी खता ॥ 10

उमाशंकर
11.11.2021

# नजर

मेरी नजर ले ली आपने दिल भी तुम्हारा हुआ।
पलटकर कभी ना देखा आपने क्या हाल हमारा हुआ॥ 1
सदा खुश दिलदार था मैं अब बेदिल बेचारा हुआ।
मेरी खुशी भी गई और खुशियों से किनारा हुआ॥ 2
दिल होता तो दर्द होता दर्द कहाँ मैं करता।
बेनसीब बेदिल ना जी पाता हूँ मैं ना मरता॥ 3
खत लिखकर मेरी खता हुई आपकी खता छिपाने की।
किसी मे दम ना हुई आपका पता बताने की॥ 4
खता नजर मिलाने की हुई सजा दिल गँवाने की।
बेकसूर होते हुए भी हुई कीर्ति गये जमाने की॥ 5
ना आप हमारे हो सके दूसरे किनारे हो गये।
आप गये दिल भी गया हम बेचारे हो गये॥ 6
आपके कारण मैं रह गया एकल इस जहाँ में।
आप मिल ना पाये खूब खोजा यहाँ वहाँ मैं॥ 7
दुआ करता रब से आप सदा खुश रहा करें।
बसार से ही मेरे बारे में कुछ कहा करें॥ 8
आपसे मिलना तो दुस्तर हुआ बेकार हुआ सब संसार।
खुदा करे किसी से नजर ना मिले दूसरी बार॥ 9

9

उमाशंकर
17.7.2019

आँसुओं ने भी खोजा आँहों ने भी खोजा आपको।
आपके नगर की सभी राहों में खोजा आपको॥ 10
दिन रात पूरी कोशिश आपको पाने की हुई।
थक गया तो अपने नशीब पर पछताने की हुई॥ 11
आपसे नजर क्या मिली एक महा कसूर हो गया।
अब नींद सुख चैन जीवन से दूर हो गया॥ 12

9

उमाशंकर
4.5.2020

# पेड़ लगाओ

6

तालाब खोदो बनाओ और पुण्य कमाओ।
पेड़ लगाओ फल खाओ पर्यावरण बचाओ॥ 1
तालाब कुआँ बावली पूरो पाप कमाओ।
मूर्ति विसर्जन करना तो कुण्ड बनाओ॥ 2
बरगद का पेड़ एक हजारों फल।
सहस्त्र पक्षी पेट भरते खाकर फल॥ 3
पेड़ के नीचे अपना गुजारा करते।
अधिकांश जीवन कटता जिनका चलते फिरते॥ 4
थोड़ी मेहनत लगती पेड़ लगाने में।
बड़ी मजा आती फल खाने में॥ 5
वातावरण को शुद्ध करते पेड़ प्यारे।
हमसे ज्यादा शुभचिंतक पेड़ हमारे॥ 6
कार्बन डाई आक्साइड वातावरण से लेते।
बदले में वातावरण को आक्सीजन देते॥ 7
वाष्पोत्सर्जन से वातावरण को ठण्डा करते।
हरियाली सुकून देती धरावरण सुंदर करते॥ 8
रंग बिरंगे फूल कीट आकर्षित करते।
प्यारे पेड़ कीटों को भी पालते॥ 9
हवा को रोककर बरसाते पानी को।
बगीचा में लौटाते हमारी वाणी को॥ 10
तूफान का भी वेग कम करते।
जड़ो से मृदा क्षरण कम करते॥ 11

→2

6

3भारबंध2
7.7.22

कार्बन डाई ऑक्साइड का भार अधिक।
इस गैस का आयतन भी अधिक॥ 12
तुलना आक्सीजन के भार आयतन की।
कार्बन डाई आक्साइड साथ वर्षा आती॥ 13
पेड़ कार्बन डाई आक्साइड ग्रहण करते।
आकाश में कुछ खाली जगह बनाते॥ 14
खाली जगह में बादल आ जाते।
भारी बादल हमारे लिए पानी बर्षाते॥ 15
कार्बन डाई आक्साइड सोख गर्मी घटाते।
फोटोन सोख वायुमण्डल का ताप घटाते॥ 16
सभी जीवों के लिए भोजन बनाते।
हमें जीवनवायु देते हमारे मित्र कहलाते॥ 17

———

उमाशंकर
07.7.22

# नमस्ते



नमस्ते करने पर हर नर सुरक्षित हो जाता है।
हाथ मिलाकर हाय किया तो रोग हो जाता है॥ 1
छुआछूत सामाजिक श्राप है इसे समाज से मिटाना है।
संक्रामक बीमारियों से भी हमें अपने को बचाना है॥ 2
न छुआछूत मानना ना किसी से हाथ मिलाना है।
सभी रब की संतति हमें सबसे भाईचारा निभाना है॥ 3
कोई उँगली से छींटन निकाले कोई मीचे अपनी आँख।
कोई उँगली से खिरचा करे बिना धोय मिलाये हाथ॥ 4
प्रेम से बोलो नमस्ते साब प्रेम को रखना साथ।
हाथ मारने के लिए भी उठते नहीं मिलाना हाथ॥ 5
अभिवादन तो पास या दूर से हो जाता है।
एक मुस्कान से मुँह में अपनापन दिख जाता है॥ 6
खुशी हाथ में नहीं वह होती है मुस्कान में।
खुशी खुश देखने से मिले सुनत खुशखबर कान में॥ 7
किसी को भाई कहकर संतोष होता दोनों को।
जब भाईचारा बनता अनजाने में भूल जाते अपनों को॥ 8
मन मिलना चाहिए हाथ मिलाने से कुछ नहीं होता।
मानव की जाति में छुआछूत का स्थान नहीं होता॥ 9
सिर में पुण्य संचित होते, पैर में होते पाप।
कुछ मनीषियों के सिर आभा मण्डल देखते हैं आप॥ 10
हाथ पैर छूने से तरह तरह की फैलती बीमारी।
पैर छूना हाथ मिलाना से दूर रहें नर नारी॥ 11
हाथ जोड़ सिर झुका नमस्ते करने की संस्कृति हमारी।
जो जानते नहीं उनको बताना हमारी बनती जवाबदारी॥ 12
जबसे जाने तबसे माने एक कहावत है समाज में।
अब सब नमस्ते करने की आदत लायें रिवाज में॥ 13

उमाशंकर 02-6-2022

# प्रणामाँजली

माता पिता के अलावा पैर पूजा बंद करें।
समाज में संस्कार पालें प्रणामाँजली के आनंद करें॥ 1
पूरे पुण्य मानव के सिर में संचित होते हैं।
पुण्य के विलाम पाप पाद बसें काया ढोते॥ 2
प्रमाण ले लें औरा का जो सिर में बनता।
कटि ऊपर सातों चक्र ऊर्जा के जानें जनता॥ 3
बाबा सर पर हाथ रखकर पुण्य ना लें।
लोग सर ढककर मंदिर में प्रणाम सदा करते॥ 4
बाबा पाप के सामने किसी बंदे को झुकाकर।
भेजते अपने पाप पैर छूनेवाले बंदे के सर पर॥ 5
पाप पहुँचते पैर से आपके पास छूने पर।
पुण्य आपके चले जाते आपका सर छूने पर॥ 6
अपने हाथ लपेट पल्लू महिलायें पैर छूती थीं।
समझदार महिलायें काफी दूर से पैर पड़ती थीं॥ 7
कमजोर काया संतान पालना महिलाओं की थी मजबूरी।
देवी देवता समान तो क्यों नहीं नर नारी॥ 8
अपने चरणों पर नारी को जो झुकायें नर।
वह कर रहा है घोर अन्याय महिला पर॥ 9
अतीत में महिलायें पुरुषों को प्रणाम करती थीं।
पतिव्रत धर्म के खातिर आग में जलती थीं॥ 10
मन कंपन की भावना पढ़ लेता है खुदा।
पैर पड़ना पीड़ित की सेवा करना है जुदा॥ 11

उमाशंकर
06-06-2022

8 → 2

समाज को एक कम सौ प्रतिशत देती नारी ।
इसके बाद भी वह चरणदासी बनी है बेचारी ।। 12
सेना सुरक्षा करती आपकी क्या छूते चरण आप ।
क्या मानव समाज को दूध पिलाना है अपराध ।। 13
दूध पिलानेवालीं जरावस्था में प्याला पानी को तरसें ।
भोजन भी ना मिले खाने नयन नीर बरसें ।। 14
बहुत उपदेश सुने आत्मा होती हर प्राणी में ।
नारी भी प्राणी आत्मा होती हर नारी में ।। 15
किसी की आत्मा को अपने चरणों से रोंदो ।
कौन सा धर्म कहता समाज को बता दो ।। 16
आत्मा परमात्मा का अँश होती कहते उपदेश में ।
अबलाओं में आत्मा फिरभी चरणदासी हमारे देश में ।। 17
गाय से भी निम्न हालत है महिलाओं की ।
महिलाओं को चरणदासी बनाये पूजा करते गायों की ।। 18
अबला अब बनें सबला पैर पूजा करें बंद ।
प्रणामाँजली का पालन करें जीवन भर पायें आनंद ।। 19

8

उमाशंकर
06.6.2022

# परमानंद



6

संभोग आनंद समाधि परमानंद देती है।
संभोग पर पर निर्भर होती है॥ 1
आनंद में पत्नी वीरस लेती है।
अकेले में समाधि परमानंद देती है॥ 2
आत्मा परमात्मा में जितना अंतर है।
आनंद परमानंद में उतना अंतर है॥ 3
परमानंद छोड़ आनंद में लग जाते।
नासमझ नागरिक बड़ा छोड़ छोटा पाते॥ 4
प्रज्ञावान इंसान आनंद तज परमानंद पाते।
प्रज्ञाहीन जन सहवास में आनंद पाते॥ 5
जग में बिना लागत मिलता परमानंद।
जिसको नही पाते अकल के कंद॥ 6
ध्यान लगाकर खुद में होजा लीन।
महात्मा बन जावेगा नहीं रहेगा हीन॥ 7
कपड़ों से मानुष महात्मा नहीं होता।
कपड़ों से समाज खाता है धोखा॥ 8
खुदा दिशा दिखायेगा ध्यान लगाकर देख।
रब मदद करेगा काज करिये नेक॥ 9
काया माया का अहं मर्दन कर।
तब पार हो पायेगा यहाँ भवसागर॥ 10
जग में अपने अपनों को लूटे।
समाधि से जाति पाति बंधन टूटे॥ 11
ओशो बोले अब छोड़ो संभोग को।
थोड़ा जीवन समाधि का भोग लो॥ 12
दो नाव पर साथ चलनेवाला नर।
बह जाता है दरिया की धार॥ 13

उमाशंकर
18-5-2021

# अस्तेय

कोई रहे ना रहे यह सच सदा रहेगा।
पापी मानुष को मारना पुण्य देश सदा कहेगा॥ 1
भारत रहेगा ऋणी न्याय का साथ दो भारतियो।
वेश पंथ से बाहर निकलो न्याय के सारथियो॥2
न्याय करोगे सबके साथ पुण्य आत्मा से जोड़ोगे।
संसय नहीं आज नहीं तो कल फल भोगोगे॥ 3
रावण की बल बुद्धि धन सिद्धि बनी काल।
अस्तेय छोड़ा तो उसे नहीं बचा पाये महाकाल॥ 4
रावण के एक लाख पूत सवा लाख नाती।
एक भी नहीं बचा था धरने दियर बाती॥ 5
दर्द से फट रही है इंसानों की छाती।
फिर आयें श्रीराम इंतजार करती भारत की माटी॥6
दूसरे की वस्तु की इच्छा छोड़ना ही अस्तेय।
मन इंद्रियों के पूर्ण नियंत्रण से आये अस्तेय॥ 7
अस्तेय पंचशील नियमों में से एक नियम आये।
यह नियम ईमान का पर्याय ही कहा जाये॥ 8
ईमान है त्याग का पर्याय सब जानते हैं।
त्याग का पर्याय कुर्बानी शब्दकोश ऐसा कहते हैं॥ 9
कुर्बानी खुदा को प्यारी ऐसा लोग मानते हैं।
ईमानदार दूसरे की वस्तु को धूल मानते हैं॥ 10

उमाशंकर
03-03-2021

# प्रार्थना

माँ मन पावन रहें हमारे रिस्ते रहें पावन।
सदा सीना सीधा रहे हमारें निर्दोष रहें जीवन॥ 1
पुरखे पीड़ियाँ नाज करें हम काज ऐसे करें।
सारे संसार में हमारे सर सदा ऊँचे रहें॥ 2
हम प्यार से रहें मर्यादा कभी ना जाये।
माँ रोज रुपिया आये ताना कभी ना आये॥ 3
चरित्र हमारी पूँजी रहे विकास पथ खुला रहे।
विवाद के बाद सदा हमारे बीच सुलह रहे॥ 4
एक दूजे के सहयोगी कभी ना बनें भोगी।
माँ पशु नहीं बनें दया करें बनें योगी॥ 5
कोई दुखी ना हो कभी हमारे व्यवहार से।
कड़ुआ कभी ना बोलें बात करें प्यार से॥ 6
माँ दुष्टों से बचायें सदा बचायें जादूगर से।
माँ कलंकों से बचायें निर्दोष जायें संसार से॥ 7
जब तक जग में जीवन सदा प्यार रहे।
सभी से प्यार रहे कभी ना तकरार रहे॥ 8
ना डरें कभी किसी से चाहे समर रहे।
धर्मपथ सदा चलते रहें चाहे कठिन डगर रहे॥ 9
सदा न्याय नीति नेक नियत हम चलते रहें।
माँ शक्ति दें अधर्मियों को सदा कुचलते रहें॥ 10
माँ आपकी दया हम पर सदा बनी रहे।
अमन चैन से रहें कभी ना ठनी रहे॥ 11

8

उआर्दांकार
02-02-2021

# मॉसाब

मॉसाब एक शब्द बना है दो शब्दों को मिलाकर।
माँ और साहब साहब को साब कहते दे आदर ॥ 1
शिक्षक शोषक होने लगे जो माँ समान रहते हैं।
आदर से पाठशाला में शिक्षक को मॉसाब कहते हैं॥ 2
मॉसाब ही दरिंदा हो जाये तो दोष किसका है।
जिसने दरिंदा को जन्म दे पाला दोष उसका है॥ 3
शूद्र कर्म करते सबने सैकड़ों सवर्णों को सुने हैं।
उनको शूद्र नहीं कहते क्योंकि सवर्णों के अपने हैं॥4
जग है कर्म प्रधान समाज शूद्रता को बढ़ा रहा।
देश में शूद्र शिक्षक भी शिक्षार्थियों को पढ़ा रहा॥5
पाठशाला का प्रमाण पत्र है सबके लिए एक समान।
सच कहने से डरते यह है स्वाधीनता का अपमान॥ 6
पहले विश्लेषण फिर करें यकीन जमाना बहुत होशियार है।
शूद्र को शूद्र नहीं कहा तो स्वाधीनता बेकार है॥ 7
शूद्र हो जाता है चोरी छिनारी धोखाधड़ी करनेवाला शैतान।
धन्य हो जाती माँ जो जनती जग में इंसान॥ 8
आत्मा शुद्ध होती खून किसी का शूद्र नहीं होता।
अन्यथा विभीषण कभी भी रावण का विरोधी नहीं होता॥9
कोई जाति शूद्र नहीं होती कर्म प्रधान जहान है।
कर्म पर उपाधि देता सबको सनातन धर्म महान है॥ 10
मॉसाब खुश होते अपने शिष्यों को शुरा पढ़ाने पर।
विद्यार्थी खुश होते पढ़ा हुआ समझ में आने पर॥ 11
माँ समान शुभ चिंतक होना चाहिए मॉसाब जमाने में।
अच्छा माँसाब वही जिसको अच्छा मजा आये पढ़ाने में॥12

9

उमाशंकर
04-07-2022

# ईशस्मरण

कुछ लोगों ने मुझे खूब सताया बेकसूर होने पर।
फिर लोगों ने ठहाके खूब लगाया मेरे रोने पर ॥ 1
मैं दिन में भी खुशहाल रहता था सोने पर।
मैंने नफरत नहीं पाला दिल के किसी कोने पर ॥ 2
नासमझ थे वे समझ ना पाये पीछे कौन है।
कलयुग का तटस्थ काल है इसलिए बाकी मौन हैं ॥ 3
जंतर मंतर का खेल हवा से जैसा चलता है।
ठण्डा दिखा मदारी जैसा बंदर नचाता वैसा नचता है ॥ 4
यदा कदा शैतान हावी हो जाता किसी इंसान पर।
जैसा मेघनाद ने नागपाश से वार किया हनुमान पर ॥ 5
मर्यादा होती मंत्र की आत्मा मानने को मजबूर होती।
मंत्र से मंत्र कटे तो विपदा आई दूर होती ॥ 6
मर्यादा दोनों मंत्रो की मर्यादा से मर्यादा तटस्थ होती।
ईश स्मरण से विपदा कम जाती या विफल होती ॥ 7
परमात्मा को परेशानी में याद करना आपका काम आये।
जहाँ जहाँ वायु तरंगें वहाँ वहाँ आपका राम आये ॥ 8
जो चलाये आप पर मंत्र कल जायेगा उस पर।
क्रिया की प्रतिक्रिया सदा होती प्रकृति में समय पर ॥ 9
हरि नाम का जिसने जाप किया संकट से बचा।
ईश्वर से बड़ा इस संसार में नहीं कोई सखा ॥ 10
ॐ ही ईश्वर ओम् ही रब ओम ही खुदा।
ओम ही प्रकृति ओम ही सृष्टि ओम जगत माता ॥ 11
ओम का ही स्मरण करें ओम सब जानता है।
मन वाणी कर करमों को अच्छे से पहचानता है ॥ 12

उमाशंकर
01-09-2021

# अब हिंदुस्तानी

देश का नमक खाते व पीते पानी सुनो देशभक्त हिंदुस्तानी।
महान देश की रक्षा के लिये सब लोग देंगे कुर्बानी ।। 1
मिट्टी में हैं विविध नस्ल संप्रदाय खान पान व बानी।
हिन्दू मुस्लिम का भेद भूल सब खुद को कहो हिंदुस्तानी ।। 2
किसी की बोली कड़वी तो किसी की मीठी होती बानी।
कहीं खुदा ने बनाया खारा और कहीं बनाया मीठा पानी ।। 3
चावल तो चावल हैं फिर भी हैं चावल में कई प्रकार।
हर पंथ जाति के लोगों में भी हैं कई प्रकार ।। 4
अलग स्वाद होता बासमती और राशन के मोटे चावल का।
हर पंथ में कोई ज्ञान बाँटता कोई मिलता पागल सा ।। 5
रहीम और कबीर के भले गुण गाते हैं सभी हिंदुस्तानी।
अब मुस्लिम भी सीख रहे संस्कृत और तुलसी की बानी ।। 6
सिंह से सीख लें अपने देश के लिए देना कुर्बानी।
हिंदुस्तान में रहनेवाले हिंदू मुस्लिम ईसाई सिख बौद्ध हिंदुस्तानी ।। 7
मुस्लिम बोलेंगे जय हिंद वतन से सब करेंगे अपार प्यार।
जब जानेंगे पाक में भी हैं गुण्डा पुलिस कोर्ट कारागार ।। 8
खराब खून नहीं होता कोई की आत्मा होती है अत्याचारी।
खून एक रावण राक्षस का भाई विभीषण न्यायी सदाचारी ।। 9
हिन्दू व्युत्पन्न हुआ सिंधु नदी से लोग रहते थे किनारे।
तीन वर्णों के महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र वाल्मीकी सबको राम थे प्यारे ।। 10
रघुकुल को वशिष्ठ विश्वामित्र व वाल्मीकी ने शिक्षा दी थी।
श्रीराम को प्यारे थे अंगद निषाद शबरी व विभीषण भी ।। 11
हिंदुस्तान में जो जन्में भारत भूमि उन सबकी माई है।
विविधता में जीना पड़ेगा विविधता खुदा ने खुद बनाई है ।। 12

[illegible]
16.6.2021

सबका मालिक एक ओम् अल्लाह ईश्वर परमेश्वर रब खुदा कहलाया।
उसी ने ईशा पैगम्बर राम बौद्ध महावीर गोविंद को बनाया ॥ 13
बिजली विमान मोटर कम्प्यूटर आदि बनाये हैं ईसा के अनुयाई।
उपयोग के लिये सबको दिया ऐसे उदार दिल हैं ईसाई ॥ 14
अस्सी के दशक में अमेरिका ने हमें लाल गेहूँ दिया।
सनातन समाज को सदा को समाप्त होने से बचा लिया ॥ 15
इतना सब करने के बाद भी खराब क्यों हैं ईसाई?
क्योंकि वे भूखे को भोजन और बीमार को देते दवाई ॥ 16
अटल और कलाम ने मुल्क मरम्मत में जीवन लगा दिया।
इन महापुरुषों ने हिन्दु मुश्लिम का भेद भी मिटा दिया ॥ 17
गाँधी नेहरू तिलक आवाज उठाये बिस्मिला भगत ने दी कुर्बानी।
हिंदुस्तान का हर नर था है और रहेगा सदा हिंदुस्तानी ॥ 18
मिटायें हिन्दु मुस्लिम सवर्ण अवर्ण बीच नफरतें जो आई हैं।
अब सब मिलकर मिटायें उन्हें जो वतन में अन्याई हैं ॥ 19
देश में अनुपातिक स्थिर आबादी व अनुपातिक आरक्षण की अपेक्षा।
बना देगी ऐसा महान मुल्क दुनिया ने कभी नहीं देखा ॥ 20
किसी को भी अस्तित्व के लिए खतरा नहीं बनेगा अनुपात।
वतन में नफरत नकार राम रहीम विकास करेंगे साथ साथ ॥ 21
हिन्द वतन का नमक जो खाते खातिर इसके देंगे कुर्बानी।
उगकर सर सब शान से सुनायेंगे मैं हूँ एक हिंदुस्तानी ॥ 22
जिसको तिरंगा तथा संविधान प्यारा नहीं चला जाये नेपाल पाकस्तान।
जन्मभूमि कर्मभूमि मरण भूमि था रहेगा प्यारा हिंदुस्तान ॥ 23

10

उमाशंकर
05-05-2021

# रब जाने सब

नेक इंसान देख परेशान किसी बंदे को।
तैयार रहते हैं सदा मदद करने को ॥ 1
जग में नेक मानव भी बहुत हैं।
जो मान अपमान समान ही सहते हैं ॥ 2
अति निराश ना हो प्यारे जग में।
यहाँ उतार चढ़ाव देखे हैं सब ने ॥ 3
कुछ मिनटों में समय बदल जाता है।
घोर अंधेरा से उजेरा हो जाता है ॥ 4
धीरज धरें अगर सत्य आपके साथ है।
कोयला काला अंधेरा को मिटाता प्रकाश है ॥ 5
एक दीपक भी अंधेरे को दिखाता औकात।
अगर आग तेल बाती का हो साथ ॥ 6
जग में विपरीत ध्रुव प्रकृति का उपहार।
कोई सताता किसी को कोई करता उपकार ॥ 7
मन निर्मल व ईश्वर पर विश्वास है।
तो जानो प्यारे ईश्वर सदा साथ है ॥ 8
कर्म बंधन नहीं छोड़े बिन फल दीन्हे।
गत कर्म समझ सुख दुख लीन्हे ॥ 9
दुख सुख जो जन जीवन में पाये।
तो जन का जीवन पूरा माना जाये ॥ 10

उमाशंकर
03.08.021

जा जग में दुख जीवन अंग कहाये।
आत मुशीबत देख वीर नर ना घबराये ॥ 11
काल कष्ट का कटत मिलत नेक इंसान।
अब रब भेजो मदद हेतु ऐसा जान ॥ 12
कष्ट काल भी है जग में नश्वर।
निराश ना हो तरंगो से जाने ईश्वर ॥ 13
कष्ट और दुख से मानव लेते सबक।
इंसान से ही जानो ईश्वर की मदद ॥ 14
तरंगों का घेरा सदा मानव को घेरे।
हर काल दोपहर शाम रात व सबेरे ॥ 15
काया भीतर हलचल होवे जो मन में।
वे विचार काया बाहर आवें बनके तरंगें ॥ 16
मन की तरंगें बन जाती बात तरंगें।
रब को सब बता देती वाहक तरंगे ॥ 17
परावर्तित तरंगें लिख देतीं नशीब आत्मा की।
कर्म का फल देना मजबूरी परमात्मा की ॥ 18

---

उमाशंकर
03.08.24.

# लगाम और कोड़ा



सही राह नहीं चलते घोड़ी घोड़ा मोड़ी मोड़ा।
जब तक ना लगाओ लगाम और मारो कोड़ा ॥ 1
बिना लगाम कोई नहीं दौड़ा सकता घोड़ी घोड़ा।
पीठ से नीचे गिरा देते पालतू घोड़ी घोड़ा ॥ 2
घोड़ी घोड़ा जस नीचा दिखा देते मोड़ी मोड़ा।
जब तक मारो कोड़ा सही रहते मोड़ी मोड़ा ॥ 3
दबा के चलाओ तो काम के लोढ़ी लोढ़ा।
नहीं दबाओ तो हो जाते हैं काम बिगोड़ा ॥ 4
थोड़ी ढिलाई में भग जाता पिंजड़ा का सुआ।
बाहर उड़ते ही घेरकर खा जाते उसको कौआ ॥ 5
सुआ पाले तो उसको सिखाना बचाना आपका काम।
मोड़ी मोड़ा को भी राह दिखाना आपका काम ॥ 6
क्या कर्त्तव्य पालन केवल सीमा रक्षक का काम?
आप कर्त्तव्यहीन तो आप क्यों नहीं नमक हराम? 7
नमक हराम को कठोर भाषा में कहते गद्दार।
मोड़ी मोड़ा बिगाड़कर आप समाज देश के गद्दार ॥ 8
आपके मोड़ी मोड़ा बनेंगे भारतीय समाज के अंग।
लगाम लगाओ मारो कोड़ा संस्कारी बनेंगे वे तुरंत ॥ 9
सर ऊँचा रहेगा आपका और आपके खानदान का।
अगर नमक का कर्ज चुकाओगे भारत महान का ॥ 10

अरविंद
02.9.2021

# भारत भूमि अच्छी

स्वर्ग में राजा इंद्र का राज्य आये।
वहां पर देवराज के गुलाम सब कहाये ॥ 1
लोग कहते हैं पराधीन सपने सुख नाही।
आपको बैठे बैठे खिलाये राजतंत्र रीति नाहीं ॥ 2
कुछ तपस्या करना पड़ती वहाँ पर भी।
स्वर्ग से अच्छी है भारत की भूमि ॥ 3
वरना ब्राह्मण वास ना करते यह वसुंधरा।
स्वर्ग से अच्छी है अपनी यह धरा ॥ 4
बड़े भाग्य से मानुष तन मिलता है।
जिसे पाने के लिए देवता तरसता है ॥ 5
देवता भी विचरण करने धरा पर आते।
जस गोरे घूमने हमारे भारत पर आते ॥ 6
कोई गुमराह कर रहा आपको यहाँ पर।
अच्छे कर्मों से स्वर्ग है धरा पर ॥ 7
जो आपको स्वर्ग पर जाने को कहते।
वे खुद नहीं जाते वसुंधरा पर रहते ॥ 8
धरती पर करते हैं वे सुख भोग।
आपके दान पर जीनेवाले होशियार कुछ लोग ॥ 9
बिना काम के खाने देते अपनी कमाई।
ऊपर से पैर भी पड़ते लोग लुगाई ॥ 10
पाप संचित होते मानुष के पैर में।
इसके उल्टा पुण्य संचित होते सर में ॥ 11.

उभावींकर
8-8-2021

अस आपके शुभ चिंतक पैर आपसे छुआयें।
सर पर हाथ रखकर देते आपको दुआयें॥ 12
आपके सिर से आपके पुण्य चले जायें।
बाबा के पाप आपके पास आ जायें॥ 13
स्वर्ग जाना चाहें मात्र हरि नाम आधार।
श्रम सत्य अहिंसा उत्तम चरित्र हो तुम्हार॥ 14
मन वाणी कर कर्म पाप पुण्य होत।
कर्मफल सबको मिलता देर जरूर कुछ होत॥ 15
परमात्मा से शिकायत करें कोई सतावे आपको।
परमात्मा सजा देंगे समझ नहीं आये उसको॥ 16
कोई जन्म से पोलियो कोई होय अंधा।
ईश्वर भाग्य पर समय आये चलाये डण्डा॥ 17
कोई बुद्धि से मंद होता कोई गरीब।
पिछले जन्म कर्मों से बनते ऐसे नशीब॥ 18
यहाँ पर कोई जाये प्रेत योनि में।
कुछ चक्कर लगायें चौरासी लाख योनि में॥ 19
कोई यहाँ कष्ट पाये कोई आनंद उठाये।
कोई चक्कर लगायें चौरासी लाख योनि पाये॥ 20
आपने देखा कुछ कुत्ते जीवित सड़ जायें।
मछली मुर्गी काटने पर तड़पें और चिल्लायें॥ 21
यही तो पिछले जन्म के कर्मफल आयें।
भारत भूमि अच्छी तो स्वर्ग काहे को जायें॥ 22
खुदा को सबसे प्यारी है आपकी कुर्बानी।
यहाँ पर त्याग की पर्याय कहाये कुर्बानी॥ 23

→ 3

उमाशंकर
8·8·21

कुर्बानी देते आपने जैन मुनियों को देखा ।
एक बार खाते पीते जो कोई देता ॥ 24
सभी सुखों को छोड़ दिया जग में ।
वे अपार शाँति लिए जीते मन में ॥ 25
शाँति सिर्फ सात्विक कर्मों से मिल पाये ।
समग्र त्यागी ही सात्विक काम कर पाये ॥ 26
कोटिपति जन जीते मन में लिए हलचल ।
रोड़पति अमन से जीते मन किए निर्मल ॥ 27
कुछ दूसरे के सुख से दुखी होमें ।
मलिन मन उनके वे कैसे सुखी होये ? 28
अगर आप स्वर्ग जाना चाहें फरिस्ते आयेंगे।
सारी बाधायें पार कर जन्नत ले जायेंगे ॥ 29
आपके कर्म से यमदूत भी आ सकते ।
आपसे बोलेंगे आप जन्नत नहीं जा सकते ॥ 30
जहन्नम ही जगह है आपके काम की ।
चोरी छिनारी धोखाधड़ी किया खाया हराम की ॥ 31
स्वर्ग मिलता हमें कुछ समय के लिये ।
जस कोई मंत्री कुछ साल के लिये ॥ 32
स्वर्ग से अच्छी धरती अच्छे काम से ।
कोई सताये तो शिकायत करें राम से ॥ 33
भूखे को थोड़ा भोजन दें पिलायें पानी ।
किसी को दान देना है आपकी नादानी ॥ 34
पान गुटका खाकर थूके और पिये मदिरा ।
पंडित जन दान नहीं करते सुनो बहरा ॥ 35

7 4 उमाशंकर
8.8.21

दान के बदले पुण्य कभी नहीं मिलता।
ब्राह्मन दान देते अगर पुण्य कहीं मिलता॥ 36
वे कभी किसी को दान नहीं देते।
भारत के भोले लोग अभी नहीं चेते॥ 37
जरूरतमंद की मदद करना कर्तव्य है हमारा।
कामचोर दूसरे की कमाई पर करते गुजारा॥ 38
पाप है किसी को हराम का खिलाना।
पुण्य है भूखे को भोजन पानी पिलाना॥ 39
धरती में अपने पास जो है अपना।
धरती में जिये भूले स्वर्ग का सपना॥ 40
खायें अपने खून पसीने की कमाई यहाँ।
केवल अपनी कुर्बानी से जा सकते वहाँ॥ 41
कवि रहे ना रहे एकदम सच्चा कहता।
जो कर्म करता उसी को भोगना पड़ता॥ 42
जो ठण्डा को छुए उसको ठण्डा लगता।
जो गर्म को छुए उसको गर्म लगता॥ 43
अपना परिजन यह दृश्य देखता ही रहता।
उसको ना ठण्डा ना गर्म कभी लगता॥ 44
जादूगरी का खेल कुछ देर ही चलता।
थोड़ी देर में समझ जाती भोली जनता॥ 45
भारत भूमि अच्छी है जन्नत से भी।
भारत में जन्म लेते किस्मत से ही॥ 46
बड़े भाग्यवाले भारत में जन्मे बच्चा बच्ची।
तुलसी बोले स्वर्ग से भारत भूमि अच्छी॥ 47.

7

उत्सव
8-8-21.

# चोर

भारतीय समाज में हैं कई प्रकार के चोर।
हमारे प्रजातंत्र के लिए सबसे घातक हैं कामचोर ॥ 1
भ्रष्टाचार कर अपनों पर ही करते हैं कामचोर।
क्रय विक्रय में रसीद नहीं देते हैं लगानचोर ॥ 2
भोली भाली जनता से झूठे वादे करते कामचोर।
सरकारी योजना में चूना और कत्था लगाते कमीशनखोर ॥ 3
अबलाओं की अस्मत लूटनेवाले भी देश में हैं अस्मतचोर।
मेहनतकश लोगों की पगार खानेवाले क्रूर लोभी किस्मतचोर ॥ 4
सरकारी नियम है काम करने का सात घंटे।
साठ फीसदी कामचोर काम करते मात्र तीन घंटे ॥ 5
करते रहते हड़ताल वेतनवृद्धि और भत्ता के लिए।
संघ बनाकर सिरदर्द हो जाते सत्ता के लिए ॥ 6
शिक्षक भी बहुत उड़ाते हैं नियमों की धज्जियाँ।
दिनभर पान गुटका थूक थूक रँगीन करते भित्तियाँ ॥ 7
जीन्स टीसर्ट की पोशाक में आगये कुछ प्राध्यापक।
उनको देख अपने बच्चों को नहीं रोकें अभिभावक ॥ 8
भारत के समाज में शुरू हो गये व्यागचोर।
हराम की कमाई खानेवाले कहलाते हैं कमीना हरामखोर ॥ 9
छाती फटती कामचोरों की सरकारी काम करने में।
जब देखो तब बैठ जाते कामचोर धरने में ॥ 10
आठ दस घंटे काम करते निजी कम्पनी में।
चीं नहीं करते दर्द नहीं होता महीने में ॥ 11
लोकतंत्र की दुर्दशा मजाक हो रही है आज।
इसके लिए जवाबदार है हमारा सरकारी कामचोर समाज ॥ 12

आशंकर 8 → 2
23.9.2024

परीक्षा में खूब नकल करते रहते हैं नकलचोर ।
शिक्षा के समय ही कुछ बनते हैं कामचोर ॥ 13
कुछ मोबाइल पर बात करते नजर चुरा जीवनसाथी ।
भगवान दूर रखे इस प्रकार के नजरचोर पापी ॥ 14
धनचोर चुराते हैं लोगों की पसीना की कमाई ।
जोरूचोर ले जाते हैं भगाकर दूसरे की लुगाई ॥ 15
किसी को चोर कहो तो होती है लड़ाई ।
सब कहीं चोर हैं चोर चोर मौसेरे भाई ॥ 16
भत्ताचोर अपने क्षेत्र का दौरा नहीं करते हैं ।
घर बैठकर वाउचर भरते पूरा भत्ता लेते हैं ॥ 17
भाड़ाचोर नकली टिकट लगाकर भारी भाड़ा लेते हैं ।
जो नियम बताये उसे आड़े हाथ लेते हैं ॥ 18
समाज में स्वाधीनता के बाद बढ़ गये चोर ।
जहाँ जाओ वहाँ पाओ कुछ छोटेचोर कुछ बड़ेचोर ॥ 19
विधायकों की भी चोरी कर लेते हैं विधायकचोर ।
लोकतंत्र का मजाक होता जहाँ शासक हैं सत्ताचोर ॥ 20
अनपढ़ मानुष मजबूरी में बनते हैं नालायक चोर ।
पति मंत्री सचिव कमीशन खाकर बनते लायक चोर ॥ 21
जम्बो करते चोरी कोटि की कहलाते हैं कोटिचोर ।
कभी कभी भूख में भोजन चुराते हैं रोटीचोर ॥ 22
जीवन में अस्तेय छोड़ कुछ लोग बनते चोर ।
कायर समाज बनाते चोर काम से डरते कामचोर ॥ 23
कमी संस्कार की ईश्वर से नहीं डरते चोर ।
भावी पीढ़ी के संस्कार भी चुरा लिए संस्कारचोर ॥ 24
बहुत बनेंगे चोर चैन से नहीं सोयेगी जनता ।
शोषण के साये में स्वाधीन वतन की जनता ॥ 25

→ 3
उमाशंकर
23.9.21

बीमारी से जस बचते तस बचें चोरों से।
क्या चोरी का लाये? जरूर पूँछें अपनों से॥ 26
चोरी का खा रहे रब सब जानता है।
बड़ी भीड़ में भी रब सबको पहचानता है॥ 27
चोरी छिनारी धोखाधड़ी शूद्र काम करनेवाले शूद्र कहाते।
शूद्र बोलें तो वे लड़ने तैयार हो जाते॥ 28
कवि किसी को शूद्र नहीं कहता अवलोकन करें।
शूद्र बनने से भला त्याग खूब मेहनत करें॥ 29
ना चोर बनें ना आजादी को बर्बाद करें।
दूसरों को आजाद रहने दें आप आजाद रहें॥ 30
जग कहे कोई नहीं चोर हमारे वतन में।
आजादी और अस्तेय सदा रहें हमारे जहन में॥ 31
चोरों से वतन को बचायें रब दया करे।
मुल्क के मानुष चोरों को शूद्र कहा करें॥ 32

8

अम्बेडकर
23-9-2021

# रानी दुर्गावती



पाँच अक्टूबर पंद्रह सौ चोबीस की दुर्गाअष्टमी।
कालिंजर के राजा कीरतसिंह के घर जन्मी॥ 1
राजकुमारी दुर्गावती बचपन से बहुत बहादुर थीं।
राजा संग्रामशाह द्वारा पुत्रवधु हेतु प्रस्तावित थीं॥ 2
सन् पंद्रह सौ इकतालिस में संग्रामशाह गुजरे।
एक साल बाद राजा दलपति पतिदेव बने॥ 3
उन्नीस सौ पैंतालिस में पिता को खोया।
अड़तालिस में पति की मृत्यु पर रोया॥ 4
पुत्र वीर नारायण शाह की संरक्षक बनीं।
सोलह साल गौंड़ राज्य की शासक रहीं॥ 5
रानी साथ वीरांगनाओं की एक टोली थी।
जिन्होंने अपने खून की खेली होली थी॥ 6
उनका कहना था मृत्यु सबको आती यहाँ।
स्वाभिमान से जिये मृत्यु इतिहास बनती जहाँ॥ 7
सेनापति आधारसिंह को बताई एक बात।
स्वाभिमान से जो जिये मरे बने इतिहास॥ 8
समाधि बनी मण्डला मार्ग जबलपुर के पास।
चौबीस अक्टूबर को लोग करते हैं याद॥ 9

---

रानी दुर्गावती गढ़ा जबलपुर थी राजधानी।
गौंड़ साम्राज्ञी की एक बलिदान कहानी॥ 10
रानी दुर्गावती थीं बहुत ही स्वाभिमानी।
अंतिम साँस तक लड़ी थी मर्दानी॥ 11
संख्या में बहुत कम थे सैनानी।
फिरभी बनी लड़ाई करने की ठानी॥ 12

→ 2

उमाशंकर
9.9.21

अँग्रेजों की थी भारी भरकम सेना।
रानी ने सिर काटा चीरा सीना॥ 13
जब आन पड़ी रानी अस्मत पर।
घोंप ली कटार अपनी धड़कन पर॥ 14
झुकना उचित ना समझा था पानी।
खून साथ बहा आँखों से पानी॥ 15
सोचकर शोषित होगी प्यारी प्रजा जिंदगानी।
प्रजा के खातिर दिया अपनी कुर्बानी॥ 16
कर बढ़ाकर संधि कर सकती थीं।
प्रजा पर भार डाल सकती थीं॥ 17
क्रूर बन राज कर सकती थीं।
रणक्षेत्र से रानी भाग सकती थीं॥ 18
प्रजा पीड़ा नहीं सह सकती थीं।
रानी बड़ी दयालू और ममतामयी थीं॥ 19
प्रजा की पालनकर्ता सही अर्थों में।
इतनी बहादुरी होती कुछ मर्दों में॥ 20
सचमुच रानी दुर्गावती एक मर्दानी थी।
जब कुर्बानी दी भरी जवानी थी॥ 21
कीर्ति देश गाता उनकी हिम्मत की।
हाड़ माँस काया में फौलाद थी॥ 22
दूसरों के लिये मरना उनसे सीखें।
युगों बाद धरा आते उन सरीखे॥ 23
गर्व करती माटी उनके काम पर।
श्रद्धा सुमन अर्पित उनके नाम पर॥ 24

6 उमाशंकर
09.9.2021

# दर्द ॥

जख्म में दर्द है दर्द बताने ना दे तो कैसे बताऊँ।
ये जग तो अंधा सा लगता मुझे तो जख्म किसे दिखाऊँ॥ 1

मात्र मौत ही मर्ज की दवा है तो दवा कैसे कराऊँ।
ये जग मुझसे सुनना ही ना चाहे तो मैं किसे सुनाऊँ॥ 2

सब अपनों ने छोड़ दिया मुझे तो नये अपने कैसे बनाऊँ।
जहाँ में खुदा ही खफा तो बेदर्द जहाँ को कैसे सुनाऊँ॥ 3

उपहास जमाना से दर्द में दुख दे सह ना पाऊँ मैं।
किस किस ने यहाँ सताया मुझे ये कह ना पाऊँ मैं॥ 4

लोग भूखों मरते थे आँहे भरते थे पेट भर खाने लगे।
जमाना ने ध्यान दिया नहीं भूखमरे हैं वही अब गरीबे लगे॥ 5

इंसानों को दर्द देना आदत उनकी बन गई है जमाने में।
वो बहुत खुश होते आये हैं यहाँ इंसानों को सताने में॥ 6

अब जग में राज चलता फरेब लोगों का जो दर्द देते।
दर्द के साथ दुख दिया दर्द अकेला होता तो सह लेते॥ 7

समझदार के लिये इशारा काफी नाम लेकर मैं बता ना पाऊँ।
जख्म में दर्द है दर्द बताने ना दे तो कैसे बताऊँ॥ 8

17

उमाशंकर
08-08-2021

# भाईचारा

मथुरा और काशी के सभी विवादित दावा मिटाकर।
बनाओ अस्पताल खुश होंगे हिंदू मुस्लिम दवा खाकर॥1
ना आप हारे ना हम जीते आपको हराकर।
विश्व शाँति के लिए प्रयास करें कंधे मिलाकर॥2
यवनों के आने से पहले भी चलतीं तलवार।
रिपु ना बनें अगर बनते हैं हम यार॥3
ऊपरवाला सदा सुनता है सब जगह की पुकार।
घर मंदिर मस्जिद से फोन करके देखो यार॥4
मानवता की रक्षा के लिए है एक दरकार।
अपनी मर्यादा में सब रहें सबका हो उद्धार॥5
अपने भेजा से सोचें नहीं करें मेरा सत्कार।
खुदा ने आपको भी बनाया है अच्छा दिमागदार॥6
सतयुग त्रेता द्वापर कलयुग से है यह संसार।
ब्राह्मण थे हैं और रहेंगे सदा इस संसार॥7
सदा से कुछ घमण्डी ब्राह्मण रहते यह संसार।
शाँति आये समाज में रावणों को दें मार॥8
घमण्डी पापी लोग बढ़ गये काफी इस संसार।
पापी चाहे हिन्दु मुस्लिम अमीर गरीब चलाओ तलवार॥9
न्याय मिले सबको हिन्दु मस्लिम सबको हो सत्कार।
सभी धर्म पुराने हुए मानव धर्म की दरकार॥10
संसार में चलती है केवल एक की सरकार।
कोई अल्लाह बोले कोई ईश्वर उसकी लीला अपरंपार॥11
पंथ भूलने का समय मानवता सबसे ऊपर है।
सरकारों की सरकार चलाता रब सबसे ऊपर है॥12

उमाशंकर
16.8.2021

# सत्यपथ

पापी को जो तू मारे खूब खुश होवें जगदीश ।
लाखों पापी खुद मारे हैं इस संसार में ईश ।। 1
पापी तो पापी है नहीं जाति पंथ का भेद ।
ब्राह्मण भी योनिजन्मा नहीं ब्रह्महत्या कर सकते ढेर ।। 2
भारत के सत्यवादी ब्राह्मण बोले जलाओ पापी रावण को ।
पूजा होती राम की जिसने मारा पापी पंडित को ।। 3
सत्यपथ पथ पर जो आप चलें जन्नत नाहीं है दूर ।
करम कोई भी हो कर्मफल देने रब है मजबूर ।। 4
सत्पथ पर कष्ट जरूर हैं पर अमन मिले अपार ।
कष्ट जो कोई सहे हो सकता है भवसागर पार ।। 5
तंग अगर कोई करे मन से सुनाओ रब को ।
समय आने पर रब दण्ड देगा इन सब को ।। 6
मन से पुकारो या वाचा से सुन लेता है रब ।
हम जो करते इस जहाँ में जानता है सब ।। 7
अगर स्वर्ग ना भी मिले सुधर जाता अगला जन्म ।
सत्पथ पर चले चलो करते चलो सब अच्छा कर्म ।। 8
सदा कहा निराशा होती अपार अकेला पा संसार में ।
थोड़ा रुको अच्छे जन मिल जाते हैं संसार में ।। 9
बहुमत नपुंसक लोगों का खाते पीते रहते अपने तक ।
बवंडर में नहीं पड़ते परहित नहीं सोचते सपने तक ।। 10
तटस्थ जन जहाँ हैं वहीं रहते जन्म जन्म तक ।
उत्तम काम उन्नति जल्दी इंतजार नहीं कराता क्रम तक ।। 11
किसी को दर्द ना दें उसमें भी आत्मा है ।
सत्पथ पर चले चलें साथ में सदा परमात्मा है ।। 12

9

उमाशंकर
17.7.2018

# ढीठ पत्नी



कभी ना डरने वाली पत्नी अगर किसी को मिल जाये।
तो जानो प्यारे ये पिछले जन्म का कर्मफल आये ॥ 1
एक विकल्प इसका है खुद त्रिया सम बन जायें।
सुबह उठ घर में अच्छे से झाड़ू पोंछा लगायें ॥ 2
अदरकवाली स्पेशल चाय बीबी के बिस्तर में दे आयें।
बीबी बिस्तर छोड़े उसके पहले आप अच्छा नाश्ता बनायें ॥ 3
फिर पती हाजिर हिकमत में हुक्म भोजन क्या बनायें।
नमक मिर्च मसाला आदि के ठीक नाप लें बनवायें ॥ 4
उत्तम है भोजन परोसने के पहले चख लिया जाये।
बीबी भोजन करे तो हाथ जोड़ खड़े हो जायें ॥ 5
प्रभू से प्रार्थना करें दोबारा ये बीबी ना पायें।
यमराज से याचना करें महाराज इसे जल्दी ले उठायें ॥ 6
कान पकड़ उठक बैठक करें और अगरबत्ती लें जलायें।
कामना करें कोई बीबी को साथ भगा ले जायें ॥ 7
घूमने का नियम आप पर लागू नहीं हो पायें।
बीबी पूछेगी आपसे इतनी देर तक कहाँ थे बतायें ? ॥ 8
जोड़ी बने नेकदिल इंसानों की धरा में सुख पावें।
सुख पाने के लिए मानुष जन्नत की आस लगायें ॥ 9
जन्नत में देवराज ना राज आप सब जानत आयें।
जग में जन सब जानें पराधीन सपने सुख नायें ॥ 10
ढीठ पत्नी से पती का जीवन नरक बन जाये।
ढीठ पत्नी ठीक होती जब जम्बो डण्डा पड़ जाये ॥ 11

उमाशंकर
08.7.2020

# शाकाहार

सज्जनों शाकाहारी बनों जीवों पर दया करो।
दाल चावल रोटी साग का आहार करो ॥ 1
पूले मिनरल व प्रोटीन इन्ही से पायें।
जैन जनों से कदम से कदम मिलायें ॥ 2
क्यों किसी के कहने से कुआ कोदो।
रब ने दिमाक दिया दिमाग से सोचो ॥ 3
मानुष की चयापचय क्रिया में यौगिक बदलते।
अनउपयोगी यौगिक से उपयोगी यौगिक बनते ॥ 4
गेंहू के आटा से रोटी बन जाये।
एक प्रोटीन से दूसरा प्रोटीन बन जाये ॥ 5
हिरन और हाथी दोनों खाते पत्ती हरी।
हाथी नहीं खाता प्राणी और अण्डा करी ॥ 6
सियार माँसाहारी फिर भी कुकर जस होई।
माँस से माँस बढ़ता सियार शेर होई ॥ 7
सियार हाथी की तुलना कर नजर आई।
सियार चाहे जितना खाये हाथी ना होई ॥ 8
सियार हाथी अंतर में पैत्रक गुण आयें।
सियार को छोटा हाथी को बड़ा बनायें ॥ 9
स्वाद के खातिर लोग चिकिन को खाते।
पौष्टिक होती चिकिन ऐसा लोगों को बताते ॥ 10
बिना पौष्टिक खाये हाथी इतना बढ़ जाये।
चूहा खानेवाली मौसी छोटी क्यों रह जाये ॥ 11
विज्ञान को ठीक से समझें भ्रम छोड़िये।
शुद्ध शाकाहारी बनिए और माँसाहार को छोड़िये ॥ 12
किसी भी निर्दोष जीव को नदर्द दो।
अपने जैसा समझो दूसरे के दर्द को ॥ 13

उपाध्याय
01-01-2021

# जीव व आत्मा, 70

नारी शक्ति मानुष की आबादी का आधा भाग आये।
मनुष तन बनाने में नारी का निंनानवे भाग आये ॥ 1
नारी काया निर्माण में नर का कुछ अंश जाये।
इस प्रकार नर नारी एक दूजे के पूरक कहाये ॥ 2
पूरक के बिना नर या नारी पूरे ना कहलायें।
प्रकृति की ऐसी व्यवस्था है जिसमें दोनों अनिवार्य आये ॥ 3
मानव समाज के अनिवार्य भाग का अर्थ हूँ बताये।
एक अधूरा ईश्वर भी अर्धनारीश्वर में पूरा हो पाये ॥ 4
मानुष की एक काया में रहती हैं अनेक कोशिकायें।
एक काया में एक आत्मा मानुष में पायी जाये ॥ 5
एक कोशिका में एक जीवद्रव्य व केंद्रक पाया जाये।
सभी जीवों में जीवद्रव्य जीवन के लिये जरूरी आये ॥ 6
जीव व आत्मा एक दूसरे से भिन्न मानी जाये।
जीव को आत्मा आत्मा को जीव जरूरी ना आये ॥ 7
प्रेत आत्मा में सदा आत्मा ही केवल पायी जाये।
शुक्राणु में केवल जीव पाया जाये आत्मा नहीं आये ॥ 8
जीवाणु जैसे जीव समसूत्री विभाजन से अपनी आबादी बढ़ायें।
जीन व जीवद्रव्य दोनों बराबर भाग में बँट जायें ॥ 9
हर स्वतंत्र कोशिका जीवन जीने में सक्षम हो जाये।
स्वतंत्र जीवन वाली कोशिका में आत्मा जरूरी नहीं आये ॥ 10
मानुष के घाव भी कोशिका विभाजन से भर जायें।
घाव भरने के लिए बनती हैं बहुत नई नई कोशिकायें ॥ 11
अध्यात्म की नजर में आत्मा शरीर की इकाई आये।
एक काया एक आत्मा तो आत्मा का विभाजन नाये ॥ 12

3भारांक2 →2
17.7.21

जब कभी किसी को कोई प्रेत आत्मा लग जाये।
तब मानुष काया में एक साथ रहती दो आत्मायें ॥ 13
प्रेत आत्मा मानुष आत्मा की चालक भी बन जाये।
यदा कदा चालक परिचालक में आपस में ठन जाये ॥ 14
प्रेत आत्मा मानुष आत्मा को अपने हिसाब से घुमाये।
अस तांत्रिक जस मानुष से चाहे तस काम करायें ॥ 15
कोई जन जनता को गाली दे समझ ना आये।
प्रेतात्मा किसी से बलात्कार करवाये व लाठी भी चलवाये ॥ 16
घटना मेरे साथ घटी तब मेरी समझ में आयो।
मैंने चाय पियो एक लड़की के पीछे दौड़ लगायो ॥ 17
देखनेवाले जन समझ गये कोई गुनिया दूर से चलाये।
मंत्र मयछा मानुष आत्मा वैसे चले जैसे गुनिया चलाये ॥ 18
मानव काया में कोटि कोशिकायें तो कोटि जीव कहाये।
मानुष में कोटि जीव को एक आत्मा रही चलाये ॥ 19
इससे सच साबित होये आत्मा व जीव अलग आयें।
यदा कदा पौधों में भी प्रेत डायन पायी जायें ॥ 20
रक्तबीज खून बूँद जितनी गिरें उतने रक्तबीज बन जायें।
नये रक्तबीज की काया में आत्मा कहाँ से आयें ॥? 21
किसी देवता को कोई किसी जीव की बलि चढ़ाये।
तब बलि चढ़नेवाले जीव की आत्मा कहाँ कहाँ जाये ॥? 22
साँप मेंढक को खाये तो मेंढक आत्मा कहाँ जाये।
काया छोड़कर साँप के शरीर से बाहर निकल जाये ॥ 23
साँप की आत्मा से मिलकर बड़ी आत्मा बन जाये।?
ऐसे में आत्मा का अविनाशी सच गलत हो जाये ॥ 24

उमाशंकर
12.7.21

→ 3

रक्तबीज की आत्मा का कई बार विभाजन हो जाये।
या रक्तबीज के खून में नई आत्मायें आ जायें ॥25
आत्मा अजर अमर अविनाशी तो कैसे कोई आत्मा खाये।
प्राणी को प्राणी खाये तो उसकी आत्मा कहाँ जाये ॥26
यह गूढ़ बात अभी मेरी समझ में नहीं आये।
शायद रक्तबीज की हर बूँद में नई आत्मा आये ॥27
कम लोग जानते असंख्य आत्मायें हवा में पाई जायें।
हवा की आत्मायें रक्तबीज के खून में आ जायें ॥28
एक बूँद रक्त से कैसे पूरा रक्तबीज बन जाये।
आत्मा के बाद इतना अधिक खून कहाँ से आये ॥29
भटकती आत्मायें हवा में लंबे समय तक रहती आयें।
बिन काया के आत्मायें हवा में सजा भोगती आयें ॥30
शायद यही कारण मरने से चींटी हाथी सब घबरायें।
मेरी समझ आये जीव और आत्मा अलग अलग आयें ॥31
प्रेत योनि भी एक तरह का नरक कहा जाये।
नरक में कितना दर्द नरक की आत्मा ही बताये ॥32
जब किसी प्राणी को मारें तो आत्मा ही चिल्लाये।
जब किसी पौधा को मारें तो पौधा नहीं चिल्लाये ॥33
शायद पौधों में उनकी अपनी आत्मा नहीं पाई जाये।
लोग कहते वनस्पति योनि भी चौरासी का चक्कर आये ॥34
कुछ पौधों में जीवन के साथ चेतना पाई जाये।
सूरजमुखी लजनू आदि इसी श्रेणी के संवेदी पौधे आयें ॥35
पौधों में चेतना होती यह मेरी समझ में आये।
इन पौधों में उनकी आत्मा होती समझ नहीं आये ॥36
पौधों में उनकी आत्मा होती प्रयोग की दरकार आये।
वैज्ञानिक प्रयोग से साबित हो तो यकीन किया जाये ॥37.

9

उमाशंकर
17.7.2017

# अब मुँह खोलो



8

आज जिसे हम शरीफ सम्मान के काबिल समझते।
अक्सर वे इंसान की खाल में भेड़िये निकलते ॥ 1
भेड़ियों को हम बढ़ाते स्वार्थ की लालच में।
समाज में शरीफ भी रहते कम तादात में ॥ 2
चक्रवृद्धि दर से बढ़ रही दरिंदगी समाज में।
अब शराफत बचाना है चुनौती इस हालात में ॥ 3
कोई अपना मुँह खोलना नहीं चाहता जमात में।
मुँह खोले तो मुशीबत मौन भला समाज में ॥4
स्वार्थी समाज भेड़ियों को मंच पर अतिथि बनाते।
उच्च पद आसीन तो दौड़ दौड़कर माला पहनाते ॥5
कम लोग ही जानते काले कारनामें जनाब के।
जुल्म को बढ़ावा देते स्वार्थी लोग समाज के ॥ 6
खामोशी किसी पाप से कम नहीं समाज में।
खामोस रहकर सहभागी बन जाते गलत काज में ॥ 7
कुकर्म कुकर्म धोखा घूस कर्म घोर पाप है।
हिम्मत कर मुँह खोलें यदि शिकार आप हैं ॥ 8
आप बचपन में नंगे घूमते घर मुहल्ले में।
आप निर्दोष तो मत शर्माओ अपराध बताने में ॥ 9
चेहरा शरीर का भाग गुप्तांग शरीर का भाग।
मुँह खोलेंगे तो पापी को जानेगा आपका समाज ॥ 10
बचपन में आपकी माँ आपकी गुदा धोती थी।
आप बिस्तर खराब करते थे माँ धोती थी ॥ 11

अम्बेडकर — 8 → 2
11.11.2020

मैला आँत के निचले भाग में सदा रहता ।
फिर भी मन मैलायुक्त वदन में रमा रहता ॥ 12
अपच पदार्थ बाहर निकालता शरीर बारह घंटा में ।
तब तक मैला का संरक्षण करते काया में ॥ 13
मल सबके शरीर और अधिक के मन में ।
सब तन मलवाहक फिरभी ऊँच नीच जीवन में ॥ 14
हम उपहास उसका करते जिस पर जुल्म हुये ।
एक बार पूछकर देखो कि किसने जुल्म किये ॥ 15
दोनों पक्षों की सुन विश्लेषण करना सीखो प्यारे ।
कभी कभी सच कुछ बताते कुछ और गद्दारे ॥ 16
इंसान की शक्ल में भेड़िये बहुत हैं भाई ।
खलनायक केवल लोग नहीं कभी कभी होत लुगाई ॥ 17
आपने गलत नहीं किया तो आप ने शर्माये ।
आपसे कुकर्म दुष्कर्म हो तो घटना सब बतायें ॥ 18
आप सब जानते रावण उच्च जाति का था ।
सीता का हरण करने के बाद पतित था ॥ 19
आप धोखा ना खाना ब्राह्मण व सँत जान कर ।
अपने भी धोखा देते मकीन करना पहचान कर ॥ 20
अब मुँह खोलें चुप नहीं रहें जुल्म पे ।
आपकी खामोशी जुल्म बढ़ा रही अपने मुल्क में ॥ 21

8 उमरांव
11.11.20

# पत्नि प्यारी



6

चरणदासी क्यों है आपकी प्यारी नारी ?
उसमें भी आत्मा समानता की अधिकारी ॥ 1
आत्मा परमात्मा का अंश आप जानते ।
इसके बावजूद भी अपने पाद मारते ॥ 2
पैर परवाना पैर से कुचलने बराबर ।
उसको भी देना चाहिये आदर बराबर ॥ 3
थोड़ा थोड़ा दिन भर काम करती ।
उससे ज्यादा कमाती जितना आहार करती ॥ 4
सदा दिनभर वह पैरती अपनी छाती ।
अपवाद कुछ जो घर बैठे खाती ॥ 5
ससुराल पहुँचते ही बहुत बनाते दासी ।
शादी की खुशी बन जाती है उदासी ॥ 6
परमात्मा जानता उसके अंश से व्यवहार ।
उसका भी बनता समानता का अधिकार ॥ 7
वह भी चाहती प्यार की बोली ।
प्यार से भरदेती है आपकी झोली ॥ 8
परमात्मा अंश पत्नि आत्मा से प्यार ।
आपके जीवन का कर देगी उद्धार ॥ 9
कुछ लोगों ने आपको उल्टा पढ़ाया ।
पत्नि को चरणों की दासी बनवाया ॥ 10
पत्नि की आत्मा को दुखी करवाया ।
अमन रफू चक्कर और कम खुशी करवाया ॥ 11

उमाशंकर
23·3·21

6 → 2

जिधर दुखी होती है कोई आत्मा।
उधर खुशी नहीं देता पूरी परमात्मा ॥ 12

आप भी आत्मा पत्नि भी आत्मा।
जानता है आपका हर व्यवहार भी परमात्मा ॥ 13

कुछ लोगों ने आपको गलत बताये।
पत्नि पति से नीची होत सिखाये ॥ 14

अब जागो पत्नि को अर्धांगिनी मानो।
अपने दर्द समान उसका दर्द जानो ॥ 15

आपकी पत्नि दूसरों के चरण छुये।
उसके वालिद ने केवल आपको दिये ॥ 16

द्वितीय श्रेणी परीक्षा में मिली आपको।
कोई नहीं करता प्रथम श्रेणी उसको ॥ 17

प्रथम श्रेणी जो बदले जालसाज कहाये।
कारावास जाये आपको साथ ले जाये ॥ 18

द्वितीय श्रेणी अंक आपका कर्मफल आये।
कोई बाबा प्रथम नहीं कर पाये ॥ 19

आपका कर्मफल आपको ही मिल पाये।
आपकी अंकसूची आपके ही काम आये ॥ 20

कोई साधू आपके कर्मफल नहीं सुधारे।
मुर्गों से उल्लू बना रहे प्यारे ॥ 21

चरणों से रौंदते अपनी पत्नि को।
दोष नहीं देते अपनी करनी को ॥ 22

उमाशंकर
23.3.21

6 →

बिना लाभ का पाप करते आप।
संभव है मन से देती आप ॥24
पत्नि को चरणों से नीचे किया।
कौनसा बड़ा जंग आपने जीत लिया॥25
वह उसकी आत्मा जानती यह व्यवहार।
आत्मा को आत्मा मानो चाहती प्यार ॥26
शिवशक्ति का मिलना बनाता अर्धनारीश्वर।
बराबर दर्जा दे रहम करो उसपर ॥27
आपकी पत्नि बराबर का दर्जा पाये।
आपकी झोपड़ी खुशी से भर जाये ॥ 28
आपकी झोपड़ी की खुशी आपके पास।
खुशी खोजने जाते बाबाओं के पास ॥ 29
मन वाणी कर करो भले काम।
भला करने से भला करें राम ॥ 30
जादूगर दिखाते रिद्ध सिद्धि के चमत्कार।
आपसे रूपया माँगते यह उनका व्यापार ॥ 31
सदा अपना फायदा सोचे हर व्यापारी।
चमत्कारी आपसे रूपया माँगे उसकी मजबूरी ॥ 32
जादूगरों से दूर रखो अपनी नारी।
वह केवल आपकी इसी में समझदारी ॥ 33
जन्नत सुख होते मानुष को कभी।
मानुष धरती पर ना रहते कभी ॥ 34
स्वर्ग से अधिक अमन देवे पत्नि।
दिन रात मेहनत करती प्यारी पत्नि ॥ 35

उमाशंकर 6
23.3.21

# कन्या के पाँच कवच



लाल रंग की बिंदी लगाये दोनों भौंहों के बीच ।
आपसे कभी नजर नहीं मिला पायेगा कोई भी नीच ॥ 1
नजर मिलने से ही मानुष होता मरीज इश्क का ।
रोग सदा बीमार करते चाहे शरीर या मस्तिष्क का ॥ 2
शारीरिक बीमारी में पीड़ा होती शरीर में बहुत खराब ।
मानसिक बीमारी में मानुष देखता दिन रात मन ख्वाब ॥ 3
मन के खयाल पूरे ना हों तो होता बेचैन ।
खुद होत बेचैन औरों का भी छीनता है चैन ॥ 4
मानुष की मानसिक शक्ति जो लगना चाहिये नेक काम ।
अपवाद लोग इश्क में सफल होते बहुत होते नाकाम ॥ 5
सूती कपड़ा की चुनरी सोख लेती आकर्षक मन रसायन ।
भिन्न कुलजनों केवल को आकर्षित करता वाष्पशील तनु रसायन ॥ 6
चुम्बक का उत्तरी ध्रुव आकर्षित दक्षिण ध्रुव को करता ।
तस लड़की का वाष्पशील रसायन आकर्षित लड़कों को करता ॥ 7
द्रौपदी रुदन विनती करती अपना तन ढकने के लिए ।
कुछ कन्यायें अपनी छाती दिखातीं कुछ मनचलों के लिए ॥ 8
जस जीभ सुरक्षित रहे शोभा दे दाँतों के अंदर ।
तस छाती तन की शोभा बढ़ाये चुनरी के अंदर ॥ 9
बाघिन के रसायन खींच लेते बाघ को मीलों से ।
कुछ भीतर से युवाओं को खींचते रसायन हसीनों के ॥ 10
लाज ही साज होती है एक अच्छी नारी की ।
निलज्ज कुरूप दिखती व्यर्थ जाती कीमत कीमती सारी की ॥ 11
थोड़ा दिखे तो सुन्दर लगे अति में भद्दी आये ।
प्रयोग करके देखें सही सच्चाई शरीर नारी की आये ॥ 12

अभाविंद्र
01.01.2022

9 → 2

जैन सिंधी सरदार बोहरा ही यह सच समझ पाये।
हिन्दू नारियाँ तन प्रदर्शन करायें देखनेवाले ही शर्मा जायें॥ 13
बात करने का सलीका सही सीखें जिन जनानाओं से।
बहादुरी से रक्षा का लक्षण सीखें सिख महिलाओं से॥ 14
सिख महिलायें सदा साथ रखती एक छोटी सी कटार।
रंगदार भी डरते सिख महिलाओं से कहलाती हैं सरदार॥ 15
रूपया बचाना सीख लें सिंधी महलाओं से समय रहते।
गणित लगाकर खर्च करतीं रूपया बचातीं अस जन कहते॥ 16
चारों गुणों का संयोग आये किसी एक अबला में।
वह एक आदर्श नमूना बन जायेगी भारतीय दुनिया में॥ 17
महिलाओं की आधी आबादी पाये जाये इस जग में।
महिलाओं के माध्यम अच्छे गुण आ जायेंगे सब में॥ 18
विदुषी चाहे ईसाई हों या जैन धर्म को मानने वाली।
सभी ईश्वर को मानतीं होती हैं पूरा तन ढकनेवाली॥ 19
कबीर ने कहा चुनरी में लागा दाग छुड़ाऊँ कैसे।
बालायें सोचें चुनरी में ना लागे दाग बचाऊँ कैसे॥ 20
चुनरी का दाग दर्द दे लगी हो अग्नि जैसे।
बाद में दाग छूटनेवाला नहीं चाहे लगायें कोटि पैसे॥ 21
कबीर ने चुनरी की कीमत समझा यह समझाया हमको।
दुनिया में कोई नहीं साफ कर सकता दाग को॥ 22
एक चोटी बाँधें अपने ब्रह्मरंध्र के ऊपर तीन लटवाली।
प्रेत प्रेतनी काया में ना जाया करती है रखवाली॥ 23
आपके घर का दरवाजा खुला तो पशु अंदर आयें।
आपको परेशान करें या कुछ ना कुछ खा जायें॥ 24
डण्डा लेकर उनको बाहर करना आपकी हो मजबूरी जाये।
उपचार से उत्तम सावधानी इसी युक्ति में समझदारी आये॥ 25

9 → 3

उमाशंकर
1.1.22

परहेज करें खाने में किसी का दिया ना खायें।
अस्तेय का पालन करें अपना कमायें और अपना खायें ॥ 25
किसी का पानी ना पियें परसाद भभूति ना खायें।
इनमें आकर्षण विद्या हो सकती समय से समझ जायें ॥ 26
नई दुनिया दैनिक समाचार पत्र में ऐसे विज्ञापन आयें।
बाबा से मिलें जो नर प्यार में धोखा खा जायें ॥ 27
जैसे लोहा चुम्बक को चुम्बक लोहे को खींचत आयें।
वैसे लड़की लड़का तरफ लड़का लड़की तरफ खिंच जायें ॥ 28
आप जानते एक दफा युवती युवक से अंदर टकरायें।
लड़की पर कलंक लगे कुल कलंकित सदैव को कहायें ॥ 29
आप जानते कलंकित कन्या कहीं की नहीं कही जायें।
जब चाल चरित्र की बात आये अपना मुँह छिपायें ॥ 30
जग में कीमत घटे मरने पर यम कोड़ा खायें।
मुश्किल से मानव जीवन मिला वह व्यर्थ हो जाये ॥ 31
खान पान की परहेज से निष्कलंक जीवन बन जाये।
अतः किसी का परसाद भभूति भण्डारा आदि न खायें ॥ 32
कवि कलम यकीन नहीं तो नई दुनिया पढ़ लें।
एक का ध्यान करें विधि को विधान चलानें दें ॥ 33
ॐ नाम का जप या हरि नाम भजा करें।
स्वाद का त्याग करें और पूरा जीवन मजा करें ॥ 34
बात करें साफ किसी को शंका नहीं होने पाये।
साफ बात से कटू बोलने की नौबत ना आये ॥ 35
द्विअर्थी शब्द बोलने से बचें ये भ्रम पैदा करते।
भ्रम करनेवाले शब्द सुन कुछ लड़के कन्या आशिक बनते ॥ 36
आशिक की मानें तो आप भी भ्रष्ट हो जायें।
किसी का दिल टूटे तो आप पापी हो जायें ॥ 37

→ 9 → ॐ आदीश्वर
0.1.01-22

अक्सर आशिकों को बर्बाद होते सबने देखा है यहाँ।
असफल आशिकों के लिए व्यर्थ हो जाता है जहाँ ॥ 38
युवतियों की द्विअर्थी बोली से बहुत युवा बर्बाद हुए।
पाप की भागीदार बनतीं युवतियाँ सदा द्विअर्थी बात किए॥ 39
पाँच कवच कोई कन्या अपनाये भारत की समाज में।
बिंदी चोटी चुनरी एकार्थी भाषा परसाद हर काज में॥ 40
गर्व करें उनके पुरखे माता पिता और आनेवाली संतानें।
आप पहले प्रयोग करें फिर कवि की कविता मानें॥ 41
कन्यायें समाज की कुंजी एक एक से समाज बनती।
ये पाँच कवच भूलने की कन्यायें करें न गलती॥ 42

9

उमाशंकर
01-01-2022

# कबीर सही 82

द्रोपदी ने भरी सभा में पुकारा प्रभु किशन को।
हे प्रभु दया करें और ढकें मेरे तन को ॥ 1
कृष्ण ने सुना पल भर की देरी नहीं की।
दुशासन साड़ी खींचते खींचते थक गया इतनी साड़ी दी ॥ 2
सभाकक्ष मंदिर नहीं था मस्जिद फिरभी ईश ने सुना।
द्रोपदी की जितनी साड़ी थी बड़ा किया कई गुना ॥ 3
ईश्वर सुनता है प्रार्थना मंदिर के बाहर की भी।
वह सदा खबर लेता सृष्टि में सब कहीं की ॥ 4
सभा में द्रोणाचार्य कृपाचार्य जस महारथी पंडित भी थे।
रणक्षेत्र में दहाड़ते थे लेकिन सभा में चुप थे ॥ 5
नमक का अहसान मानते या कर्ण से डरते थे।
या द्रोपदी की काया देखने की लालसा करते थे ॥ 6
मर्यादा बड़ी या अहसान यह निर्णय नहीं कर पाये।
विवेकहीन होने पर भी वे पंडित महारथी गुरु कहलाये ॥ 7
मर्यादा से बढ़कर कोई अहसान नहीं होता जग में।
नारी की पूरी इज्जत होती है उसके नग में ॥ 8
प्रकृति ने प्रतिक्रिया किया उस द्रोपदी रुदन सुन के।
मूकदर्शक महारथी रणक्षेत्र में मारे गये चुन चुन के ॥ 9
दुर्योधन ने एक द्रोपदी का चीर हरण करवाया था।
प्रकृति ने प्रतिक्रिया में कौरवों की नस्लें लुटवाया था ॥ 10
खुदा का दूसरा नाम प्रकृति जो सब कहीं है।
कण कण पल पल जानकारी परमात्मा रखता सही है ॥ 11
भारतीय ऋषी बताये ॐ अखण्डमण्डलाकार चर अचर व्याप्त।
ओम ही प्रकृति या परमेश्वर मेरी समझ में आत ॥ 12

→ 2

उमाशंकर
18.10.2022

प्रकृति के भीतर मानुष प्रकृति में जीव निर्जीव समान।
मानुष सदा खुदा के सम्पर्क में रहता समझ आत ॥ 13
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा गिरिजाघर भी प्रकृति के अंदर आत।
घर या मंदिर में प्रार्थना करें एक ही बात ॥ 14
परमात्मा सब कहीं की सुनता दिन हो या रात।
ईश्वर को याद करो या ना करो समझ जात ॥ 15
कबीर ने भी सही कहा खुदा सब कहीं व्याप्त।
ओ माँ पुकारते ही माँ संतान पास दौड़ी आत ॥ 16
खुदा मात्र मंदिर या मस्जिद में नहीं रहता है।
कहीं से भी सुनाओ वह सदा सुनता रहता है ॥ 17
आपके पास आने या फल देने में देरी करता।
इसके पीछे मानुष का पिछले जन्म का कर्म रहता ॥ 18
मन वाणी कर्म के करम मानुष याद नहीं रखता।
मानव जीवन में मानुष मौन मानसिक पाप करता रहता ॥ 19
मन में उठनेवाली तरंगों को भी परमात्मा जानता है।
अंधेरे या उजेरे में कुछ करते परमेश्वर जानता है ॥ 20
हम जबलपुर में बैठ दूरदर्शन में क्रिकेट खेल देखते।
जो लंदन में हो रहा तरंगों के माध्यम से ॥ 21
कबीर सही कहते थे पाथर में हरि नहीं रहता।
मस्जिद में मुल्ला व्यर्थ चिल्लाता खुदा बहरा नहीं रहता ॥ 22
जो कबीर ने पहले कहा है मैं वही कहता।
मंदिर मस्जिद जाना जरूरी नहीं रब सब कहीं रहता ॥ 23

---

उमाशंकर
18.10.22

# तब और अब

जब राजतंत्र था तब ऐसा होता था।
एक हफ्ता माह में न्याय होता था॥ 1

पंचायत में फरियादी अपनी रपट लिखाता था।
मुखिया पूरे गाँव में मुनादी करवाता था॥ 2

अपराधी और गवाही को हाजिर करवाता था।
पँच परमेश्वर का समूह न्या सुनाता था॥ 3

गाँववालों के सामने अपराधी जूता खाता था।
साथ मुआवजा राशि समय पर चुकाता था॥ 4

अब चक्कर काटो रपट लिखाने के लिए।
अपने जेवर बेचो शुल्क चुकाने के लिए॥ 5

अक्सर पेशी पे पेशी आती जाती रहती।
और परेशान दोनों चाहे वादी या प्रतिवादी॥ 6

न्यायालय के चक्कर काटते काटते थक जाते।
फरियादी ही राजीनामा करने विवश हो जाते॥ 7

न्याय पाने के लिए आये थे न्यायालय।
कसम खाकर जाते अब ना आयेंगे न्यायालय॥ 8

जो न्यायालय से डरेगा अन्याय को सहेगा।
जन अन्याय को सहेंगे अन्याय तो बढ़ेगा॥ 9

प्रजातंत्र में ऐसा अन्याय हो रहा आजकल।
शासन कुम्भकरण की नींद सो रहा इसकाल॥ 10

जनता का रुपया जनता पे खर्च होना।
व्यर्थ शासन के पेट में दर्द होना॥ 11

उमाशंकर
23.3.20

न्याय देने में देरी अन्याय के बराबर।
माननीय उच्चतम न्यायालय कहता है बार बार ॥ 12
कितने बड़े नेता कितने बड़े अधिकारी हैं।
भूल गये आवाम को आवाम हमारी है ॥ 13
किसे कहोगे कि ये नेता लापरवाह है।
सभी नेताओं का एक सा हाल है ॥ 14
कोई नेता संसद में सवाल नहीं उठाता।
न्यायाधीशों के पद खाली शासन नहीं मरता ॥ 15
देश में सभी पार्टियाँ चलती चँदा से।
प्रायः सभी चुनाव जीतते रुपया फँदा से ॥ 16
शरीफ जनता का नशीब ही खराब है।
चुनाव वही जीतता जिसके पास शराब है ॥ 17
मजा आता कुत्ते को मुकदमा लटकाने में।
कहीं ऐसा अन्याय नहीं होता बूचड़खाने में ॥ 18
देश में बहुत ज्यादा मुकदमा चलते है।
स्वाधीनता के बाद लोग ज्यादा लड़ते हैं ॥ 19
प्रजातंत्र बिना राजा की फौज समान हुई।
वही लापरवाह जिसके हाथ में कमान हुई ॥ 20
प्रक्रिया काफी जटिल सरल करना मजबूरी है।
त्वरित न्याय मिले पीड़ित को जरूरी है ॥ 21
न्यायालय का दरवाजा खटखटाओ और न्याय पाओ।
अभिभावक की जितनी मेहनताना उतनी जल्दी चुकाओ ॥ 22
प्रक्रिया को सरल बनाना सरकार का काम।
समय पर सही जानकारी देना सबका काम ॥ 23

→ 3

अम्बेडकर
23.3.20

जो सही जानकारी ना दे न्यायालय में ।
वो लंबी सजा काटे किसी सजालय में ॥ 24
विशेषज्ञ वकील न्यायाधीश हों सभी न्यायालय में ।
जस डाक्टर होते किसी बड़े चिकित्सालय में ॥ 25
दाँत का डाक्टर चीरफाड़ करे आँख की ।
आँख का डाक्टर चीरफाड़ करे दाँत की ॥ 26
दोनों स्थिति में मरीज का नुकसान होय ।
ऐसा ही स्थिति सभी मुवक्किलो की होय ॥ 27
विवेश विशेषज्ञों की जरुरत अब देश में ।
विशेषज्ञ न्यायाधीश होना चाहिए हर केश में ॥ 28
हजारों वकील हैं जो न्याय करना चाहते ।
माली हालत बंद कर देती उनके रास्ते ॥ 29
विशेषज्ञ बनाने के लिए सरकार खोले खजाना ।
चाहे न्याय में सबेर अन्याय से बचाना ॥ 30
समय की जरुरत न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाना ।
न्यायाधीशों को लोहे की मशीन नहीं बनाना ॥ 31
पचास पार होते थक जाते शाम तक ।
कुछ बहुत नेकदिल मतलब रखते काम तक ॥ 32
तीन गुना पद बढ़ाने में हर्ज क्या ?
सरकार नहीं जानती उसका है फर्ज क्या ? 33
एक रुपया लीटर बढ़ाये पेट्रोल का दाम ।
बढ़े पद खर्च का चल जायेगा काम ॥ 34
यदि पीड़ित को जल्दी न्याय मिल गया ।
देश की जनता कहेगी राम राज्य आ गया ॥ 35

उमाशंकर
23.3.20

न्यायाधीशों को देवता समान मानने लगेंगे लोग।
और अपराध करने से डरने लगेंगे लोग॥ 36
न्याय के लिये और लोग आने लगेंगे।
प्रजातंत्र राजतंत्र से भला जन समझने लगेंगे॥ 37
प्रजातंत्र खून बहाने कष्ट पाने से मिला।
सब लोग मानेंगे प्रजातंत्र में ही भला॥ 38
सभी जुल्मी घबड़ाने लगेंगे न्यायालय नाम से।
नफरत होने लगेगी लोगों हराम काम से॥ 39
अभी भी गरीब अनाथ के समान हैं।
दबंगों के जब तब सहते अपमान हैं॥ 40
सम्मान से जीने की नई आशा आयेगी।
मुल्क की न्याय व्यवस्था तुरंत न्याय सुनायेगी॥ 41
तुरत से तात्पर्य यह नहीं विश्लेषण भूलें।
विश्लेषण के बाद पापी फाँसी में झूलें॥ 42
तथ्य परिस्थिति का विश्लेषण करने के लिये।
सभी स्तर पर न्यायाधीश की समय चाहिये॥ 43
न्यायाधीश को समय मिले पूरा समझने का।
वतन में न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने का॥ 44
अच्छा राजा जल्द अच्छा न्याय करत आये।
गरीब सताये लोग रामराज की आशा लगाये॥ 45

उमा सिंह
23.3.2020

# बुद्धू बुद्धिमान बनो



7

क्यों किसी के कहने से कुआ कूदो।
खुदा ने दिमाक दिया दिमाग से सोचो।। 1
बड़े लोगों पढ़े लोगों का सम्मान करो।
हाथ जोड़ सिर झुका उनको प्रणाम करो।। 2
पैर छूना पैर धोना अब बंद करो।
अपने काम खुद करो गुलामी बंद करो।। 3
जो जन सागर में गहरी डुबकी लगायेगा।
वही आपको सागर की गहराई सही बतायेगा।। 4
नीति न्याय से जो चलें मानव कहलायें।
अनीति अन्याय पर चलनेवाले लोग दानव कहायें।। 5
जैन, सिंधी व सिखों से कुछ सीखो।
अपने पैर खड़े किया पीछे बहुतों को।। 6
आपस में लड़ने की आदत छोड़ो भाई।
अच्छे इँसानों के अनुभव जीवन में अपनाई।। 7
किसी की मीठी वाणी में ना फंसना।
किसी की फटी हालात में ना हँसना।। 8
न्याय के लिये अपनी कुर्बानी देना सीखो।
विकास करेगी समाज विकसित जन से सीखो।। 9
क्षत्री हो नहीं देखो पराई नारी कोई।
अब सब सही पथ चलें सदाचारी होई।। 10
अबला की रक्षा करना क्षत्री धर्म कहायें।
विनय करें कुटिल त्रिया से प्रभु बचायें।। 11

→ 2

7 अमरदींकर
18.6.21

किसी के रोने और आँसू बहाने पर।
यकीन से पहले विश्लेषण करें रोने पर॥ 12
बाबा बड़े बदमाश होते सावधान रहें उनसे।
आपसे अपनी गुलामी करवा रहे सदियों से॥ 13
स्वतंत्र देश के स्वतंत्र जन पूरे स्वाधीन।
अपना तंत्र खुद बनायें ना रहें पराधीन॥ 14
जन्म से मरण तक बाबाओं को बुलाते।
अपने खून पसीना की कमाई —— खिलाते॥ 15
पान गुटका खाकर थूकते बाबा आपकी कमाई।
बाबाओं के निशाने पर रहती आपकी लुगाई॥ 16
ना किसी से प्यार पालो ना बैर।
सबके साथ विकास करो श्रम करो ढेर॥ 17
ना किसी का खाना और ना खिलाना।
जादू हो सकता है खराब है जमाना॥ 18
अपने घर जन्म विवाह मरण अपनों का।
अपने घर दखल बंद करो दूसरों का॥ 19
पुतिन किसी बाबा के पास नहीं जाता।
फिरभी सशक्त देश का राष्ट्रपति बन जाता॥ 20
चीन का राष्ट्रपति सी चिनफिंग शक्तिशाली आये।
वह किसी बाबा के पास नहीं जाये॥ 21
जादू नहीं सीखोगे तो बन जाओगे गुलाम।
जल्दी घुटना टेककर बाजीगरों को करोगे प्रणाम॥ 22

——>3

उमाशंकर
19.6.21

लोग आपको तीसरी शक्ति बनने नहीं देंगे।
आप तीसरी शक्ति बनेंगे तब ही बचेंगे॥ २३
रब को कुर्बानी है प्यारी लोग कहें।
बिस्मिला भगत सुभाष गाँधी जस कष्ट सहें॥ २४
अपनी मेहनत करो अपना तंत्र विकसित करो।
नहीं गलत करो नाही मरने से डरो॥ २५

उमाशंकर
19.6.2021

# चरणदासी



सब प्राणियों में आत्मा होती है।
आत्मा परमात्मा का अंश होती है॥ 1
आपकी पत्नी एक प्राणी होती है।
उसमें भी एक आत्मा होती है॥ 2
एक आत्मा से चरणस्पर्श करवाते।
मतलब परमात्मा अंश से पैर दुबाते॥ 3
एक आत्मा को चरणदासी आप बनाते।
पत्नी से पैर पड़वाकर पाप कमाते॥ 4
कमजोर की रक्षा मदद करना काम।
पुरुष पुरुषार्थ दिखाते इसलिये पुरुष नाम॥ 5
अबलाओं की रक्षा सुरक्षा करता क्षत्री।
जस धूप से रक्षा करता छत्री॥ 6
महिला आत्मा को हीन समझते आप।
बराबर का दर्जा दे सकते आप॥ 7
चरणदासी छोड़ उसे परमात्मांश मानिये।
अपने जैसा अपनी पत्नी को जानिये॥ 8
आत्मा का सम्मान आत्मा जब करेगी।
खुशी और शाँति से घर भरेगी॥ 9
छोड़ो अब अर्धांगनी को चरणदासी बनाना।
वरना परिवार न्यायालय के चक्कर लगाना॥10
जैसी आत्मा आप वैसी आत्मा नारी।
अर्धांगनी है तो चाहती है बराबरी॥ 11

6 → 2

उमाशंकर
14.7.2021

पत्नी सदा उम्र में न्यून होती।
इसलिए सदा आपका सम्मान करती ॥ 12
बड़ों का सम्मान करना है परिपाटी।
इसलिए महान कहाती भारत की माटी ॥ 13
पत्नी सम्मान करती पति का इसलिये।
शादी करके आप बड़े हो लिये ॥ 14
छोटे बड़े का अंतर उम्र में।
आत्मा तो होती है दोनों में ॥ 15
परमात्मा जानता है आत्मा को जलील करते।
सदा घर में आप सलील करते ॥ 16
आधी परेशानी घर की दूर होय।
अर्धांगनी जिस घर चरणदासी न होय ॥ 17
कब समझेंगे इस जुल्म को आप।
कब मानेंगे मानुष को मानुष आप ॥ 18
विधाहं जो जन जग में करता।
वह कूकर अगले जन्म में बनता ॥ 19
पैर में पाप संचित होते आपके।
पैर पड़वाकर आप अपने पाप बाँटते ॥ 20
सिर में पुण्य संचित होते आपके।
हाथ रख पुण्य लेते पत्नी के ॥ 21
आभामण्डल है पुण्य की निशानी।
भारत की आवाम अब तक नाजानी ॥ 22

→ 3

उमाशंकर
14.7.21

चरणदासी छोड़ पति की दासी बनें ।
दोनों कर जोड़ मुस्कराकर सलामी करें ॥ 23
एक मुस्कराये तो दूसरा भी मुस्कराये ।
क्रिया की प्रतिक्रिया से ऐसा आये ॥ 24
आपके वातावरण में खुशी छा जाये ।
अब चरणस्पर्श नहीं नमस्ते करें मुस्कराये ॥ 25
प्रणाम का परिणाम बहुत अच्छा होता ।
वह पहले करता जो छोटा होता ॥ 26
नमस्ते की आदत डालें संतान में ।
अब यही संस्कृति फैलायें जहान में ॥ 27
बेटा बाबाओं के पैर नहीं छूना ।
अब अपनी संतान को यही सिखाना ॥ 28
पहले परिवर्तन होता फिर विकास होता ।
धीमा परिवर्तन लाभप्रद ~~अचानक परिवर्तन~~ उत्परिवर्तन घातक होता ॥ 29

सोचिये आपसे क्यों दान माँगते हैं ।
भगवान से क्यों नहीं माँगते हैं ॥ 30
शायद कुण्डली से भूत भविष्य जानते ।
भगवान उनको क्यों नहीं देते हैं ? ॥ 31
सदियों से जुल्म कराया नारियों पर ।
फिरभी दानी रूपया लुटातीं बाबाओं पर ॥ 32
कभी कुछ परेशानी आती सब पर ।
श्रीराम भी परेशान हुए धरा पर ॥ 33

→ 4

उमाशंकर
14.7.21.

माता पिता ही हैं आपके भगवान ।
इन्ही ने दिया आपको शरीर जान ॥ 34
जहाँ आत्मा का आदर आत्मा करें ।
उस घर मानव साथ देवात्मा वसें ॥ 35
जिस घर हो देवताओं का वास ।
कोई मानव ना रहे वहाँ उदास ॥ 36
अबला अच्छा समझती है अपना अपमान ।
मजबूरी अपनी जाने पति महा महान ॥ 37
पति चरण छुये बोले धीरे से ।
तुम भी आशीष लो बाबाजी से ॥ 38
बाबा के आशीष में अपनी भभूति ।
भभूति साथ आये बाबा की भूती ॥ 39
भूती भूत की पत्नी ही कहाये ।
उथल पुथल मचाये जिस घर जाये ॥ 40
भूती भगाने की बाबा दक्षिणा मंगाये ।
बाबा की यही रोजी रोटी कहाये ॥ 41
अनपढ़ बाबा पढ़े को उल्लू बनाये ।
भूती भगाने बहाने घर आ जाये ॥ 42
यदा कदा बाबा बीबी ले जाये ।
तब भक्त अपनी करनी पे पछताये ॥ 43
बीबी को बाबाओं से कुछ बचायें ।
स्वाधीन हो अपना कमायें अपना खायें ॥ 44
पत्नि में भी एक आत्मा आये ।
आत्मा परमात्मा का अंश माना जाये ॥ 45

⟶ 5

उमादांकर
14.7.21

आत्मा का सम्पर्क परमात्मा से आये।
परमात्मा जानता आप आत्मा को सतायें ॥ 46
जन जननी को आप-चरणदासी बनायें।
यह अतिघोर अति अन्याय कहा जायें ॥ 47
चुप रहती कमजोर काया बिना आय।
बराबरी का दर्जा माँगने में सकुचाये ॥ 48
उल्टा होने में ज्यादा देर नाहीं।
अर्धांगनी मानने में मानुष भला आही ॥ 49
पत्नि की भी होती हैं भावनायें।
भावनाओं की कदर करें-चैन पायें ॥ 50
समान मानें-चरणदासी से मुक्त करें।
इंसान समझ इंसान सा व्यवहार करें ॥ 51.

6

उमाशंकर
14.07.21

# बचन 9

इक नजर भरके देखो ना करना हो जायेगा मुश्किल ।
बड़ा नाजुक है ना न करना टूट जायेगा दिल ॥ 1
देता हूँ वफादारी की जवाबदारी आपको पाने के खातिर ।
जब आदेश होगा मेरी प्रेम का बंदा होगा हाजिर ॥ 2
मेरे प्यार का कभी किसी से नहीं होगा बँटवारा ।
मेरे दिल में जितना भी है सब होगा तुम्हारा ॥ 3
हम वफा से सम्हालेंगे एक दूसरे की पूरी जिंदगानी ।
सदा हमदर्द रहूँगा नहीं आने दूंगा आँखों में पानी ॥ 4
भूख और प्यास सह लूँगा नहीं सह पाऊँगा बेवफाई ।
मुझे जो आप जुदा करोगी मैं सहता रहूँगा तनहाई ॥ 5
हम साथ ऐसे रहेंगे जैसे मिलने पर दूध पानी ।
हमारा जीवन ऐसा होगा लोग सुनायेंगे बच्चों को कहानी ॥ 6
अपने दिल की पुकार कलम से निकालूँ उसके लिए ।
इस जहान में खुदा ने मुझे बनाया जिसके लिए ॥ 7
अब मैं इंतजार कर रहा हूँ आपको पाने का ।
अब हमको कोई नहीं रोक सकेगा इस जमाने का ॥ 8
शुद्ध शाकाहारी भोजन होगा कभी अण्डा भी नहीं चलेगा ।
छल कपट में रोज सुबह शाम ठण्डा ही चलेगा ॥ 9
आप जो चाहो चली आओ खुदा का नाम लेकर ।
मात पिता से बिदा ले लो केवल दुआ लेकर ॥ 10
दुआ दवा बनेगी सब दर्द हरेगी सुखी रहेंगे ताउम्र ।
दहेज लोभी करते हैं नारी समाज पर जबरदस्त जुल्म ॥ 11
बचन है बफाई का और बचन है तनहाई का ।
आप बिन मन खयाल नहीं आयेगा किसी लुगाई का ॥ 12

9 अरविंद
03.06.2021

# इजहार करते

8

इक दफा तुम हमसे इजहार करके तो देखते ।
संसार छोड़कर हम तुमको अपने दिल में रखते ॥ 1
जाति पाति तुम भूलके हिम्मत करके इजहार करते।
खाते नमक रोटी बाँटके हम दोनों साथ रहते ॥ 2
हवा में नहीं उड़ते हम पगडण्डी पर चलते ।
हम गजब प्यार करते लैला मजनू भी जलते ॥ 3
महल कुटिया को भूलके अगर हमसे तुम बोलते ।
चाँद पर बस जाते उड़ जाते अम्बर तोड़के ॥ 4
सलिमन मित्र हो जाते हम आदर्श बन जाते ।
महाँ पर अपना कमाते वहाँ भी अपना खाते ॥ 5
कुछ नहीं देते जाति के नही देते नाते ।
यदि आप इजहार करते हम एक हो जाते ॥ 6
ना हम कह सके ना आप कह सके ।
मायाजाल में मैं फंसा इजहार ना कर सके ॥ 7
जिगरों को सदमें लगे दोनो ना सह सके।
हम बहुत दूर हुए मन दूर ना कर सके ॥ 8
ज्यादा जुबा ना चले टूटे जिगर गम गटके।
अब जिया नहीं जाये चला रहते थके थके ॥ 9
इजहार कर ना सके ना जीते ना मरते ।
हम आपसे प्यार करते गर आप इजहार करते ॥ 10
आपके इजहार बिना हम प्यार कर नहीं सकते ।
रब से डरते हैं जग से नहीं डरते ॥ 11

8 अगस्त 2
05-8-2020

# सतजन कितने ?

सतजन भी थे रावण के राज्य में ।
मानवता थी विभीषण व सुखैन वैद्यराज में ॥ 1
मानवता का काम किये जान हाथ लिए ।
भयहीन हो प्रभू राम का साथ दिए ॥ 2
रावण के एक लाख पूत सवा लाख नाती ।
उसकी जमात में मात्र दो मिले सतपथी ॥ 3
सीता सम धोखा मत खाना ब्राह्मण जान ।
सीता का जीवन देखा नहीं खुले कान ॥ 4
समय है तो प्रयोग करके देखो भाई ।
साधू जानके अब धोखा मत खाना भाई ॥ 5
बड़े पद का मानुष भी होत नीच ।
बहुत आकर्षक और भोला दिखता था मरीच ॥ 6
कष्ट श्रम से ना डरें कभी भी ।
तो रब राह दिखायेगा सदा सही ही ॥ 7
सही राहगीर खुद सतजन बन जाते हैं ।
जग में जन सतजन गुण गाते हैं ॥ 8
सही राह चलते दूसरों को सही चलाते ।
सपूत माँ के गर्भ का नाम कमाते ॥ 9
अति मधुर वाणी धोखा की निशानी आये ।
समझो तो जीभ मिश्री समझ में आये ॥ 10
दुर्जन खाये कमीशन घूष शूद्र कहा जाये ।
कवि कहना ना चाहे नहीं रहा जाये ॥ 11
सतजन मिले भाग्य से लाखों में एक ।
दुर्जन को समाज से कचरा सा फेंक ॥ 12

उमाशंकर
04.04.2020

# आहें कराहें

8

बहुत बड़ा कसूर किया किसी निर्दोष को सताकर।
बहुत कष्ट पाओगे पापी इस धरा पर आकर ॥ 1

किसी को बर्बाद करनेवाले तुम भी बर्बाद होओगे।
आज नहीं तो कल अपनी करनी पर रोओगे ॥ 2

चुगलखोर तरंगे शाँत होती रब को सब सुनाकर।
रब रहम नहीं करता न्याय करता सजा सुनाकर ॥ 3

खुदा से छिपता नहीं करना चाहो कुछ छिपाकर।
विचारों की चुगली करतीं तरंगे रब को बताकर ॥ 4

तुम्हारे जुल्मों का हिसाब होगा वृद्धि ब्याज लगाकर।
खुदा देर करता अँधेर नहीं देता ब्याज लगाकर ॥ 5

जुल्म करनेवाले जुल्म ज्यादा मिलेंगे तुम्हारा पता लगाकर।
आँहें कराहें निर्दोष की रख देंगी खाक बनाकर ॥ 6

नरक में कर्मफल पापी पूरा नहीं होगा तुम्हारा।
पापी पापफल पाने पड़ेगा धरा नाश होगा तुम्हारा ॥ 7

बहुत दुख पाओगे पापी इस धरा पर आकर।
आँहें कराहें निर्दोष की रख देंगी राख बनाकर ॥ 8

8

उमाशंकर
07.07.2020

# माटी काया

7

नजर का दोष है काया तो माटी ।
पाँच की काया कुछ दिन की साथी ।। 1
कोई मन भावन लगे कोई मन डरावन ।
निर्दोष नजर नजरो डरावन काया मन पावन ।। 2
आत्मा परमात्मा का अंश नेक नियत रखें ।
कासा में आत्मा जानके नेक प्रीति रखें ।। 3
माटी समय आय माटी में मिल जाये ।
माटी का अहम् करे विवेक नहीं आये ।। 4
काया के काले गोरे पीले बाहरी रंग ।
खाल निकाल फिर देख सबका लाल रंग ।। 5
खून माँस लाल दिखें हाड़ दिखें सफेद ।
शरीर तंत्र सब में एकसा बाहरी भेद ।। 6
जो जन गुण परखे वो जन विवेकशील ।
काया माया का मोह करे मूर्ख विवेकहीन ।। 7
गौरव गुणों का समागम माटी काया में ।
गायक गुण गायें गम भुलायें दुनिया में ।। 8
सब कुछ यहीं छोड़कर जाना अंतकाल में ।
पाप पूतों के लिए कमा रहे जीवनकाल में ।। 9
पाप पुण्य साथ जायें आकाश पाताल में ।
माटी काया मिले माटी में अंतकाल में ।। 10
माटी मन जो लगाये नासमझ जन कहाये ।
समय आये माटी काया माटी मिल जाये ।। 11

7 उमाशंकर
06.102021

# समझदार सुंदरी

जितनी कम काया दिखे नारी की ।
उतनी मनोरम लगे दया बिहारी की॥ 1

आँचल ही नारी की आन होती ।
त्रिचोटी में ही उसकी जान होती॥ 2

लाल बिंदी लौटाए लोफरों की नजर ।
भौंहों के बीच लगी हो अगर॥ 3

काला धागा बचाय प्रेत नजर से ।
सुंदर कुर्ती लगे नीची कमर से॥ 4

मधुर मुस्कुराये बोली मन मोह ले ।
शब्दों पर ध्यान देकर टोह ले॥ 5

उच्चारण उच्च हो साफ शब्दों का ।
कभी मन ना मचले मर्दों का॥ 6

द्विअर्थी शब्द ना बोले कभी जानकर ।
जीभ ना आने दे मुशीबत मानकर॥ 7

कभी कभी मंहगी पड़ती है मसकरी ।
गलत लोग समझ लेते झण्डी हरी॥ 8

साफ बोले अगर नियत साफ है ।
किसी को भ्रम देना पाप है॥ 9

कोई दुखी नहीं होवे वाणी से ।
सदा सलीका रखे हर प्राणी से॥ 10

→ 2

उमाशंकर
14.7.2021

सभ्य सुरीली बोली फीका पड़े जेवर।
एक मुस्कान से ठण्डा करे तेवर ।। 11
बोली की प्रीती धरा रहे सदा।
जेवर की चमक समय साथ जा ।। 12
सुन्दर काया मिट्टी में मिल जाती।
सुंदरी वफादारी घर गाँव याद रहती ।। 13
सुंदर जो दिखना चाहे सुंदर नारी।
पहने पेंट कमीज सलवार कुर्ता सारी ।। 14
सबकी नजर जुदा होती नजरने की।
गुण वाणी खाल काया कपड़े की ।। 15
पूरे कपड़ा पहनते थे लोग शाही।
समाज में होती थी उनकी वाहवाही ।। 16
काम ज्यादा बोले कम समझदार नारी।
काया कम दिखाये समझदार सुंदर नारी ।।17
बड़ा भागवान भारत में भारतीय नर।
समझदार सुंदर नारी आये जिसके घर ।। 18
नहीं जुरुरत उसको जन्नत जाने की।
समझदारी सुंदरी देती खुशी जमाने की ।। 19
मंशा रखते समझदार सुंदरी पाने की।
अभी पुण्य करो अगले जन्म मिलेगी ।। 20

उआरबोंकर
14.7.21

# हरिजन

6

समाज में दलित शोषित गरीब लोग ।
मेहनत करनेवाले हरि के करीब लोग ॥ 1
महात्मा गाँधी ने स्नेह से कहा ।
'हरिजन' प्रभु के प्रियजन से रहा ॥ 2
हरि समानार्थी शब्द विष्णु भगवान का ।
हरिजन सनातन समाज में महान था ॥ 3
पहले इनके पास बहुत ईमान था ।
समाज में दर्जा सबके समान था ॥ 4
हरिजन समाज की सेवा करते थे ।
सेवा से अपना उदर भरते थे ॥ 5
मानव सेवा माधव सेवा के समान ।
माधव सेवक विद्वानों से भी महान ॥ 6
सेवा सरल रास्ता हरि पाने की ।
विष्ठा साफ करते बेचिंता जमाने की ॥ 7
चार वर्णों में सब समान थे ।
रूचि क्षमता से काम विभाजन थे ॥ 8
निम्नकोटि का काम करते कुछ लोग ।
बदनाम होते समाज के सब लोग ॥ 9
संयम सेवा साधना हरि भक्ति रास्ते ।
परहित सरिस धर्म नहीं तुलसी कहते ॥ 10
जिलाध्यक्ष अधिकारी भी सभी सेवक आयें ।
जनता की सेवा करते नेता बतायें ॥ 11

6 ⟶ 2

उमाकांत
11.7.20

ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य शूद्र चार वर्ण ।
सनातन काल बने थे मेधा कारण ॥ 12
चार स्तर में बाँटा था मेधा ।
कम मेधावाले करते थे जन सेवा ॥ 13
सेवक पर्याय होता नहीं शूद्र का ।
अधम नीच समानार्थी हैं शूद्र का ॥ 14
नेता कहते हम जनता के सेवक ।
मंत्री प्रधानमंत्री सब जनता के सेवक ॥ 15
हरि मानव से ऊपर माना जाये ।
हरिजन समाज में सबसे ऊपर आये ॥ 16
ब्राह्मण करते सलाम सेवक गोविंद को ।
सेवक बहुत प्रिय लगते गोविंद को ॥ 17
कामचोरों को सताया गया राजतंत्र में ।
कामचोर अभी भी हैं प्रजातंत्र में ॥ 18
कामचोर को राजतंत्र में सजा थी ।
रोटी नहीं दिया बिना मेहनत की ॥ 19
प्रजातंत्र में भी सजा का विधान ।
कामचोर कर रहे प्रजातंत्र का अपमान ॥ 20
कामचोर तो चोर हैं सब जानते ।
चोर खुदको समाज में ऊँचा मानते ॥ 21
हरिजन चोर नहीं समाज में बराबर ।
बड़े पढ़े हरिजन का करो आदर ॥ 22

6

उमाशंकर
11·7·2020

# स्वतंत्र भारत



7

उन्नीस सौ सैंतालिस में भारत स्वतंत्र हुआ।
स्वतंत्रता के लिए सैकड़ों साल संघर्ष हुआ॥ 1
स्वतंत्रता के बाद हमारा देश गणतंत्र हुआ।
अनेकता में एकता हमारा मूल मंत्र हुआ॥ 2
उत्पत्ति हुई एक से दो मुल्कों की।
कुछ दिन याद रही फिरंगी जुल्मों की॥ 3
राजतंत्र से मुक्त हुए पूर्ण स्वतंत्र हुए।
राजतंत्र में बेगार करते थे हँसते हुए॥ 4
कोल्हू के बैल जैसे चलते थे तब।
कामचोर कमीशन खाते डींग नहीं बोलते अब॥ 5
कभी काम के बदले दाम देना होगा।
कभी कभी तो दफ्तर में रोना होगा॥ 6
फाइलें कटवाती चक्कर रूपया खाती पीती हैं।
मक्कार मनमाने हो जाते बैठते कुर्सी में॥ 7
फरियादी अर्धपागल हो जाता काट काट चक्कर।
आपका काम होगा मीठा बोलते मुँह शक्कर॥ 8
भूलते देर नहीं लगी बाबू राज को।
कोटि कुर्बानि हुए हमारा भारत आजाद हो॥ 9
ऐसा जुल्म तो गोरों ने नहीं किया होगा।
कोई मुकदमा सात साल नहीं चला होगा॥ 10
सरकारी नौकरी में ठीक काम नहीं करते।
रोज बहाना बनाते हैं तरह तरह के॥ 11
रौब दिखाते नेता गुण्डा से संबंध का।
पचास फीसदी लोग शिकार होते तंग का॥ 12

उमाशंकर —> 2
02-2-2020

जो सरकारी नौकरी पाया राजा हो गया।
नियम बताओ तो जानो अपराध हो गया॥ 13
सुभाष जस कुर्बानि हुए स्वतंत्रता के लिए।
अब अपनों को सताते घूष के लिए॥ 14
मुल्क में घूष पद्धति समाप्त होगी कब।
आवाम जनाब को जमके जूता मारेगी तब॥ 15
वेतन में गुजारा नहीं होता गद्दारों का।
घूष पर नियंत्रण नहीं अब सरकारों का॥ 16
बहुत नेता चाँदा माँगते दल के नाम।
आज चँदा दो आपका करवायेंगे कल काम॥ 17
चँदा प्रणाली लागू किए सभी दलों ने।
चँदा से घर भर लिए खलों ने॥ 18
नेता चँदा लें अफसर कर्मचारी लें घूष।
भगत नहीं जानते थे ऐसे होंगे कपूत॥ 19
सरकारी कर्मचारी जब तब हड़ताल पर जायें।
वेतनवृद्धि के साथ साथ भत्ता और बढ़ायें॥ 20
एक पद भरती निकले हजारों आवेदन आयें।
बेशर्मी सरकार से काम कराते नहीं आयें॥ 21
सरकारी काम करते लोगों का पेट पिराये।
निजी काम करते करते पेटदर्द मिट जाये॥ 22
यह बात रही कम पढ़े लोगों की।
अब पढ़ो बात बड़े पढ़े लोगों की॥ 23
विश्व विद्यालय अनुदान आयोग का नियम आये।
संस्था में पाँच घंटा का समय बितायें॥ 24
कुछ प्राध्यापक की कहानी पढ़ें आँख लगाये।
वेतन पूरा मिलना संस्था आयें ना आयें॥ 25

7 → 3

उमाशंकर
02.2.20

जनाब पढ़ायें या ना पढ़ायें वेतन पूरा पायें।
कोई पढ़ाने बोले लड़ने तैयार हो जायें॥ 26
किसी संगठन के चार लोग आ जाई।
टोकनेवाले की कमरा बंद करके करें कुटाई॥ 27
पढ़े लिखे लोग भी प्रजातंत्र ही खायें।
आप जब परीक्षण करें तब यही पायें॥ 28
नेता की मजबूरी सभी संतुष्ट हो जायें।
नेता ही कामचोरों को पनाह देते आयें॥ 29
गरीब घर का आदमी नेता बन जाये।
कुछ समय पर ही बोलेरा पर आये॥ 30
नेता अपनी आय का हिसाब नहीं बताये।
करोड़ो की संपत्ति उपहार में मिल जाये॥ 31
स्वतंत्रता का मतलब उपहार दें उपहार पायें।
दो नम्बर आय एक नम्बर हो जाये॥ 32
सुभाष भगत जैसे इनके लिए कुर्बान हुए।
आम आवाम वैसी जैसी गोरे काल जिए॥ 33
निजी कम्पनी जनता का शोषण करती है।
भारतीय जनता शोषण में खुश रहती है॥ 34
कर्मचारी हड़ताल नहीं करते हमारा वेतन बढ़ायें।
हड़ताल करें तो सेवा समाप्ति पत्र पायें॥ 35
चुपचाप कोल्हू का बैल जस काम करें।
दस बारह घंटा काम के कम परें॥ 36
सरकारी कर्मचारी जब तब हड़ताल पर जायें।
हमारी मांगे पूरी करो दफ्तर ताला लगायें॥ 37
हड़ताल करनेवालों को कोड़ा मारके बाहर भगायें।
नये काम करनेवालों को नौकरी में लायें॥ 38

→ [signature]
02-2-2020

# नकेल

6

नकेल बनती बचपन की एक भूल ।
बाबा जब चाहें तब लेते वसूल ॥ 1
युगों से अधीन रहते आये लोग ।
एक गलती करके जीवनभर पछताये लोग ॥ 2
चोरी छिनाशी धोखाधड़ी कोई एक काम ।
करके लोग बनते बाबाओं का गुलाम ॥ 3
घोड़ा वैसा चले जैसा नकेल चलाये ।
मानुष से घोड़ा ना बन जायें ॥ 4
अपनी मेहनत का कमाना और खाना ।
तीन नीच कर्मों से सदा बचाना ॥ 5
नकेल देकर दूसरों के हाथ में ।
पूरा जीवन बिताते हैं पश्चाताप में ॥ 6
स्वतंत्र मुल्क में हो जाते गुलाम ।
बचपन में करके कुछ खोटे काम ॥ 7
चोखा नहीं डरता कभी आग से ।
नकेल देकर धोखा करते अपने आपसे ॥ 8
कुछ अच्छाई सीख लो कविता से ।
कष्ट सहो किनारा करो गलती से ॥ 9
अपनी नकेल सदा रखो अपने पास ।
दूसरे को नकेल दे रहेंगे उदास ॥ 10
नकेल से लोग करते काला बाजारी ।
दूसरे से चलना बन जाती लाचारी ॥ 11
अस्तेय त्याग बन जाते हैं गुलाम ।
नकेल करवाने लगती है गलत काम ॥ 12

6

उभारांकर
29.1.2020

# धोखा

7

दर्द दिल में होता भेजा भी रोता ।
नजर मिलाकर जब कोई देता है धोखा ॥ 1
मन मरता नैना भी रोते थकते हैं ।
भीगे गमछा और आँसू नही सोखते हैं ॥ 2
घट खाली हो जाते पानी पीते पीते ।
नयन लाल तक हो जाते रोते रोते ॥ 3
रूमाल गलाबंद गीले हुए आँसू सोखने से ।
सीना घायल आपके नयन तीर छोड़ने से ॥ 4
लहू टपकता है अब जख्मी सीने से ।
मना करती धरा मेरा लहू पीने से ॥ 5
माँ नहीं पीती लहू अपने लाल का ।
रोकर नदी बहाती आता पानी पाताल का ॥ 6
धरा का जल स्तर कुछ नीचे हुआ ।
सुत दुख से सब पहाड़ पतझड़ हुआ ॥ 7
धरा दुख से वायु बहुत उदास हुआ ।
रवि के रोने से रश्मिमय आकाश हुआ ॥ 8
रवि को रोता देख ताल तलैया रोये ।
रो रो करके सभी पोखर जलविहीन हुये ॥ 9
बिना जल तालाब की मीन तड़पने लगीं ।
मेरी धड़कन मीन तड़पन लय करने लगीं ॥ 10
मेरी धड़कन सुन शव वाहन आने लगे ।
शव वाहन देख सभी श्वान रोने लगे ॥ 11

→ 2

उमाशंकर
13.9.2020

श्वानों से सब सुआ सुर मिलाने लगे।
श्वान सुआ रोते सुन मवेशी रंभाने लगे॥ 12
घर में हलचल हो गई रोने से।
गायें अस आँसू बहायें पानी झरने से॥ 13
पतझड़ पोखर देख समुंदर भी रोने लगा।
दुख इतना पानी भाप बनकर उड़ने लगा॥ 14
धरा का रुदन देख आकाश रोने लगा।
कभी टपटप कभी मूसलाधार नीर गिरने लगा॥ 15
दुख नहीं सह सकते पक्षी चले परदेश।
सारे संसार को सुनाने सदमा का संदेश॥ 16
जग की सब घास फूस भई दुखी।
भूकम्प आया भू पर अस भई दुखी॥ 17
भूल लगती थोड़ी सी नयन मिलाने की।
सजा देती सबको अति आँसू बहाने की॥ 18
सारा संसार रोता दुख ऐसा होता है।
जब नजर मिलाकर कोई देता धोखा है॥ 19
धोखा से दिल दिमाक दर्द होता है।
धोखा खानेवाला हर जन जिगर रोता है॥ 20
धोखा से बढ़कर कोई पाप नहीं होता।
शूद्र नहीं महाशूद्र करता धरती पर धोखा॥ 21

उमाशंकर
13.9.2020

# मत इतरा



मत इतरा प्यारे थोड़ी दौलत ताकत पाकर ।
वरना समय समझाएगा फिर तुमको वापस आकर ॥ 1
समय घूमता सृष्टि में जस दिखता प्रभाकर ।
दौलत जायेगी तेरी तुझसे तमाम पाप कराकर ॥ 2
अपनी करनी पे रोएगा और आँसू बहाकर ।
जग में जीवन जियेगा पूरा पछता पछता कर ॥ 3
तुझे सृष्टि सजा सुनायेगी दीन हीन बनाकर ।
मन अमन ना आयेगा निर्दोष को सताकर ॥ 4
तुम्हारी जवानी जायेगी जनाब अहँ भी जायेगा ।
समय आय दौलत ताकत नाम भी जायेगा ॥ 5
तू ना इतरा पद पाकर बहुत पछतायेगा ।
पद जाते ही जमाना जमकर उपहास उड़ायेगा ॥ 6
जरावस्था में तू खुद उठ नहीं पायेगा ।
तू जिसका अहं करता काम नहीं आयेगा ॥ 7
तुझे तेरा आपना अंत में राख बनायेगा ।
राख बनने के बाद करनी पर पछतायेगा ॥ 8
बेटा पती संती साथ कोई नहीं जायेगा ।
दौलत ताकत का अहँ भस्म हो जायेगा ॥ 9
कुछ नेक काम करले जाने से पहले ।
काया छोड़ कुछ नहीं कर पायेगा पगले ॥ 10
ईश काम ईश करे तू अपना करले ।
कुछ दुख दर्द दुखी दीनों का हरले ॥ 11
मत इतरा प्यारे थोड़ी दौलत ताकत पाकर ।
वरना समय समझायेगा फिर तुमको वापस आकर ॥ 12

7

आरांकर
08.5.2020

# ईमान

7

ईमान में रम जाओ ईमान का खाओ।
प्यारे सरकार को कत्था चूना ना लगाओ। 1
किसी धर्म स्थापक ने नहीं कहा ऐसा।
मेहनत छोड़ बेइमान का घर लाओ पैसा॥ 2
जिस धर्म को मानता उसे धर्म को बंदे।
कोई धर्म नहीं कहता करो गोरख धंधे॥ 3
ना कोई देवता कहता ना कोई इंसान।
आप इंसान तब कहलायेंगे जब होई ईमान॥ 4
इंसान के साथ सदा रहता उसका ईमान।
मात्र मानुष है जिसके पास नहीं ईमान॥ 5
इंसान बन नहीं पाते चाहते हैं भगवान।
इंसान को ही प्राप्त होते हैं भगवान॥ 6
पहली मंजिल के ऊपर दूसरी मंजिल होत।
पहली मंजिल पाते नहीं भगवान को रोत॥ 7
पहली मंजिल चढ़ दूसरी मंजिल आ जायेगी।
इंसान बनने में कुछ परेशानी अवश्य आयेगी॥ 8
बिना ईमान इंसान नहीं बनते प्यारे भाई।
ईमानदार बनो खाओ अपने ईमान की कमाई॥ 9
अस्तेय ईमान का पर्याय आपको बनाये इंसान।
ईमान जहाँ इंसान वहाँ खुद आता भगवान॥ 10
आप ईमान को पाये हो गये इंसान।
इंसान को ही प्राप्त होते हैं भगवान॥ 11

7 उमरिया
12·08·2022

# चँद्रानी की सीख ॥

ठण्डा को छुओ तो ठण्डा लगे गरम को छुओ तो गरम ।
फल वैसेही मिलते छुट्टू जैसे लोग करते जग में करम ॥ 1
अध्यात्म के सभी पंथ कहें यही छुट्टू विज्ञान भी कहे यही।
मानव आत्मा भटकती है अन्य योनि में सनातन पंथ कहे यही॥ 2
पिछले जन्म कर्म अच्छे जिसके छुट्टू समझेगा यह बात मात्र वही।
पिछले कर्म खराब हैं जिनके छुट्टू यह बात समझ आयेगी नहीं॥ 3
सोना और सुन्दरता आकर्षित करती है सभी को इस जहाँ में छुट्टू।
निर्मोही होते हैं जो जन अमन पाते इस जहाँ में छुट्टू ॥ 4
श्रम से जो जन जी नहीं चुराते पसीना बहाते हैं छुट्टू।
वे जन ही जग में सुख और शाँति पाते हैं छुट्टू ॥ 5
लोगों की सोच होती छोटी छुट्टू ईमान काम छोटा नहीं होता।
वह काम जिससे किसी का दिल दुखता वह होता है ओछा॥ 6
मेरी मत मानो छुट्टू ठण्डा को छूकर देखो ठण्डा ही लगेगा।
प्रयोग करके देखो छुट्टू गरम को छुओगे तो गरम ही लगेगा॥ 7
जग के किसी कोने में रहो कोई भी भाषा बोलो छुट्टू।
रब समझ जाता सब रब से ना छिपता जग में छुट्टू ॥ 8
रब में ध्यान लगा देख छुट्टू दुनिया का सब व्यर्थ लगेगा।
कर्मफल जल्दी कभी देर से मिलता दुनिया का हर संत कहेगा॥ 9
जग का जो जन ठण्डा छुए उसे ठण्डा लगे ही ठण्डा ।
जग में दर्द उसे होता ही प्यारे जिसे पड़ता है डण्डा ॥ 10
ईमान का नशा यदि तुझे लगा छुट्टू नमक रोटी लगे मलाई।
समय रहते समझ लो बेटा जग में बेइमानी से भागे भलाई॥ 11
रब ने नहीं कहा बेटा तू अपना ईमान खोकर खा घी।
माँ कहे अपने ईमान की सदा सूखी रोटी नमक खा जी॥ 12
चँद्रानी माँ कवि की सीख दी अब नहीं है जग में।
ठण्डा लगे ठण्डा गरम लगे गरम मुझे सबक सिखाई बचपन में॥ 13

॥ —— उमाशंकर
03.8.2020

# चाहत

मैं तुम्हें चाहूँ तुम्हारा प्यार भी चाहूँ।
जीवन आशिक ताउम्र तुम्हारा साथ ही चाहूँ॥ 1
मैं आपके अब्बा की दौलत नहीं चाहूँ।
तुम्हारे कुल की केवल शोहरत ही चाहूँ॥ 2
जीवन में प्यार पोषण पानी ही चाहूँ।
सिर नीचा ना हो केवल कुर्बानी चाहूँ॥ 3
मेरी मुशीबत में सनम साया ही चाहूँ।
आपकी आत्मा का आशिक काया भी चाहूँ॥ 4
दो दिल धड़कन एक प्यार ऐसा चाहूँ।
केवल तुमको चाहूँ कभी ना पैसा चाहूँ॥ 5
चाहत है चाहूँ तो तुमको केवल चाहूँ।
साथ प्यार तुम्हारा चाहूँ ना सौतन चाहूँ॥ 6

उमाशंकर
21-2-2021

# जा रहे हो,

नजर मिलाकर नजर छिपाकर दिल दुखाकर जा रहे हो।
वादा करते जाओ जानम फिर कब आ रहे हो ॥ 1
नजर से जिगर में आग लगाकर जा रहे हो।
दर्द देकर पीठ दिखाकर हँसकर तुम जा रहे हो ॥ 2
कुछ पूछा नहीं कुछ बताया नहीं जा रहे हो।
बयार से ही बात करना तुम जा रहे हो ॥ 3
मेरे दिल का नम्बर लेकर तुम जा रहे हो।
अपने दिल का नम्बर देते जाओ जा रहे हो ॥ 4
जब जमाना सोता दीवाना रोता सुनकर जा रहे हो।
प्यार के बीज जिगर उगाकर तुम जा रहे हो ॥ 5
अंकुर नीर से सींचूँगा सुनते तुम जा रहे हो।
समय बचाकर समय चुराकर देना तुम जा रहे हो ॥ 6
प्यार उगानेवाले फल खाने आना तुम जा रहे हो।
नजर मिलानेवाले कब आओगे बताओ तुम जा रहे हो ॥ 7
मेरे आँसू सूखते प्यार सींचने आना जा रहे हो।
गुल खिलेगा फल मिलेगा खाने आना जा रहे हो ॥ 8
आपके आँसू आये [illegible]वाने आना तुम जा रहे हो।
मेरा जिगर इंतजार करेगा तुम्हारा तुम जा रहे हो ॥ 9
कब आओगे पंथी मुझे बताते जाओ जा रहे हो।
नजर मिलाकर नजर छिपाकर दिल दुखाकर जा रहे हो ॥ 10

9 उमाशंकर
24.9.2020

# प्रजातंत्र प्यारा

7

भारत देश हमारा जहाँ प्रजातंत्र है प्यारा।
हम हिंदुस्तानी हैं एक चलता है नारा॥ 1
जहाँ तिरंगा झण्डा जान से भी प्यारा।
जिसके नीचे आन में झुकता शीष हमारा॥ 2
तिरंगा नहीं हटने देंगे यह संकल्प हमारा।
तिरंगा नहीं हटने देंगे यह संकल्प हमारा।
दिल्ली में फहराता रहेगा तिरंगा झण्डा प्यारा॥ 3
सरकार रहेगी प्रजा की प्रजा के लिए।
सरकार रहेगी प्रजा की प्रजा के लिए॥ 4
तिरंगा है शान हमारी सदा के लिए।
जो भी इसे हटाने की कोशिश करेगा।
संदेह नहीं वह बन्दा बिना मौत मरेगा॥ 5
तीन सेना प्रजातंत्र के कवच के लिये।
सैनिक देते अपनी कुर्बानी रक्षा के लिये॥ 6
बोलने खाने पहनने की स्वतंत्रता है यहाँ।
भारत की नकल करेगा एक दिन जहाँ॥ 7
सकल वसुधा एक कुल की मान्यता यहाँ।
कोमल उदार दिल जनता को जानता जहाँ॥ 8
लँगर में सब लोग पेट भर खाते।
जाति पंथ भेद मिटाके पानी पीकर जाते॥ 9
लँगर में सब भंगर केवल भारतीय कहाते।
प्रजातंत्र प्यारा हमें रखना है इसे बचाके॥ 10

04. 7 उमाशंकर
04.06.2021

भंगर = लोग, नागरिक

# अनुक्रमण

अनुक्रमण प्रकृति में सदा होता रहता है ।
समय सृष्टि में सदा बदलता रहता है ॥ 1
एक भूभाग में राज्य बदलते रहते हैं ।
सकल सृष्टि के इतिहास यही कहते हैं ॥ 2
एक की जगह दूसरा अनुक्रमण कहलाता है ।
अनुक्रमण प्रकृति का नियम कहा जाता है ॥ 3
सिंहासन में राजा के बाद राजा आता ।
समाज में सदा से ऐसे आता जाता ॥ 4
सुख दुख जीवन में आता जाता है ।
सुख दुख में सम समझदार कहलाता है ॥ 5
जीवन में जो जन दोनों पाता है ।
उसका जीवन ही पूरा माना जाता है ॥ 6
खराब समय कुछ समय बाद जाता है ।
मानुष को कष्ट का स्वाद चखाता है ॥ 7
कष्टरहित जीवन जीनेवाला वंचित रह जाता है ।
बिना कष्ट जीवन अधूरा रह जाता है ॥ 8
कष्ट कुदरती देन जो समझ जाता है ।
आगे बढ़कर कष्ट का स्वागत करता है ॥ 9
कृष्ण को जन्म से कष्ट मिलते हैं ।
राम जंगलों में दर दर भटकते हैं ॥ 10
बावरे तू कष्ट से क्यों डरता है ।
कष्ट रब देता खुदा कष्ट हरता है ॥ 11

उमाशंकर
17.8.2021

# दयादृष्टि 8

हे परमात्मा कष्ट देने से पीछे ना हटें ।
लेकिन मुझे कष्ट सहने की शक्ति भी दें ॥ 1
हे परमात्मा पाप मुक्त करने की दया करें ।
मैं कष्ट सह सकूँ शनैः शनैः कष्ट दें ॥ 2
जो भी सजा देना इसी योनि में देने ।
मेरी मानवयोनि को मुझसे कभी भी ना छीनें ॥ 3
मेरा जीवन आचरण सदा इस तरह का हो ।
किसी को मुझसे कभी दुख दर्द ना हो ॥ 4
प्रेम भाव सभी से हो ऐसी दया हो ।
नेक नियत बनी रहे मुझे लालच कभी ना हो ॥ 5
रोजी रोटी चलती रहे परिवार चलता रहे मेरा ।
सदा निरोगी योगी रहूँ मैं आशीष रहे तेरा ॥ 6
जन्नत मिले ना मिले मानव योनि ना जाये ।
मुझसे किसी प्राणी को दर्द होने ना पाये ॥ 7
कम में मेरा गुजारा हो अनीति से किनारा ।
अन्याय पास आये नहीं न्याय नीति हो प्यारा ॥ 8
बुद्धि विवेक संतुलित रहें मायाओं से रक्षा करें ।
अहं ना आये अहं से मेरी रक्षा करें ॥ 9
हे परमात्मा स्वतंत्र भारत में मैं स्वतंत्र रहूँ ।
जन्नत जाकर मैं इंद्र की आधीनता ना सहूँ ॥ 10
कोई पाप ना हों मुझसे ऐसी करें कृपा ।
आपकी दयादृष्टि बनी रहे मुझ पर सदा सदा ॥ 11

8

उमा सिंह
14.7.2020

# मनचले

9

आग लगा मेरे मन तन में तुम कहाँ चले ।
इश्क की आग जला रही मुझे तुम कहाँ चले ॥ 1
तुमने सीटी बजाई मैं आई बाहों में आ मनचले ।
मन को मुझसे बाँध यहाँ वहाँ ना जा मनचले ॥ 2
मन को लगा मतौना मतवाला हुआ अब संभाल मनचले ।
ठोकर से ठण्डक दे मेरे तन को तनिक मनचले ॥ 3
मन मन से तन तन से लगाओ अब मनचले ।
तुम्हारे इश्क की आग मेरे मन तन में जले ॥ 4
मेरी बाँहों में आओ मेरी आग बुझाओ मेरे मनचले ।
शादी के पावन बँधन में बँध जाओ कहाँ चले ॥ 5
इधर उधर ना नजर लड़ा सँभल जा मेरे मनचले ।
मेरी नजर से नजर जिगर से जिगर मिला मनचले ॥ 6
अगल से अगल बगल से बगल मिला मेरे मनचले ।
इश्क की आग जला रही मुझे तुम कहाँ चले ॥ 7
बाँहों में बंधकर देखो नयनाँ ना सेंको मेरे मनचले ।
नयनों ने आग लगाई पेट्रोल बनी मुस्काई मेरे मनचले ॥ 8
समय संगम का अब तनहाई खलती है मेरे मनचले ।
मुझमें समाओ इश्क की आग राख बनाओ मेरे मनचले ॥ 9
तुम पर मन मचलता मन से मन मिलाओ मनचले ।
तन से तन मिलाओ तन की आग बुझाओ मनचले ॥ 10
पावन बँधन में बँध जाओ मेरे हो जाओ मनचले ।
पित्तर ऋण चुकाओ ब्रह्म यज्ञ फल पाओ मेरे मनचले ॥ 11
अपना कर्त्तव्य निभाओ काम पर लग जाओ मेरे मनचले ।
काम से दाम मिले दाम से परिवार चले मनचले ॥ 12
मेरी बाँहों में आओ मेरी आग बुझाओ मेरे मनचले ।
मन से मन तन से तन मिलाओ मेरे मनचले ॥ 13

9 उमाशंकर
18. 9. 2020

# पेट

8

पूत पेट खातिर अबला अब भी लाचार है।
खुद माँ मजदूर खुद ही माल बाजार है॥ 1
अबरू आबरू कीमत कुछ रुपया कुछ हजार है।
जालिम जन बनाती जालिम जन जननी धिक्कार है॥ 2
अबराओं के मध्य अब भी पूतनायें बरकरार हैं।
सेर भर माँस हर शहर मछली व्यापार है॥ 3
माँस मोह मनाये मानुष मन का विकार है।
चलित छूरे से त्याग उत्तम गुणा हजार है॥ 4
रूबिया चोर काम चोर-चोरों की भरमार है।
रुपया चोर नियत खोर हराम का खानेवाले धिक्कार है॥ 5
जाति धर्म पंथ सबसे ऊपर उत्तम संस्कार है।
बेगुनाह सजा समाज पा रहे बयार गुनहगार है॥ 6
आदिकाल से अबला अब तक हवस शिकार है।
शाम भगाओ काम भगाओ काम लगाओ दरकार है॥ 7
संस्कार सभ्यता लाना समाज में शिक्षक का अधिकार है?
शिक्षक ही कामचोर नियतखोर हरामखोर समाज विकार है॥ 8
मानवता के खातिर खूनी क्रांति की दरकार है।
जन जल्दी जागो घात सा बढ़ता अत्याचार है॥ 9
खुद माँ मजदूर खुद ही माल बाजार है।
पूत पेट खातिर अबला अब भी लाचार है॥ 10
जिसे उदर भर निवाला मिला लालच सवार है।
तिकड़म त्रियायें भी करतीं समाज पर अत्याचार है॥ 11
पेट पालने अबला अब तक अस्मत व्यापार है।
सबला जो हुई ताड़का उनमें गरोहट सवार है 1

8

उमाशंकर
12-09-2011

# न्याय अन्याय

न्याय और अन्याय समझ में नहीं आये ।
इक बार कोई न्यायालय में चला जाये ॥ 1
अंत में जितनी सजा कोई अपराधी पाये ।
उतना या ज्यादा वादी परेशान हो जाये ॥ 2
मुवक्किल वकील में ही बहसें हो जायें ।
वकील पास आते जाते जूता घिस जाये ॥ 3
मुवक्किल वकील की नाराजगी घर में दिखाये ।
मियाँ बीबी में बहुत बहस हो जाये ॥ 4
कोई जेवर कोई जमीन बेच शुल्क चुकायें ।
घर बेंचें कोई कर्ज में डूब जायें ॥ 5
कर्ज लेकर कोई तीरथ करने नहीं जायें ।
न्यायालय में न्याय होता इस आशा आयें ॥ 6
देर से न्याय अपने आप होता अन्याय ।
हो रहा वादी पर अन्याय पर अन्याय ॥ 7
प्रतिवादी जेल की जगह घर आराम फरमाये ।
अपराध पर अपराध करे गवाहियों को धमकाये ॥ 8
कुछ थककर प्रतिवादी से हाथ मिलायें ।
देर से हार समझौता लोक अदालत करायें ॥ 9
न्यायाधीश अठारह घंटा काम करें मामले निपटायें ।
तब भी मामले न्यायालय में बढ़ते जायें ॥ 10
न्यायालय में आधे पद खाली रहे आयें ।
पद भरने में मंत्रियों के पेट पिरायें ॥ 11
जनता रुपया जनता हित खर्च करने आये ।
भारत में विवेकहीन शासन करते समझ आये ॥ 12

उमाशंकर
09.10.2022

# An Innocent Tree 7

[In nature there was want of waters,
it was not only the physiological one. 1

[Tree had to shed leaves and flowers,
under the acute hot pathological sun. 2

[The scares to were not left free,
so changed into the deep woundings. 3

[The forces forced to innocent tree,
so not bestowed scent into surroundings. 4

[On return of the favourable conditions,
it will bear many leaves and flowers. 5

[It will not take years or seasons,
it will take merely minutes or hours. 6

[Any rain may change its fate,
still the tree is not any garbage. 7

[Not early but may be little late,
flowering fruits may occur at any age. 8

7

Usfatel
08.6.2007

# PEACE IN THE WORLD

6

1 Civilisation we got in many years,
may check flow wounded men tears.

2 Timely nuclear disarmament in the world,
may perpetuate civilization of the world.

3 In case bombs applied as weapon,
may perish biodiversity of any nation.

4 Biodiversity is creation of the God,
may destroy region that is hot.

5 Need of men exceeded food water,
may be avenger of our nature.

6 Development with peace in the globe,
may prosper society as we hope.

7 Temptation of too much lust ease,
may revert all developments or cease.

8 Many peoples have hostality and fear,
may peoples live as brothers here.

9 Main cause of sorrow is jealous,
may not be who follow jesus.

10 Affection among peoples of all religions,
may open boundaries of all nations.

11 All prophets advised justice for all,
may injustice doers go into jail.

02-3-20

12 Co-operation as brothers in the world,
may make heaven life in world.

13 Destruction of nuclear weapons from world,
may save civilization men in world.

14 Bio and chemical weapons are painful,
may be applied by any fool.

15 Prophets never advised kill innocent men,
may advised follow make world heaven.

16 World need peaceful life not war,
may men save civilisation avoid war.

17 Talk for peace first is step,
may peace come from fight step.

18 Tit for tat being oppurtunity last,
may you assume world war cost.

19 If one deny peace them fight,
may end opponent or make right.

20 If will come very velocity storm,
may leave behind in region calm.

21 Remind preaches of religion relevant prophets,
may peace return from the preaches.

22 Killing of devils is not sin,
may devils' demise permit peace win.

——x——

Ushafat
03.03.2020

# PRAYER

8

1 Myself neither punish to any body nor pardon,
Myself leave matter on the God for decision.

2 I believe God is more powerful than me,
I believe he may punish better than me.

3 My faith the God never bias even me,
My faith the God punish whoever is he.

4 It takes some time to announce a decision,
It knows better what is odd and even.

5 Unwilling error is likely to be a pardon,
No pardon is for an offence of intention.

6 The God is less kind more is cruel,
The God is bound to follow nature's rule.

7 It can not pardon even to its refugee,
But can defend from offence to its prayee.

8 One can only pray to save from crime,
Prayer is to keep always away from crime.

9 Oh God save me keep away from offences,
Take my cases and kindly protect from offences.

10 Prayer for healthy wealthy and wise world society,
Prayer is for humanity and peace in society.

11 Peace in the society depends on the almighty,
Prayer to almighty for peace in the society.

8

17.7.2020

# GLOBAL WARMING

6

1 Synonym of the earth is globe,
the solar family has a globe.

2 Warming is continuous form of warm,
a synonym of hot . is warm.

3 Thirty three degree celsius global warming,
which is preindustrial natural global warming.

4 Green house gases cause global warming,
when more than need are harming.

5 Carbon dioxide is the main gas,
point zero three percent in space.

6 It absorbs visible wave length light,
and reemits around infrared harmful light.

7 Concentration raised point zero four percent,
by deforestation in years of cent.

8 Plants absorb carbon dioxide by photosynthesis,
water is utilized in carbohydrate synthesis.

9 Plants reduce carbon dioxide from atmosphere,
some million tons weight every year.

10 Plants also absorb visible solar light,
and help in global warming fight.

6 → 2

Usfated
19.7.21

11 Light is made up of photons,
which are absorbed by green plants.

12 Photons are also known as heat,
warming is result photons air meet.

13 Thirty three percent forests on globe,
global warming will no problem hope.

14 Air temperature thirty three degree Celsius,
had maintained by green house gases.

15 Otherwise air temperature probably minus eighteen,
instead present degree celsius of fifteen.

16 Global warming is helpful to men,
if is in thirty three domain.

17 Thirty three percent global forest cover,
may maintain natural global warming here.

18 Save and plant more more tree,
to make world global warming free.

19 Trees also provide food medicine timbers,
employment to men in large numbers.

20 Deforestation main cause of global warming,
reforestation is solution of this harming.

→3

Usfatal
19.7.21

21 [Life time of carbon dioxide air,
is about hundred year in atmosphere.

22 [Carbon dioxide auto degrade in atmosphere,
reforestation may remove carbon dioxide fear.

23 [Keep industry on keep development on,
thirty three percent forests, problem gone.

24 [Much cry lesser is this problem,
global warming is a temporary problem.

25 [The whole earth is a family,
all nations should resolve problem collectively.

26 [Problem is by lack of humanity,
some nations do not show sincerity.

—— x ——
6

Usfatel
20. 7. 2021

27 [Problem is only of twenty years,
point one percent reforestation every year.

28 [Two percent forests are needed more,
thirty one to thirty three sure.

29 [Increased two percent forests a boon,
global warming control will be soon.

——
6 15.8.2022

# INDIA

6

1 My India is federal and secular,
the Constitution is world wide popular.

2 The largest written in the world,
flexible we can ever change word.

3 The Tiger is our national creature,
peacock National bird of good feature.

4 Wheel within tricolour flag of nation,
national anthem starts with word Jan.

5 India is second in world populations,
peoples reside more than ten religions.

6 Unity among diversity is main character,
various religions and their thoughts differ.

7 Different languges are in different regions,
the greatness is unity among persons.

8 Surround Nepal Bhutan Bangladesh and Myanmar,
China Pakisthan Afganisthan and ocean water.

9. Unity among diversity is main character,
my India is federal and secular.

6

Usfatel
02.2.2020

# CHEATER 6



1 One who breaks faith is cheater,
cheating is heinous crime in sphere.

2 faith is unique support in sphere,
oral or written faith is swear.

3 Swears bind and inspires do duty,
who breach swears are men dirty.

4 Social life runs by peoples faith,
one's national relationship based on faith.

5 Everyone has to have others reliance,
reliance is swearing in bound compliance.

6 Swearing in ceremony held in offices,
encourage to do duty to officers.

7 Sometimes public say it is commitment,
soul to soul soul to government.

8 Commitment of soul to the God,
commitment compells to not do fraud.

9 Love between two spouses is faith,
faith break pains more than death.

10 In death pain ends with breathing,
life long pain given by cheating.

11 If near and dear breaks commitment,
it hurts more to our sentiments.

12 Cheating is the worst sin here,
all live by faith in sphere.

Uspatel
08.4.20

→ 2

13 God knows breach of any commitment,
God souls are in connection permanent.

14 Here cheaters find place in jail,
post death they go into hail.

15 Souls of sinners being harassed there,
sinner's souls find plentiful pains there

16 Fox is faithful than a cheater,
because peoples know fox is clever.

17 Cheater in society is worse creature,
alert society if you know a cheater.

18 Mean is he and his soul,
the worst man in world whole.

—x—

6

Usfatof
08.04.2020

# SUPREME JUSTICE

7

1 Do not forgive do not be saint,
leave offender on the God for punishment.

2 Do not excuse do not do settlement,
God may give him the worst punishment.

3 The God is more powerful than you,
tell God if any body harass you.

4 The God listens calls of all souls,
God is always in connection of waves.

5 The God punishes to offender earlier or later,
always award or punishment gives the nature.

6 You find some birth on road sides,
who are physically and mentally weak besides.

7 Some are by birth lame or blind,
some suffers inborne incurabble disease you find.

8 Some birth in a very large castle,
strong smart and wise this is noticeable.

9 This difference among men is by birth,
which is result of previous life work.

10 Almighty is not ~~fool~~ deaf or blind,
we do earlier or later we find.

7 → 2

Unfated
01.4.21

11 If we pardon to cruel criminal ever,
criminals can dominate human society for ever.

12 Justice is above all in human society,
render to offender for punishment by almighty.

13 Do not break any law by relatiation,
keen sight of almighty on every action.

14 Atrocity happens with you tell the nature,
justice will favour justice in your favour.

15 God is almighty God is the nature,
always justice is done by the nature.

[illegible]
01.4.2021

# FATHER'S DAY

1 Twentieth June celebrated as father's day.
Honest father tells children righ way.

2 Father work hard and sheds sweats,
Whatever we demand he always gives.

3 He bears good bad for family,
He tolerates many insult very gently.

4 He cares always for our career,
If wrong way he is barrier.

5 He is always a good promoter,
Good father tells not be smoker.

6 He expects from children good person,
Dreams day night for his children.

7 The best father is in society,
Feeds children from earning of sincerity.

8 He always makes fear of lord,
Faith fair life never fear sword.

9 Tells truth path is somewhat hard,
Hard path makes man very hard.

10 Proud is in life honest father,
Hard worker and truth path walker.

→ 2

Updated
24.6.21

11 Father is after mother in life,
He always keeps his children tight.

12 Proud is father wrong did never,
Some good deeds done for ever.

13 Salute to sincere and honest father,
Hard worker and truth path walker.

14 Who seldom threats father is great,
Threats of father make children great.

15 Mother and fathers are our generator,
Both are great mother is greater.

16 Never insult to our living bond,
For his children who works hard.

—— × ——
6

Urfated
24.6.2024

# THE WOMAN

7

1 The woman makes almost half human population,
who is living being and have sensation.

2 Woman gives more than ninety nine percent,
to human population of future from present.

3 In regeneration main role is of woman,
but social value is lesser than man.

4 Only the woman knows baby birth pain,
woman feeds bring up and serve children.

5 Woman loves and cares better than man,
cooking in kitchen is privilege of woman.

6 Usually woman washes clothes of her children,
woman dresses her children better than man.

7 Injustice is happening with her by man,
on records first name is of man.

8 Man is considered father and first guardian,
woman biomass provider must be first guardian.

9 Children usually speak mother more than father,
all children live more with their mother.

10 The woman often harassed by cruel husband,
cruelty with woman must go to end.

—x—

7

Ushafaq
02.06.2021

# DEED AND DESTINY 6

1 Reaction of each and every action,
a universal law of the creation.

2 Thoughts physical works and our speaches,
are actions which are our deeds.

3 Every deed produces vibrations and waves,
deed waves impulse our surrounding waves.

4 In our mind any thought arises,
it creates current and waves always.

5 Any vibration occurs in our mind,
comes out from head contacts wind.

6 Thought is the most dangerous deed,
waves carry it to the God.

7 Even what we visualize is deed,
plays role in our destiny made.

8 Even in atom an electron moves,
it produces some sort of waves.

9 In an atom what is happening,
in biotic abiotic God is knowing.

10 God is aware about all incidents,
always by means of air currents.

→2

Unfatal
26.02.21

11 Nothing is hidden from the God,
Knows our good and bad deed.

12 Auto system of waves formation movements,
destiny is result of God judgments.

13 Nature is driving nature by waves,
we send and receive phones messages.

14 Thoughts of peace for the sphere,
will bring peace there and here.

15 Our deed makes our future destiny,
all known by waves the almighty.

16 We may be cheaters for others,
God is seeing heres and theres.

17 Destiny is outcome of our deed,
God is looking every moment heed.

18 Do not try to make fool,
return you will become a fool.

19 Every has to pay one day,
God is seeing monday to sunday.

6

U.Patel
26.2.2021

# OM AND GOD 7

Nothing hiddens in nature of our action,
rule of nature is reaction of action. 1

Reaction happens equal but in opposite direction,
always is link between action and reaction. 2

In the Universe prime role of waves,
nature is conducting to nature by waves. 3

Om is God means generature operatore destructor,
God is onother name of nature's conductor. 4

Om is God vice versa and nature,
by any action waves issue in nature. 5

God knows what happens in the atom,
whatever we do and think knows om. 6

God knows our emotions we can't conceal,
whether day or night God sees feel. 7

Om derived from Hindi Oma means mother,
if, repeatedly called Oma it becomes Om. 8

Nature nourishes everyone so nature is Om,
Om is nature God almighty is Om. 9

Om is not property of any religion,
Om is the Universe beyond any region. 10

7

Usfatel
29.6.2019.

# LIFE SCIENCE SAYS

U. S. Patel
**Ex Young Scientist Fellow,**
**Department of Biological Sciences, Rani Durgawati University,**
**Jabalpur 482 001, M.P.,**
**INDIA**
**Email: umashankar_patel2002@yahoo.com**

---

Now is not extra time for rest;
Soon run, if you want the best.
It is the time to think, whether;
You want to be feed or feeder.
A halt of more than a moment;
It may result you as a remnant.
In case, you are in minutes late;
A loss of existence is your fate.
Even, if you are a bit sluggish;
Sure is the target you will miss.
If, there is lack of the guidance;
But run can't save the existence.
One who can guide is a teacher;
It is man or chemical of nature.
Struggle is only for, who are fit;
Self out of race, who are unfit.
The life science says to all you;
Only one will be who is active.
Use money for the green earth;
And bio diversity for the mirth.
This is the time you think over;
Save the sphere or sink for ever.

COPYRIGHT OFFICE
NEW DELHI.
Reg. No. L-30855/08
Date 1/7/08
Deputy Reg... ...opyrights

---

Correspondence: Dr. U. S. Patel
C/O Dr. S. Jain MIG-53, Govind Bhawan, Civil Lines,
Jabalpur 482 001, M.P.,
INDIA.
Email: umashankar_patel2002@yahoo.com

22/05/2008

# LEARN

6

Better than God is my mother,
Equal to God is my father. 1
Well wishers are all my teachers,
Helper in need relatives friends brothers. 2
Humen are companion of pleasure sorrow,
Neighbours guards of today and tommorrow. 3
Villagers are buffer for any calamity,
Always being good for our proximity. 4
Helps return in form of helps,
But few fellows who centred self. 5
History are tought to learn something,
Respects of elders for this thing. 6
Honour of elders in human society,
May inform us about coming calamity. 7
In society behaviour of a caste,
Experience of elders may be forecaste. 8
Characters go from generation to generation,
Offsprings learn from parents about profession. 9
Who are helper who are cheaters,
Learn from parents friends elders teachers. 10

6

Uspatel
23.8.2021

# PAIN 7

All creatures love their life in sphere,
Every creature has a soul in sphere. 1

Almost all creatures love to their infants,
Ants to elephants all nourish their infants. 2

Affection for infants seen in monkey donkey,
These bring up infants affection is key. 3

In some creatures male while in others female,
Play role less or more or equal. 4

All creatures are sensitive to their pain,
Some cry when we penetrate a pin. 5

Non violence is not possible for Lion,
Lion can't graze well teeth for reason. 6

More better instance could be an alligator,
We can see its mouth teeth structure. 7

Men can give up violence in sphere,
For humans non violence is possible here. 8

One gets pain in return of pain,
God did not say to deliver pain. 9

Large and strong creature elephant is vegetarian,
Human should give up violence be vegetarian. 10

→ 2

7

M.Patel
28.8.22

Each and every [illegible] has right of life, 11
To seize others life not human right.

Life is given by God in nature, 12
Not man Lion is made as predator.

Atleast human should not kill to human, 13
Among peoples hit to hate generate affection.

You know a soul is in everyone, 14
You do good bad get in return.

Think for peace in the whole sphere, 15
You will find peace here and there.

If, you will give pains to other, 16
You will get pain here and there.

Nothing is greater than affection in sphere, 17
You will get back affection of affection.

Wise men bestow loves in human society, 18
Love is one way to get almighty.

Love is the simplest way for heaven, 19
Love not need money give to everyone

You can give love don't give pain, 20
Everyone wants love from you not pain.

---

Ushaful
23.8.2022

# PLEASURE 7

This is a universal rule of nature,
Real pleasure never reside with a sinner. 1

Pleasure returns back from a good deed,
And ofrom helps virtuous gentlemen in need. 2

True pleasure comes from service of mother,
Pleasure also comes from service of father. 3

Pleasure comes from change in wrong doers,
When they become virtuous good kalh workers. 4

Pleasure is in hormony among human religions,
When forget fundamentalism be kith and kins. 5

Most pleasure is in heaven after death,
Characterful men get same pleasure on earth. 6

Character is the most precious in life,
Once lost never returns back in life. 7

Character is pleasure on earth and heaven,
Life ought be like holy books open. 8

Difference is between physical and mental pleasure,
Eages provide physical mental good character. 9

Mental pleasure is stable physical is ephemeral,
for most mental pleasure sacrifice is essential. 10

The God loves sacrifice of human being,
Satisfy in ourself thing not others' thing. 11

7 Usfatal
09.7.2020

# AWAKE MAN 6

Issues of global warming and homosexuality,
Both extremely bad for human society. ] 1

First affects to nature bad way,
Second destroys to civilized society today. ] 2

We pay attention on global warming,
But homosexuality quitely cause more harming. ] 3

We have started nurture giant religion,
Deformity not limited to a region. ] 4

Homosexuality is bad bane not boon,
Spreading like an epidemic ban soon. ] 5

God made man we make pig,
Dirty man enjoy into anus dip. ] 6

Wrong path of society give away,
Legally and socially without any delay. ] 7

Patel's theory of thirty three may,
Increase in global warming cause stay. ] 8

Theory of thirty three percent phyte,
Best alternative of global warming fight. ] 9

Thirty three percent forests on earth,
Global warming issue will be mirth. ] 10

→ 2

Usfatel
22.8.2022

Forests extent to thirty three percent,
Increase in global warming will end. ] 11

Both harmful for humanity and nature,
finish to both from globe earlier. ] 12

Prayers return from nature as boon,
Pleased almighty may save society soon. ] 13

Current conditions on earth are alarming,
Late in awakening is more harming. ] 14

Land of globe thirty three percent,
Should be covered with the forests. ] 15

Forests are better friends of human,
Forests absorb daily dioxide of carbon. ] 16

Green plants absorb photons of light,
Help man in global warming fight. ] 17

Forests cool to atmosphere of globe,
Thereby maintain temperature of the globe. ] 18

Issues of global warming and homosexuality,
Both extremely bad for human society. ] 19

For the sake of the almighty,
Finish evils of global warming homosexuality. ] 20

6

Unfated
22-8-2022

# कुछ शेर



1. मर्द वही जो दर्द सहे आँह ना भरे।
फर्ज वही जो दर्द की परवाह ना करे॥

2. दर्द अपना लिये जा रहा हूँ,
नफरत हजम किये जा रहा हूँ।
हमदर्द का इंतजार कर रहा हूँ,
आयगा आश में जिये जा रहा हूँ।

3. बावरे तू क्यों रो रहा उस बेरहम के लिए।
जिसने छोड़ दिया तुझे ताउम्र तड़पने के लिए॥

4. खुदा ने किसी को बनाया होगा तेरे लिए।
जैसे जिगर को बनाया धड़कने के लिए॥

5. इक प्यार भरी नजर से कोई देख ले मुझे।
मैं सदा के लिये यार बना लूँगा उसे॥

6. ताउम्र कुंवारी रहना चाहती हो तो बात जुदा है साहिबा।
वरना नजर उठाकर देखो प्यार होगा आहिस्ता आहिस्ता॥

7. एक नजर क्या मिली कसूर हो गया।
मेरा दिल ही मुझसे दूर हो गया॥

8. मुझसे खफा नजर आ रहा सभा।
गुजारिस है कोई मुझे बताये मेरी खता॥

9. गैर होते तो अपनों को सुनाते, अपनों ने ही गम दिये तो किसे सुनाएँ।
सिर पर चोट खाते तो सबको ही दिखाते, दिल ए जख्म को कैसे दिखाएँ॥

→2

10. जाती पंती के लिये लड़ रहे जनाब,
जिनका उन्हें पता ही नहीं है।
उनके सिर कलम किये जा जनाब,
जिनकी कहीं कोई खता ही नहीं है।

11. हवा पत्थर से प्रेम करने वाले बंदे,
इंसान से क्यों नफरत करने लगे ?
राम रहीम सब कहीं रहते तो फिर,
मंजिर मस्जिद के लिये क्यों लड़ने लगे ?

12. जब जुल्म हुआ तब मैं, तन्हा था गवाह कहाँ से लाऊँ ?
मुझे पूरी दुनिया गुनहगार लगे, तो पनाह कहाँ पे पाऊँ ?

13. तुम मुझे मेरा कसूर बता दो, फिर खुद मुझे शूली पर चढ़ा दो।
बेकसूर को कसूरवार तुम समझते, गुनहगारों को मंच पर माला पहनाते ॥

14. बहुमत शरीफ को गुनहगार बना दे,
तीन गवाह एक रपट लिखा दे।
न्यायालय मजबूर हो जाता गवाही से,
उल्टा फरियादी को सजा सुना दे।

15. थोड़ा और धीरज धरो नर नारियों,
प्रभु जल्द तुम्हारे दुख दर्द हरेगा।
चुपचाप वह सब देख रहा है,
यहाँ नहीं तो ऊपर न्याय करेगा।

16. हजार जालिम मुझे फंसाने वाले, लाख कसाई रुलाने वाले।
मेरा एक खुदा ही खूब है, इन सबसे बचाने वाले ॥

अम्बेडकर
28. 3. 2019

17. लोग भूखे मरते थे तो आँहें भरते थे।
अब पेट भर खाने लगे तो गरीबी लगे॥

18. आपकी शख्सियत देख चकरा गया मैं,
होश है या बौरा गया मैं।
आप सबको प्रभावित करते हैं जनाब,
आपके प्रभाव से घबड़ा गया मैं॥

19. मैं कभी फिकर नहीं करता इस जालिम जमाने की।
मेरे खुदा फिकर करते हैं जालिमों से बचाने की॥

# कुछ पर्यायवाची

अंतर = बीच में।
अंध = अंधा।
अला बला = फिजूल खर्च, व्यर्थ की बातें।
आये = है, होता है।
आत = आते, आता।
आपन = अपना, अपने।
आही = है।

उत्ताई = उतना।

एकऊ = एक, एक भी।
कोय = कोई, कोऊ।
कोनो = कोई।
कहाये = है, कहा जाये।
काहे = क्यों, किसलिए।
कदाचित = कभी, शायद, यदि।
कहत = कहते, कहता।
करियो = करना।
कोसत = कोसते हैं।

खाक = धूल, राख।
खलि = खलनायक,

गुलजार = प्रफुल्ल, चहल पहल वाला।
गटके = पीकर, पीने के बाद, खाने के बाद।
गद्दारे = गद्दार।
जन = लोग, प्रजा।
जम्बो = बड़ा।
जाके = जिसके।
जमात = गिरोह, समुदाय।
जिम = जैसे, जिस प्रकार।
जेई = यही।
जेही = जिसको।
जिन = जैन, उन।

डगर = तंग रास्ता, रास्ता।
ढूढ़न = ढूढ़ने।
तबई = तब।
तस = तैसे, उसी प्रकार।
दासी = सेविका, पत्नि।
दई = दिया, देना, भगवान।
दये = देना, दिया।
दुस्तर = कठिन।
दूसर = दूसरे को, दूसरे का।

नक = पार करना।
नजीर = उदाहरण।
नाये = नहीं, नहीं है।
नात = नाती, रिस्तेदार।
नादानी = मूर्खता।

प्राणिन = प्राणियों में।
पियते = पीते।
पूजन = पूजा।
पीछो = पीछे, बाद वाला।
पे = पर, ऊपर, के ऊपर।

बंदा = बंदे, सेवक, लोग, दास।

भूती = भूतनी, प्रेतनी।
रय = वेग, प्रवाह।
रहत = रहते, रहते हैं।
रभष = प्रबल।
लोगन = लोग।
लोढ़ी = लुढ़िया, पत्थर का बेलनाकार टुकड़ा।

विडम्बना = छलना।
शूद्र = नीच, सेवक, अनैतिक काम करनेवाला।

समर = युद्ध, लड़ाई।
सम = समान, जैसे, की तरह।
सबै = सबको, सबका, सबकी, सभी।
सलील = लीलारत।

हराम = विधि विरुद्ध, अनुचित।
हैरि = देखो, देखना।
होत = होता है, होते हैं।
होई = है, होता है।
हरामी = नीच।
हिकमत = सेवा।

# कवि का परिचय

डॉ. उमाशंकर पटैल ने स्वर्गीय श्रीमति चंद्रानी पटैल और स्व. श्री गंगाराम पटैल के घर, मुकाम पोस्ट सिहुँड़ी (बाकल) तहसील सिहोरा जिला जबलपुर अब तहसील बहोरीबंद जिला कटनी मध्य प्रदेश, भारत भूमि में इस्वी सन् 1965 में जन्म लिया। दादा स्व. श्री कासीराम पटैल मध्यम वर्ग किसान तथा छोटे साहूकार थे। परदादा स्व. श्री रेखाराम उर्फ रिखीराम पटैल सूखा गाँव के मालगुजार थे। प्राथमिक शिक्षा गाँव से, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बाकल से, स्नातक जीव विज्ञान शास. श्यामसुंदर अग्रवाल महाविद्यालय सिहोरा से, स्नातकोत्तर वनस्पति शास्त्र तथा विद्यावाचस्पति जीव विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय जबलपुर से किया। यू.जी.सी.- सी.एस.आई.-आर. नई दिल्ली की राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) पास किया। कवकों की दस नई जातियों की खोज तथा वाम कवकों के लिए एक वर्गीकरण प्रस्तुत किया।

0.5=1 के वैज्ञानिक आधार की खोज की (पटैल प्लान फार टाई ब्रेकिंग आफ प्वांइट फाइव बाई द डेसिमल क्लॉक)। ग्लोबल वार्मिंग का सही कारण व निवारण खोजा ("पटैल एजम्पशन एबाउट इंक्रीज इन ग्लोबल वार्मिंग," व "पटैल्स थ्योरी आफ थर्टी थ्री")। शोध पत्रों के सही मूल्यांकन के लिए सूत्र बनाये ("पटैल हायपोथेसिस आफ रिसर्च इवेल्युएशन" व "पटैल हायपोथेसिस ऑफ रिसर्च इवेल्युएशन अमेंडेड")।

उमाशंकर
25.9.2022

जबलपुर
दिनाँक: 25-9-2022

# क्षमा याचना

इस काव्य रचना का ध्येय किसी जीव, व्यक्ति या समाज की भावना / भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है। यदि को किसी शब्द से दुख पहुँचता है तो उस शब्द को आगामी संस्करण में निकाल दिया जायेगा। उमा सिंह
25.9.2022

# आभार

सर्वशक्तिमान परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मानव मानि में जन्म और सोचने की क्षमता दी। अपने माता-पिता और पूर्वजों का अहसान मानता हूँ जिन्होंने शिक्षा की सुविधा दी। जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में समाज, शिक्षा, संस्कार, नौकरी में मदद की उनका आभारी हूँ जिस कारण यह काव्य रचना संभव हो सकी।

उमा सिंह
25.9.22